आर.एन.आई. पंजीयन क्रमांक 45215/86

ज्योतिष ,स्वास्थ्य एवं सुसंस्कार की शिक्षाप्रद पत्रिका

जीवन वैभव

स्थापना वर्ष : 35 वर्ष अंक : 1 जनवरी से मार्च 2021

नववर्ष 2021 अंक

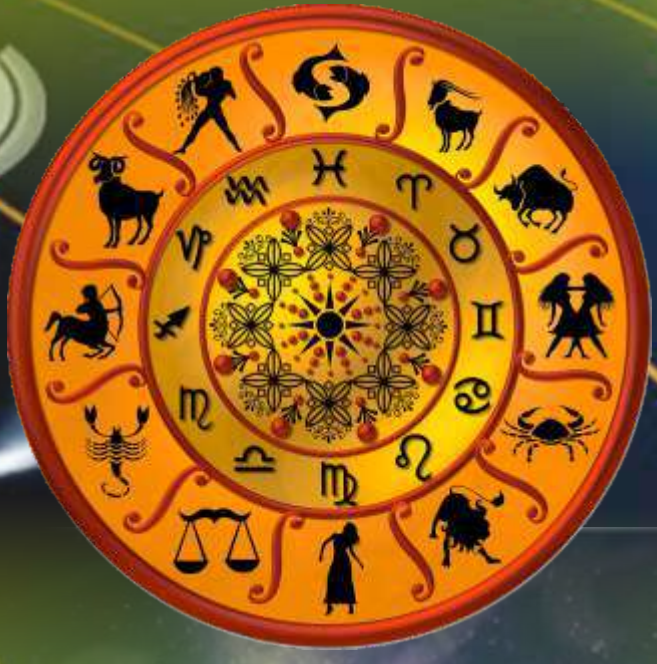

- साहित्यिक लेखक व कवि बनने के ग्रह योग एवं कुछ कुंडली विवेचन
- सुखी परिवार के ग्रह योग
- जन्म कुण्डली से व्यवसाय चयन योग
- वर्षा संबंधित जानकारी
- फलित ज्योतिष में वर्षफल का महत्व
- फलित ज्योतिष में मोक्ष त्रिकोण
- अंगारक–दोष के घातक परिणाम और सही उपाय
- फलित ज्योतिष के अंतर्गत अपने आप को कैसे जाने
- जन्म कुण्डली में अष्टम भाव की सकारात्मक भूमिका
- त्रैमासिक राशि भविष्य फल
- त्रैमासिक व्रत पर्व एवं शुभ मुहूर्त

मूल्य – 30 रू.

जीवन वैभव

शिक्षाप्रद साहित्य की त्रैमासिक पत्रिका

स्थापना वर्ष : 35, अंक-1, जनवरी-मार्च 2021

संपादक
डॉ. हेमचन्द्र पाण्डेय

सहायक संपादक
अरविन्द पाण्डेय
आशुतोष पाण्डेय

वैधानिक सलाहकार
श्री अजय दुबे, श्री बी.एल. शुक्ला

सलाहकार मण्डल
श्रीमती पुष्पा चौहान, श्री मनोज अग्निहोत्री, सुनील भण्डारी (मुम्बई), सौरभ पुरोहित, विनोद जोशी, डॉ. अरविंद राय

प्रकाशन कार्यालय : 15-ए, प्रेस कॉम्पलेक्स
महाराणा प्रताप नगर, भोपाल मोबा. : 9425008662

(सम्पादक मण्डल के सभी सदस्य मानसेवी हैं।)

प्रकाशित लेखों से संपादक की सहमति आवश्यक नहीं है।
सभी प्रकार के विवाद का न्याय-क्षेत्र भोपाल रहेगा।

मूल्य

एक प्रति	–	30 रुपये
वार्षिक	–	100 रुपये
त्रैवार्षिक	–	300 रुपये
आजीवन	–	1800 रुपये

अनुक्रमणिका

क्र.	विवरण	पृष्ठ क्र.
1.	वंदना	2
2.	अमृत घट	4
3.	वैभव दर्शन	5
4.	फलित ज्योतिष में ज्योतिषी का दायित्व	7
5.	साहित्यिक लेखक व कवि बनने के ग्रह योग एवं कुछ कुंडली विवेचन	9
6.	सुखी परिवार के ग्रह योग	12
7.	जन्म कुण्डली से व्यवसाय चयन योग	13
8.	जीवन का मूल आधार सतोगुण	15
9.	लग्न एवं लग्नेश का अन्य भावों से संबंध	17
10.	वर्षा संबंधित जानकारी	20
11.	फलित ज्योतिष में वर्षफल का महत्व	22
12.	फलित ज्योतिष में मोक्ष त्रिकोण	25
13.	'अंगारक-दोष' के घातक परिणाम और सही उपाय.....	26
14.	फलित ज्योतिष के अंतर्गत अपने आप को कैसे जाने	27
15.	जन्म कुण्डली में अष्टम भाव की सकारात्मक भूमिका	29
16.	जन्म कुण्डली और दांतों की बनावट	31
17.	त्रैमासिक राशि भविष्य फल	35
18.	त्रैमासिक व्रत पर्व एवं शुभ मुहूर्त	39
19.	आपके पत्र	42

सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा।

स्वामित्व, प्रकाशक, मुद्रक, श्रीमती प्रेमलता पाण्डेय, 15-ए, इंदिरा प्रेस कॉम्प्लेक्स, भोपाल से प्रकाशित एवं मेश प्रिंट्स, 105-ए, सेक्टर-एफ, गोविन्दपुरा, भोपाल-462011 (म.प्र.) से मुद्रित, संपादक: डॉ. हेमचन्द्र पाण्डेय।

संस्थापक-संपादक: स्वर्गीय श्री रामचन्द्र जी पाण्डेय, स्वर्गीय श्री व्यंकटराव जी यादव

वन्दना

सूर्याष्टकम्

आदि देव नमस्तुभ्यं प्रसीद मम भास्करः।
दिवाकर नमस्तुभ्यं प्रभाकर नमोऽस्तुते ।1।

****

सप्ताश्वरथमारुढ़ं प्रचण्डं कश्यपात्मजम्।
श्वेत पद्मधरं तं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम् ।2।

****

लोहितं रथमारुढं सर्वलोकपितामहम्।
महापापहरं देवं तं सूर्य प्रणमाम्यहम् ।3।

****

त्रैगुण्यं च महाशूरं ब्रह्मा विष्णु महेश्वरं।
महापापं हरं देवं तं सूर्य प्रणमाम्यहम् ।4।

****

वृहितं तेजःपुञ्जंच वायुराकाश मेव च।
प्रंभुसर्वलोकानां तं सूर्य प्रणमाम्यहम् ।5।

****

बन्धूक पुष्प संकाशं हार कुंडल भूषितम्।
एक चक्रधरं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम् ।6।

****

तं सूर्य जगत् कर्तारं महातेजः प्रदीपनम्।
महापाप हरं देवं तं सूर्य प्रणमाम्यहम् ।7।

****

तं सूर्य जगतां नाथं ज्ञान विज्ञान मोक्षदम्।
महापापं हरं देवं तं सूर्यं प्रणमाम्यहम् ।8।

भावार्थ : हे आदिदेव भास्कर! आपको प्रणाम है। आप मुझ पर प्रसन्न हों, हे दिवाकर! आपको नमस्कार है। हे प्रभाकर! आपको प्रणाम है।।1।। सात घोड़ोंवाले रथ पर आरूढ़, हाथ में श्वेत कमल धारण किये हुए प्रचण्ड तेजस्वी कश्यपकुमार सूर्य को मैं प्रणाम करता हूं।।2।। लोहितवर्ण रथारूढ़ सर्बलोकपितामह महापापहारी सूर्यदेव को मैं प्रणाम करता हूं।।3।। जो चिगुणमय ब्रह्मा, विष्णु और शिवरूप हैं, उन महापापहारी महान वीर सूर्यदेव को मैं नमस्कार करता हूँ।।4।। जो बढ़े हुए तेज के पुंज हैं और वायु तथा आकाशस्वरूप हैं, उन समस्त लोकों के अधिपति सूर्य को मैं प्रणाम करता हूँ ।। 5।। जो बन्धूक (दुपहरिया) के पुष्प समान रक्तवर्ण हैं। हार तथा कुण्डल से विभूषित हैं, उन एक चक्रधारी सूर्यदेव को मैं प्रणाम करता हूँ।।6।। महान तेज के प्रकाशक, जगत के कर्ता, महापापहारी उन सूर्य भगवान को मैं नमस्कार करता हूं।।7।। उन सूर्यदेवको, जो जगत के नायक है, ज्ञान, विज्ञान तथा मोक्ष को भी देते हैं, साथ ही जो बड़े-बड़े पापों को भी हर लेते हैं, मैं प्रणाम करता हूँ।।8।।

सम्पादक की कलम से...

सम्मानीय पाठक बंधु

ईस्वी नव वर्ष 2021 की सभी पाठक बंधुओं को शुभकामनाएं।

यह बड़ी प्रसन्नता की बात है कि जीवन वैभव पत्रिका ने प्रकाशन होते हुए 34 वर्ष पूर्ण कर के 35 वें वर्ष में प्रवेश कर लिया है। इस अवधि में जीवन वैभव परिवार के पाठक बन्धुओं ने इसको हृदय से सराहा है और इसके हर अंक की प्रतिक्षा रहती है। यह इसलिए भी कि इसमें देश के ख्याति नाम विद्वानों के ज्ञानवर्द्धक चयनित लेखों का ही सम्पादन किया जाता है। परिवार और समाज को नैतिक और शिक्षात्मक लेख जिन्हे पढ़कर आज की युवापीढ़ी सुसंस्कारित होकर अपने कर्तव्यपथ पर धनात्मक सोच के साथ प्रगति के आयामों को छू सके। यही प्रयास इस प्रकाशन द्वारा आरम्भ से ही रखा गया है ज्योतिष के आलेख जोकि जीवन में शिक्षा और रोजगार की ओर प्रवृत्त कर सके उन्ही आलेखों को प्रकाशन के लिए स्थान दिया जाता रहा है। व्यर्थ के आडम्बर और अंधविश्वास से दूर रहकर आध्यात्म और सकारात्मक उपायों को करते रहकर ग्रहों नक्षत्रों के अरिष्ट फल निवारण के उपाय भी प्रत्येक अंक में दिए जा रहे है।

अच्छा स्वास्थ्य रखना भी जीवन का एक महत्वपूर्ण दायित्व है इस कारण समय-समय पर शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ्य रखने के लिए उत्तम आलेख भी प्रदाय किए जाते रहे हैं। जिससे की जीवन में सुख और जीवन वैभव की सार्थकता सिद्ध हो सके।

अच्छे आलेखों से पाठकों को विश्वसनीयता भी बड़ी है। नियमित रूप से आजीवन और तीन वर्ष तथा पांच वर्ष की सदस्यता वाले पाठकों ने भी नियमित रूप से भेजी जाने की अधिक मांग की जारही है। यदि आप भी पत्रिका के नियमित सदस्य नही है तो शीघ्रता से जीवन वैभव परिवार से जुड़ने का निर्णय लीजिए। आप भी अपने जीवन में निश्चित सकारात्मक दृष्टिकोण प्राप्त करेगें ही। जीवन वैभव के संपादक मंडल ने अब निर्णय लिया है कि इस वर्ष केवल सदस्यता ग्रहण करने वाले पाठकों को ही प्रतियां प्रेषित की जाए।

जीवन वैभव प्रबुद्ध लेखकों और सभी प्रकार के नियमित सदस्यता वाले पाठक गणों को नव वर्ष की शुभकामनाएं प्रेषित करता है।

डॉ. हेमचन्द्र पाण्डेय
संपादक

अमृत घट

1 अगर हम कल का काम आज ही ना कर डालें तो कम से कम आज का काम तो अवश्य ही निपटा लेवे।

- संत विनोबा भावे

2 जिस तरह आगके साथ धुंआ रहता है उसी तरह हर अच्छे काम के साथ उसका एक बुरा पहलू भी होता है हमें ऐसे कामों में लगना चाहिए जिनका बुरा पहलू छोटे से छोटा हो और जिनकी अच्छाई की कोई सीमा ना हो

- स्वामी विवेकानंद

3 ज्ञान तीन प्रकार से मिल सकता है मनन से, जो सबसे श्रेष्ठ होता है, अनुसरण से, जो सबसे सरल होता है, और अनुभव से जो सबसे कड़वा होता है।

- संत ज्ञानेश्वर

4 गुण कोई किसी को नहीं सिखा सकता दूसरे के गुण लेने या सीखने की जब भूख मन में जागती है तो गुण अपने आप सीख लिए जाते हैं।

- महर्षि अरविंद

5 फूल खिलने दो मधुमक्खियां अपने आप उसके पास आ जाएगी चरित्रवान बनो जगत अपने आप मुग्ध हो जाएगा।

- स्वामी रामकृष्णपरमहंस

6 बुद्धिमान मनुष्य थोड़े से लाभ के पीछे बहुत की हानि नहीं करता। बुद्धिमानी इसी में है कि मनुष्य थोड़ा व्यय करके बहुत की रक्षा करें।

- चाणक्य

7 शिष्टाचार शारीरिक सुंदरता की कमी को पूर्ण कर देता है ।वही व्यक्ति सर्वाधिक सुंदर है, जो अपने शिष्टाचार से दूसरों के हृदय पर विजय प्राप्त कर सकता है। बिना शिष्टाचार के सौंदर्य का कोई मूल्य नहीं।

- स्वेट मार्डन

8 दो बातें मानसिक दुर्बलता प्रकट करती है एक तो बोलने के अवसर पर चुप रहना दूसरे चुप रहने के अवसर पर बोलना।

- शेख सादी

9 तुम्हें देखते ही जिसके मुख पर मुस्कान ना दौड़ जाए आंखों में स्नेह न खेलने लग जाए ,,उसके यहां कभी ना जाओ चाहे उसके वहां कंचन की वृष्टि क्यों ना होती हो ।

- संत गोस्वामी तुलसीदास

वैभव दर्शन

अंहकार जीवन का बड़ा अवगुण

स्व. श्री रामचन्द्र जी पाण्डेय
संस्थापक संपादक

कभी भी गर्व नहीं करना चाहिए। किसी भी व्यक्ति को देखकर उसकी परिस्थिति से हंसना नहीं चाहिए,अन्यथा अपना किया गया गर्व न जाने किस दिन कष्ट कारक हो सकता है ये शब्द हमेशा जीवन वैभव के संस्थापक सम्पादक के उद्‌बोधन से निकलते थे वे निम्नानुसार हैं- ***सम्पादक***

जीवन में सदैव अभिमान रहित रहना चाहिए-क्योंकि ऐसा कहा गया है कि समस्त महान गलतियों की तह में अभिमान ही मुख्य होता है।

महात्मा विदुर जी ने अहंकार के बारे में बहुत कुछ कहा है। जरा- रूप को, आशा- धैर्य को, मृत्यु- प्राण को, काम, लज्जा को, क्रोध-लक्ष्मी का हरण करता है किंतु अहंकार इन उपरोक्त सभी का हरण कर लेता है।

कहने का आशय है कि अहंकार होने पर व्यक्ति सभी तरफ से पतन के गर्त में जाने लगता है।

अहंकार नहीं होने पर व्यक्ति अपने अन्य गुणों के कारण पूजनीय होने लगता है जिस प्रकार की कोयल आम के बगीचे में ऐसे आम के वृक्षों पर बैठकर षडरस से परिपूर्ण आम का दिव्य रसग्रहण करती है फिर भी अभिमान नहीं करती उसका मिठास भरा स्वर सभी को आकर्षित करते हुए मन को मोहित कर लेता है जबकि एक कीचड़ भरे पानी के गड्ढे में बैठा हुआ मेंढक उस गंदे पानी को पी कर भी टर्राने लगता है। कहने का आशय है कि बड़प्पन वाला व्यक्ति कितना ही उचाई पर चला जाता है फिर भी अपना विनम्र स्वभाव नहीं बदलता अर्थात अहंकारी नहीं होता इसके विपरीत थोथे स्वभाव वाला व्यक्ति कीचड़ में मेंढक के समान थोड़ी सी अच्छी परिस्थिति आने पर ही गुर्राने लगता है एवं घमंड में फूलने लगता है।

ऐसी छोटी-छोटी बातों से घमंड में फूलने वालों के लिए संत कबीर ने बड़े ही शिक्षाप्रद ढंग से निम्नानुसार बात कही है-

कबीरा गरब न कीजिए, कबहु ना हंसीए कोय।
अबहूं नाव समुद्र में, का जाने का होय।।

कहने का आशय है कि कभी भी गर्व नहीं करना चाहिए। किसी भी व्यक्ति को देखकर उसकी परिस्थिति से हंसना नहीं चाहिए,अन्यथा अपना किया गया गर्व न जाने किस दिन कष्ट कारक हो सकता है क्योंकि हम इसी संसार सागर में ही यात्रा कर रहे हैं। इस संसार सागर में ही हमारी नाव चल रही है।इसलिए क्या ठिकाना ना समुद्र में होने से कब क्या परिस्थिति बन जाए कह नहीं सकते। इसलिए कभी भी किसी भी व्यक्ति को देखकर हंसना, मजाक उड़ाना, गर्व में गर्वित होकर किसी को अहमियत नहीं देना बेकार है। हो सकता है किसी दिन आप भी उसी परिस्थिति के शिकार हो जाए, तब कैसा लगेगा, स्वयं स्पष्ट है। इसीलिए तो कहावत भी है कि **'घमंडी का सिर नीचा'**

घमंडी व्यक्ति को कहीं ना कहीं सबक ईश्वर देता ही है। इसीलिए यह अवगुण हमें अपने पास फटकने ही नहीं देना चाहिए ताकि हम कभी भी उपहास के पात्र नहीं बन पाए।

अरविंद पाण्डेय

अष्ट सिद्धि और नवनिधि

अष्ट सिद्धि से अर्थ है आठ प्रकार की सिद्धियां यह निम्नानुसार हैं अणिमा महिमा ,गरिमा, लधिमा, प्राप्ति सिद्धि, प्राकाम्य सिद्धि में इशिता और वशिता सिद्धि।

1. **अणिमा-** अपने आप को अणु के रुप तक सूक्ष्म करने वाली सिद्धि को ही अणिमा सिद्धि कहते हैं।

2. **महिमा-** इस प्रकार की सिद्धि में मनुष्य को अपने आप असीमित विशाल स्वरूप बनाने की क्षमता प्राप्त हो जाती है

3. **गरिमा-** व्यक्ति को आकार तो सीमित रहता है परंतु शरीर का भार इतना बढ़ जाता है जिसे कोई हिला नहीं सकता इस सिद्धि को गरिमा सिद्धि कहते हैं।

4. **लघिमा सिद्धि** इस सिद्धि में व्यक्ति इतना हल्का हो जाता है कि हवा की तेज गति से उड़ सकता है भार नहीं के बराबर होगा ताकि उड़ने में उसे सहूलियत हो सके।

5. **प्राप्ति सिद्धि-** प्राप्ति सिद्धि प्राप्त करने वाला व्यक्ति कुछ भी प्राप्त कर सकता है संसार की दुर्लभ वस्तु भी उसे प्राप्त हो जाती है कहने का आशय यह है कि नामुमकिन को भी वह व्यक्ति मुमकिन बना सकता है।

6. **प्राकाम्य सिद्धि-** प्राकाम्य की सिद्धि प्राप्त करने वाला व्यक्ति सामने वाले की मन की बात को समझ सकता है किसी की भी मन में क्या इच्छा हो रही है उसे समझ सकता है और भांप सकता है

7. **ईशिता सिद्धि-** अष्ट सिद्धियों में एक ऐसी सिद्धि है जो आधिपत्य सिद्धि कहलाती है। ऐसे व्यक्ति भगवान की पूरी कृपा प्राप्त होते हैं तथा उसी अनुरूप पूजनीय हो जाते हैं।

8. **वशिता सिद्धि-** आठवीं अष्ट सिद्धि में वशिता नाम सिद्धि जिसमें की किसी व्यक्ति अथवा वस्तु को आसानी से अपने वश में करने की शक्ति प्राप्त हो जाती है चाहे मनुष्य हो पक्षी हो अथवा जानवर हो इस पर वशिता सिद्धि से व्यक्ति अपने अनुरूप करने की शक्ति रखता है

नव निधि

निधि का तात्पर्य है लक्ष्मी धन यह नो प्रकार का बताया गया है। जो कि निम्नानुसार है पद्मनिधि,महापद्मनिधि ,नील निधि ,मुकुंद निधि, नंदनिधि,मकर निधि, कश्यप निधि, शंख निधि इस प्रकार यह नो निधिया है। ये निधियां प्रथक प्रथक अपना प्रभाव रखती है।

1 **पद्म निधि-** सात्विक गुणों से युक्त व्यक्ति सात्विक रीति से धन कमाता है वह धन पूरी पीढ़ी को तार देती है यह धन पीढ़ी दर पीढ़ी चलता रहता है इसका अस्तित्व परिवार में सदैव बना रहता है।

2 **महापद्म निधि** - सात्विक रीति से अर्जित की गई धनराशि महापद्म निधि कहलाती है यह सात पीढ़ियों तक रहती है ऐसा व्यक्ति घर का दान भी करता है अर्थात दानी कहलाता है।

3 **नीलनिधि-** सतोगुण और रजोगुण मिश्रित कर्मों से संचित की गई निधि को नील निधि कहते हैं ऐसी निधि व्यापार द्वारा प्राप्त होती है यह निधि सतोगुण और रजोगुण प्रधान रहती है जनहित के काम करने पर यह निधि तीन पीढ़ी तक परिवार में निवास करती है

4 **मुकुन्द निधि-** यह मुकुंद निधि रजोगुण प्रधान राजकीय स्वभाव वाली निधि होती है इस निधि वाला व्यक्ति का मन सदैव निधि के भोग आदि में लगा रहता है यह निधि एक पीढ़ी बाद स्वयमेव नष्ट हो जाती है।

5 **नन्द निधि-** नंदनीधि लंबी आयु और निरंतर प्रगति दायक होती है यह परिश्रम से जन्य और इमानदारी से अर्जित की जाती है कुटुंब की नील के रूप में होती है यह निधि व्यक्ति को लंबी उम्र और तरक्की देती है।

6 **मकर निधि-** यह निधि तापसी कर्मों से प्राप्त निधि होती है इस निधि वाला व्यक्ति संपन्न होता है अपने अस्त्र-शस्त्र की संग्रह करने की प्रवृत्ति वाला होता है राज्य और शासन में दखल करने वाला होता है शत्रुओं पर भारी पड़ता है लेकिन इसकी मृत्यु भी इसी कारण होती है।

7 **कच्छप निधि-** कच्छप निधि उसे कहते हैं जो कि व्यक्ति अपनी अर्जित आय को छुपा कर रखता है तथा उसका उपभोग ना तो स्वयं करता है ना किसी को करने देता है कहने का अर्थ है कि वह सांप की तरह धन की रक्षा करता रहता है ऐसी निधि कच्छप निधि कहलाती है।

8 **शंख निधि-** शंख निधि वह कहलाती है कि जिसे व्यक्ति अपने स्वयं की ही चिंता और उपभोग के लिए इच्छा रख कर के खर्च करता है। कमाता बहुत है लेकिन परिवार वाले गरीबी में जीते हैं धन का उपयोग स्वयं के सुख भोग के लिए भी नही करता है दरिद्रता में जीवन गुजारता है ऐसी निधि शंख निधि के लाती है।

9 **खर्च निधि-** यह निधि आठ उपरोक्त निधियों के मिश्रण की निधि कहलाती है इसका मिश्रित स्वभाव ही होता है उसके कार्यों और स्वभाव के बारे में कोई जानकारी नहीं हो सकती जीवन व व्यवहार ऐसे व्यक्ति का उतार-चढ़ाव वाला होता है खर्च निधि वाला व्यक्ति किसी भी हद तक अपने स्वार्थ के लिए जा सकता है ऐसे व्यक्ति प्रायः विकलांग और घमंडी होते हैं।

फलित ज्योतिष में ज्योतिषी का दायित्व

संकलन : डॉ. हेमचन्द्र पाण्डेय

> *यह स्पष्ट है ज्योतिष की हम सेवा नहीं कर रहे हैं बल्कि ज्योतिष हमारा ज्ञानार्जन कर रहा है। ज्योतिष प्राचीन काल से है और सदा रहेगा जब तक चांद सितारे और भूगोल खगोल विद्या रहेगी। ज्योतिष जीवन्त रहेगा...।*

हम सब फलित/गणित/सिद्धांन्त के ज्ञानके ज्योतिषी है। अधिकांशतः ज्योतिषी अपने शौक के खातिर हैं कुछ अपने यश के खातिर हैं और कुछ व्यवसाय के खातिर परंतु सभी का उद्देश्य ज्योतिष के ग्रहों का मानव जीवन तथा प्रकृति पर होने वाले संबंध का आकलन करना है यह स्पष्ट है ज्योतिष की हम सेवा नहीं कर रहे हैं बल्कि ज्योतिष हमारा ज्ञानार्जन कर रहा है। ज्योतिष प्राचीन काल से है और सदा रहेगा जब तक चांद सितारे और भूगोल खगोल विद्या रहेगी। ज्योतिष जीवन्त रहेगा...।

हमें क्या करना चाहिए

1 विषय के प्रति वफादार रहे

यदि हम फलित ज्योतिष करते हैं तो हमें फलित विवेचन करने में वफादार रहना चाहिए व्यक्तिकी आभा को देखकर फलित नहीं करना चाहिए।

2 ज्ञान की निरंतरता रखे

हमेशा अपने ज्ञान को परिपक्व रखना चाहिए ग्रहों नक्षत्रों के गोचर भ्रमण और उसके होने वाले प्रभाव का सदैव अध्ययन करते रहना चाहिए

3 सत्यवक्ता होना चाहिए

ज्योतिष फलित करने में हमेशा सत्य का पक्षधर होना चाहिए यदि कोई कन्या का पिता आता है और कहता है कि साहब लड़के से पत्रिका में मिल जाए ऐसी नकली पत्रिका बना दीजिये ऐसा कदापि नहीं करना चाहिए। ग्रह जो बता रहे हैं उसे स्पष्ट रूप से बोलना चाहिए।

4 विश्वासघात और अंध विश्वास नही करे

त्रुटिपूर्ण फलित बताकर पृछ्क से उपाय के रूप में धन ऐंठने का कार्य नहीं करना चाहिए। व्यर्थ के दोष बता कर मारक समय, किसी द्वारा कालेजादू करने का शक बताकर पूजा करके धन ऐंठने वालों नें इस विषय को बदनाम किया है ऐसी भ्रांतियों से अपने आपको दूर रखें और समाज को भी आगाह करें।

5 अपने आचरण शुद्ध और सदाचारी रखे

यदि हम चरित्रवान रहेंगे तो निश्चित रूप से समाज हम पर भरोसा करेगा और हमारी आचरण की शुद्धि को देखकर समाज के लोगों को भरोसा बढ़ेगा और यह भरोसा ज्योतिष के प्रति एक बड़ा योगदान होगा।

6 धन के लोलुप नही रहें

कोई भी व्यक्ति अगर हमारे पास अपनी समस्या लेकर आता है तो निश्चित रूप से परेशान व्यक्ति ही आता है उसे सहयोग और सही मार्गदर्शन देने का कार्य करना चाहिए जिससे कि ग्रहयोगों से परेशान व्यक्ति कोई एक मार्गदर्शक के रुप में ज्योतिषज्ञ सिद्ध हो सके जिस प्रकार की बीमार होने पर व्यक्ति चिकित्सक के पास जाता है उसी प्रकार मानसिक रूप से और

आर्थिक रूप से परेशान व्यक्ति ग्रहों के चिकित्सक अर्थात ज्योतिषी के पास इस विश्वास के साथ उपस्थित होगा कि उसे सही मार्गदर्शन प्राप्त होगा।

7 ईश्वर का भवत होना चाहिए

अपने कार्य को करने के लिए आत्म बल की वृद्धि हेतु सदैव ईश्वर भक्ति जरूरी है। इसके कारण व्यक्ति में ईमानदारी और चरित्रवान होने की आदत रहती है जिससे कि विषय के प्रति अपने आप वफादार होने लगता है।

8 स्वप्रशंसा से दूर रहे

फलित करता और गणित करता विद्वान को अपनी प्रशंसा से दूर रहना चाहिए आने वाले व्यक्ति के बारे में उसकी समस्या को दूर करने का प्रयत्न करना चाहिए ना कि उसे अपनी प्रशंसा करके आकर्षित नहीं करना चाहिए। पहले किसी और को बताई गई भविष्यवाणी जो सही निकली हो उसे आने वाले व्यक्ति को बता कर अपनी अनावश्यक प्रशंसा नही करना चाहिए यह कार्य दूसरो पर छोड़ना चाहिए जिनकी भविष्यवाणी सही गई हो वे स्वयं आपकी प्रशंसा करेंगें अतः अपना स्वयं का और आने वाले व्यक्ति का समय बर्बाद नहीं करना चाहिए।

9 गुण ग्राह्यता की आदत रहना चाहिए

ज्ञान पर हर व्यक्ति परिपक्व हो यह जरूरी नहीं है ज्योतिष का ज्ञान एक अथाह समुद्र है जिसमें से मोती ढूंढते रहने की आदत होना चाहिए गुण और ज्ञान कहीं से भी प्राप्त हो उसे सदा ग्रहण करने का प्रयास सदा करते रहना चाहिए। संत तुलसी ने कहा है कि

सीमिटी सीमिटी जल
भरे तलावा
जिमी सद्गुण सज्जन
पह आवा

कहने का आशय है कि थोड़ा थोड़ा ज्ञान यदि विद्वानों से प्राप्त होता रहेगा तो व्यक्ति स्वयं विद्वान हो जाता है जिस प्रकार की थोड़े-थोड़े जल से तालाब भर जाता है।

एक अच्छे और कुशल ज्योतिषी तथा ज्योतिष की सेवा करने के लिए उपरोक्त 9 बिंदु मेरे अनुभव से मैंने व्यक्त किए हैं यदि इसके अतिरिक्त और कोई ज्ञानामृत बिन्दु की आवश्यकता हो तो विद्वानों से सादर अनुरोध है सभी विद्वानों को सादर नमन..

आत्मा और मन दोनों पर ज्योतिष विचार

विचार व्यक्त करना बड़ा कठिन काम है। क्योंकि आत्मा का कारक सूर्य और मन का कारक चंद्र दोनों ही तो ज्योतिष शास्त्र के मूल आधार स्तंभ है।

सूर्य और चंद्र के बीच की 12 अंश की दूरी को तिथि के रूप में तय किया गया है आत्मा की आवाजऔर मन के विचार को नियंत्रित करने के लिए हमारी भारतीय प्राचीन परंपरा में सूर्य और चन्द्र के शुभ प्रभाव के लिए तिथि का निर्धारण कियाहै जिसका त्यौहार और पर्व निर्धारण किया गया है जिससे व्यक्ति के मन को धनात्मक विचार उत्पन्न करने का मूल

श्रोत माना गया है। आध्यात्म ,,मुहूर्त निर्णय, आयुर्वेद चिकित्सा में बड़ा महत्व निरूपित किया गया है।

चंद्र और सूर्य का नवम पंचम होने पर एकादशी तिथि कों जोकि बुद्धि बल को बढ़ाकर आत्म शक्ति को संतुलित करते हुए भगवान विष्णु के परम पद प्रदान करने वाली तिथि कहा गया है। इसीलिए इस तिथि को अन्न नही लेकर उपवास करनेसे आत्मबल और मनो बल को स्वस्थ्य और निर्विकार रखे जाने को महत्व हमारे ऋषि मुनियों नें दिया है सूर्य चन्द्र के सम सप्तक होने पर पूर्णिमा तिथि सत्यपूजन तथा चतुर्थ दशम होने पर अष्टमी तिथि शाक्ति की पूजन व्रत करना मन को आत्म बल देता है। आध्यात्मिक दृष्टि से बड़ा महत्वपूर्ण रखा गया है।

सूर्य एवं चंद्रमा जोकि आत्म तत्व और मन तत्व अर्थात बीज रूप और वसु रूप का समन्वय होना अमावस्या तिथि मानी गई है जोकि हमारे पितृ पुरुषों के लिए श्रद्धा स्वरूप श्राद्ध करने तक का विधान बताया गया है। क्योंकि सूर्य पिता का कारक और चंद्रमा माता का कारक है यह तो सर्वमान्य है दोनों का समन्वय भौतिक संसार में जीव की उपस्थिति दर्शाता है इसी कारण आत्म तत्व और मन तत्व को केंद्रित करने के लिए अमावस्या तिथि को प्राचीन काल से केवल श्राद्ध कर्म के लिए ही नियत करते हुए व्यापार और कृषि करने के लिए अवकाश रखा जाता रहा है ।जोकि आज के मशीनरीयुग में लुप्त प्राय होगया है।

आत्म तत्व और मन तत्व अर्थात सूर्य और चंद्र दोनों को योग साधना के लिए भी बड़ा महत्वपूर्ण माना गया है किसी वरिष्ठ कवि ने लिखा है कि

हरिघोड़ा ब्रह्माकड़ी
बासुकी पीठिपलान
चांद सूरज दोईपायड़ा
चढ़सी संत सुजान

कहने का आशय है कि आत्म तत्व और मन तत्व का बोध करने वाला व्यक्ति योगी पुरुष होता है और वह जीवन में सफलता और यश प्राप्त करता है लिखने के लिए बहुत विषय है परंतु मैं अपनी लेखनी को यही विराम देता हूं।

साहित्यिक लेखक व कवि बनने के ग्रह योग एवं कुछ कुंडली विवेचन

श्रीमती पुष्पा चौहान

डॉ पुष्पा सिंह चौहान इंटेलेक्चुअल एस्ट्रोलॉजिकल सोसाइटी ऑफ इंडिया की अध्यक्ष है। फलित ज्योतिष के क्षेत्र में पुस्तकों की लेखक है प्रस्तुत लेख में उनके द्वारा लेखन से संबंधित कार्य करने तथा कवि होने के कुछ मुख्य सैद्धांतिक बिंदु दिए हैं जो पाठकों के लाभार्थ प्रस्तुत है)-
सम्पादक

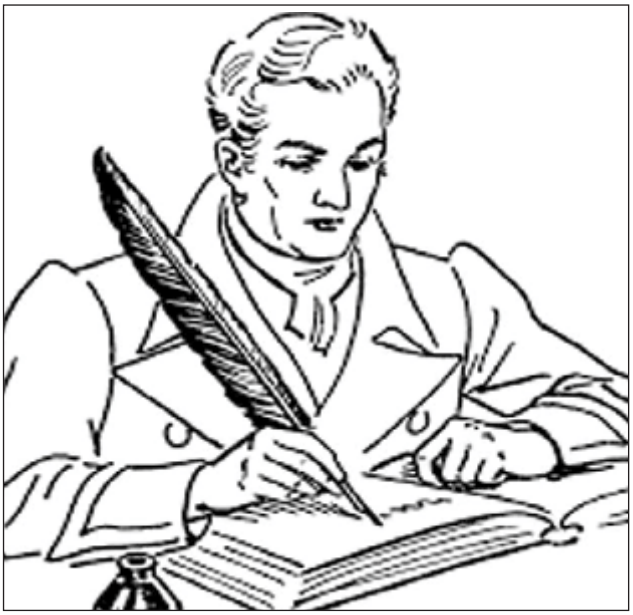

कल्पना और शब्द ज्ञान के बल पर बहुत से लोग कुछ न कुछ नया सृजनात्मक लेखन कर समाज में अपना एक विशिष्ट सम्माननीय स्थान बना लेते हैं। कथा साहित्य मन की इच्छा वह भावना को कल्पना के आधार पर बड़े सहज व प्रभावशील शब्दों के माध्यम से कर हम सबके सामने रख देते हैं, जिसको विज्ञान के तर्क पर स्थापित करने में वर्षों लग जाते हैं। ऐसे लेखन हमारा ज्ञान वर्धन कर मार्गदर्शन भी करते हैं। कौन सा जातक लेखक बन सकता है,इसे ज्योतिष आईने से देखा जाए तो पाया जाता है कि विशिष्ट तरह के ग्रह योगों के कारण व्यक्ति लेखन के क्षेत्र में अपना यश नाम कर धनार्जन कर लेता है। निम्नानुसार वे कारक ग्रह, ग्रह संबंध, ग्रहदृष्टिया, ज्योतिषीय योग आदि से बने योग दिए जा रहे हैं, जो लेखन के क्षेत्र में अग्रसर कर प्रसिद्धि दिलाते हैं-

1. वायु तत्व राशि का दशम भाव या दशमेश से संबंध हो, तो जातक लेखक, विचारक या दार्शनिक हो सकता है।
2. बुद्धि के कारक ग्रह बुध एवं गहन चिंतन मनन का कारक गुरु, यदि बली हो या दोनों बली होकर एक दूसरे से संबंध या युक्ति करते हो, तो भी जातक को विद्वान विचारक व लेखक बनाने की ओर अग्रसर करते हैं।
3. दशमेश या दशम भाव मिथुन राशि में गुरु से युक्त हो तो जातक नाट्य या नाट्य साहित्य लेखन में रुचि लेता है।
4. मिथुन राशि का शुक्र यदि दशम भाव या दशमेश के साथ हो, तो जातक साहित्यिक लेखक बनता है।दशम भाव में गुरु बुध की युति या दृष्टि संबंध बने तो जातक को ऐतिहासिक या आत्मकथा जैसे लेखन में निपुणता देता है।
5. यदि दशम भाव की मिथुन राशि में मंगल, बुध, गुरु की युति हो, तो जातक समाचार लेखन, फीचर फिल्म लेखक या संपादकीय लेखन में दक्षता हासिल करता है।
6. बुध का संबंध वाणी, बुद्धि, विद्या से होता है और सभी तरह के लेखन कार्य के लिए बुध काबली होना अनिवार्य होता है। गुरु ज्ञान, विवेक, व्याख्या, टीका या प्रवचन का प्रतिनिधित्व करता है।अतः इन दोनों ग्रह बुध व गुरु के आपसी संबंधों से जातक दर्शनशास्त्र जैसे विषयों में लेखन कार्य अपनाता है और यदि शुक्र का संबंध इन दोनों ग्रहों से हो जाए, तो जातक काव्य व कविता जैसे लेखन की ओर रुझान पैदा कर लेता है।
7. अभिनय, मनोरंजन, गीत- संगीत, नृत्य के कारक शुक्र माने जाते हैं, अतः यदि कुंडली में बुध और शुक्र बली होकर संबंध शुभ भाव जैसे लग्न, द्वितीय, चतुर्थ, पंचम, नवम, दशम आदि भावों में करें, तो जातक मनोरंजन साहित्य लेखन में रुचि लेकर धन कमाता है।
8. चंद्रमा को मनुष्य के मन का कारक माना गया है। अतः यदि दशम या दशमेश का चंद्रमा से द्वित्तीय संबंध हो, तो साहित्य लेखन या सीधे साहित्य कल्पनाशील कविताएं लिखने की प्रेरणा देता है।
9. तुला लग्न में यदि भाग्येश बुध लग्न में हो एवं कारक ग्रह शुक्र लाभेश के साथ द्वितीय भाव में हो और द्वितीय मंगल योगकारक शनि के साथ पंचम में युति कर लाभ भाव को देखें, तो जातक उच्च स्तर का काव्य प्रतिभाशाली होकर अति धनवान भी होता है। यदि इसी लग्न में पराक्रमेश व षष्ठेश गुरु दशम में उच्च राशिस्थ होकर चंद्रमा से युति कर पंचम दृष्टि

से वाणी भाव में बैठे शुक्र- सूर्य को देखें, तो जातक साहित्य लेखन से विद्या व ज्ञान प्राप्त करता है।

10. यदि सिंह लग्न की कुंडली हो और दशमेश शुक्र एकादश भाव में लग्नेश सूर्य के साथ हो तथा मंगल बुध की युति दशम में हो और गुरु की दशम पर दृष्टि हो, तू जातक विख्यात लेखक या विचारक होता है।

11. यदि कुंडली में वाणी व बुद्धि कारक बुध पर पंचमेश गुरु की दृष्टि हो, बुध और चंद्र में राशि परिवर्तन हो, बुध के साथ दशमेश शुक्र, लग्नेश सूर्य हो वह कुंडली का योगकारक ग्रह मंगल स्वगृही त्रिकोण में होकर बुध को दृष्टि दे,तो ऐसा जातक काव्य साहित्य का लेखक होकर दार्शनिक विचारक होता है।

12. यदि कुंडली में पंचमेश, दशमेश व चतुर्थेश यूति कर भाग्येश गूरू से युति या दृष्ट संबंध बनाएं, बुध द्वितीयेश सूर्य के साथ चंद्र की राशि कर्क में लग्न में हो, राहु की शुक्र- मंगल पर दृष्टि हो तथा धनु राशि का चंद्रमा हो तो जातक साहित्यिक रुचि वाला काव्य या गीत लेखन कार्य में यश व नाम कमाता है।

13. यदि कुंडली में बुध भाग्येश एवं हानि कारक होकर लाभेश सूर्य और गुरु के साथ पराक्रम में बैठकर भाग्य भाव को देखें, उच्च का योगकारक शनि पर द्वितीय मंगल की दृष्टि हो व दशमेश चंद्र का द्वितीयेश मंगल के साथ युति करके बैठे तथा लग्नेश शुक्र का वाणी भाव में राहु से दृष्ट होने पर भी जातक फिल्मी जगत में अच्छा गीतकार होकर नाम, धन आदि अर्जित करता है।

कुछ साहित्यकार एवं कवियों की कुंडलियों का विवेचन आगे पाठकों के लिए ज्ञान वर्धन हेतु दिया जा रहा है, जिनमें योग देखे जा सकते हैं

जन्म कुण्डली 14 अगस्त 1926 7:00:00

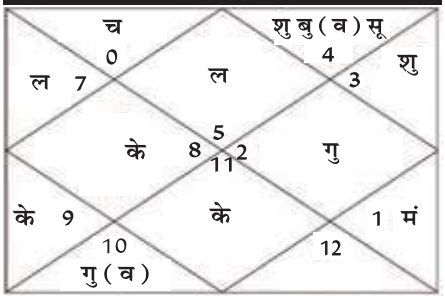

कुण्डली नं.1
नवांश जीवन साथी

जन्म कुण्डली 30 अगस्त 1919 18:49:23

कुण्डली नं.2
नवांश जीवन साथी

जन्म कुण्डली 18 जून 1949 11:00:00

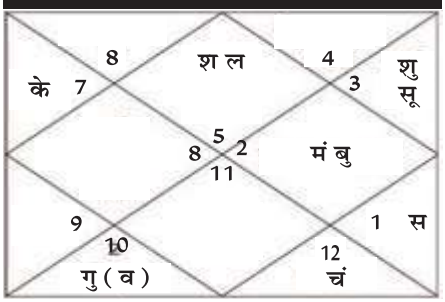

कुण्डली नं. 3
नवांश जीवन साथी

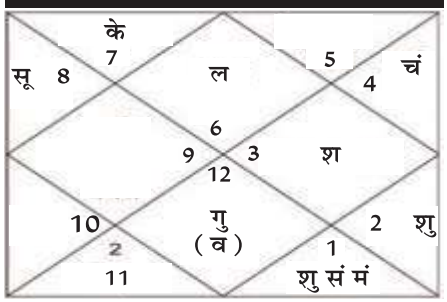

बुध बुधादित्य योग बनाकर शुक्र के साथ गुरु से दृष्ट हो रहा है। लग्नेश सूर्य भी गुरु से दृष्ट है और नवांश कुंडली में गुरु चंद्र युति कर बुध की राशि के नवांश में गजकेसरी योग बन रहा है। लेखन कारक बुध गुरु की राशि के नवांश का केन्द्रस्थ होकर अपनी ही राशि के लग्न नवांश को देख रहा है और प्रेरक राहु से स्वयं दृष्ट है। इसी कारण जातक दिल से कल्पनाशील होकर कविता का लेखन करता है।

उक्त कुं 2 एक उच्च प्रतिष्ठित साहित्यिक उपन्यासकार लेखिका की है। इसमें लेखन कारक बुद्ध ज्ञान कारक गुरु के साथ प्रेरक राहु से दृष्ट होकर बैठा है शुक्र भाग्येश होकर केतु की दृष्टि पर बुध की राशि में है। मन कारक चंद्रमा शुक्र की राशि में होकर कर्मेश मंगल से दृष्ट है। उधर लग्नेश शानि स्वयं लग्न को देख रहा है। इसी कारण से जातिका उच्चस्तर की कल्पनाशील लेखिका रही है।

उक्त कुं 3 एक जाने-माने उच्च स्तर के कवि लेखक की है। इसमें लेखन कारक बुध स्वयं वाणी भाव का स्वामी होकर कारक गुरु से दृष्ट है और यही बुध भाग्येश मंगल के साथ कर्म भाव में है। मन कारक चंद्रमा भी अच्छी स्थिति में है। नवांश में स्वनवांश का गुरु कर्क नवांश के चंद्रमा पर दृष्टि डालकर प्रभावित कर रहा है और

नवांश लग्न स्वामी बुध भाग्य नवांश में यश कारक सूर्य से दृष्टि संबंध कर रहा है। इन्हीं कारक गुरु, बुध, चंद्र की अच्छी स्थिति के कारणों से ही जातक लेखक व कवि है।

उक्त कुं 4 फिल्मी गीत लिखने वाले कवि हृदय लेखक की है। इस कुंडली में लेखन के कारक बुध व गुरु यश कारक सूर्य के साथ पराक्रम भाव में होकर भाग्य भाव को प्रभावित कर रहे हैं और मन कारक कर्मेश चंद्रमा जोश कारक मंगल के साथ प्रेरक राहु से दृष्ट है। उधर लग्नेश

जन्म कुण्डली 2 जनवरी 1925 2:24:04

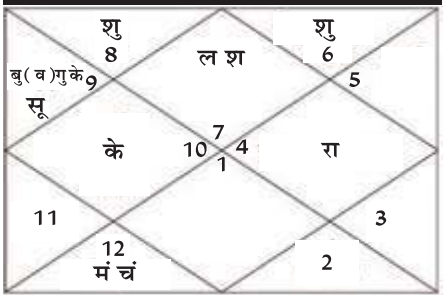

मनोरंजन कारक शुक्र धन भाव में बैठकर प्रेरक राहु से दृष्टि द्वारा प्रभावित है। इन्हीं के कारण जातक

कुण्डली नं. 4

नवांश जीवन साथी

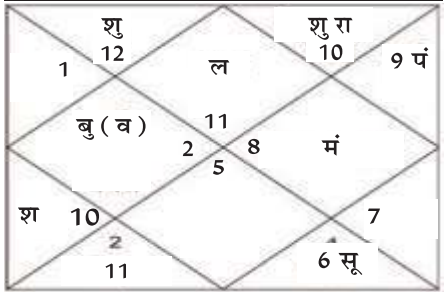

उच्च स्तर का गीतकार मनोरंजन क्षेत्र फिल्म में नाम व धन कमा रहा है।

यात्रा के आरंभ के समय शुभ शकुन

दीपक पण्डित

हर व्यक्ति को अपने दैनिक कार्य के लिए यात्रा करनी ही पड़ती है। कोई अपने व्यापार तो कोई धार्मिक मांगलिक वजह से तो कोई नौकरी की वजह से कहीं आता जाता है। सभी यात्राओं के लिए मुहूर्त निर्णय आवश्यक है इसके साथ ही शुभ-अशुभ, शकुन जुड़े हुए हैं। यात्रा संबंधी कुछ शकुन जिन्हें नियमानुसार समझकर अपने जीवन में लाभ उठा सकते हैं।

शकुन : यात्रा के समय यदि कोई धामन जाति का सर्प अपना फन ऊँचा किए या फिर आपके बाईं ओर जाता हुआ दिखाई दे तो उसे शुभ शकुन मानना चाहिए। आपके सारे काम पूरे हो जाएंगे।

यात्रा के समय यदि कोई सर्प अपना फन उठाए बाईं ओर से दाईं ओर जाता दिखाई दे तो उसे शुभ शकुन होता है। इसके प्रभाव से व्यक्ति को भोजन प्राप्त होता है।

लेकिन यात्रा के समय दो सर्पों को एक ही ओर जाते हुए अथवा आपस में लड़ते हुए देखना अपशकुन माना जाता है, उसके प्रभाव से व्यक्ति का काम बिगड़ता है।

मंगल फलदायक समय : किसी भी स्थान से प्रस्थान करते समय यदि कोई पानी से भरा घड़ा या बर्तन सामने दिखाई

दे तो शुभ शकुन माना जाता है। यात्रा सफल कराता है। वैसे प्रस्थान के समय पुरुष के दाईं ओर या स्त्री के बाईं ओर ध्वज-पताका, छत्र-कलश, या कलश, आभूषण, फल, मुकुट, शंख, अंकुश, शस्त्र या तांबूल दिखाई दे तो उसे शुभ शकुन समझना चाहिए।

मनुष्य का यात्रा समय सामने आने का शकुनः प्रस्थान करते समय यदि कोई प्रसन्न मुख व्यक्ति दिखाई दे जाए तो शुभ शकुन माना जाता है और यात्रा सफल हो जाती है तथा यात्रा आनंददायक होती है।

यदि कोई पुरुष अपने हाथ में पताका, पुष्प या गन्ना लिए सामने से दिखाई दे तो ह शुभ शकुन का संकेत माना जाता है। जिसके विचार से व्यक्ति का कार्य सिद्ध हो जाता है।

पक्षी संबंधी शकुन : यात्रा के समय कोई चिड़िया चहचहाती हुई प्रसन्न मुद्रा में बैठी दिखाई दे तो शुभ शकुन माना जाता है और उस व्यक्ति की यात्रा सफल हो जाती है।

यात्रा के समय कोई टिटहरी आपके दांई ओर से बोले तो शुभ शकुन समझा जाता है। व्यक्ति को लाभ होता है। लेकिन बाईं ओर नहीं।

यात्रा के समय यदि खंजन पक्षी दाईं ओर दिखाई दे तो शुभ शकुन मानें, जिससे व्यक्ति को अत्यंत सुख प्राप्त होता है।

यात्रा के समय यदि आपको सारस का जोड़ा दिखाई दे और वह शब्द कर रहा हो तो शुभ शकुन माना जाता है। इससे व्यक्ति को धन, पुत्र, सुख और शांति की प्राप्ति होती है।

यात्रा के समय यदि कोई सुहागिन स्त्री अपनी गोद में बच्चा लिए अचानक आपके सामने आ जाए तो शुभ शकुन माना जाता है। यात्रा में सफलता मिलती है।

यदि घर के बाहर निकलते समय खड्ज, गोचर या ऋषभ इन तीनोंमें से कोई शब्द सुनाई दे तो शुभ शकुन समझना चाहिए। काम पूरा होता है।

रस्सी से बँधा हुआ बैल आपके सामने आता हुआ यात्रा प्रस्थान के समय मिले तो शुभ होता है। यदि यह अपने सींग से मिट्टी खोदता हुआ दिखे तो भी शुभ शकुन माना गया है।

सुखी परिवार के ग्रह योग

आज के विषय में थोड़ा सा विचार मेरा यह भी उत्पन्न हुआ कि केवल ग्रहणी का ही दायित्व सुखी परिवार के लिए नहीं है उतना ही महत्व पुरुष का भी है कि वह परिवार में अपना अधिकारवाद की भावना न रखें तथा समत्व की भावना रखते हुए अपने जीवनमें सभी रिश्तों से संतुलन बना कर के चले। जन्म कुंडली में इसके लिए प्रथम भाव का जितना महत्व है उतना ही महत्व द्वितीय तृतीय चतुर्थ पंचम एवं नवम तथा दशम भाव का भी है ।

यदि हमें सु संस्कारित जीवन जीना है तो इन भावों में शुभ ग्रहों का होना अथवा दृष्टि होना अति आवश्यक है।

मातृदेवो भव, पितृ देवों भव
आचार्य देवो भव,और अतिथि देवों भव
की कामना

इन्ही भावों से होती है जिससे संस्कार मिलते है।

सप्तम भाव तो लग्न का परिपूरक भाव है जिसके बारे में यही माना जा सकता है कि लग्न को सपोर्ट करने वाला सप्तम भाव ही है जिसे हम सन्मुख चंद्रमा कुरूप जिस प्रकार माना जाता है उसी प्रकार सन्मुखे अर्थलाभाय कहने का आशय है कि हमेशा सप्तम भाव हर भाव की पूर्ति करता है जिस प्रकार द्वादश भाव व्यय कारक है तो षष्टम भाव बचत करने के लिए प्रेरित करता है ठीक उसी प्रकार लग्न भाव अर्थात हम स्वयं कोई त्रुटि करते हैं तो हमारा सप्तम भाव उसको सुधारने में सहयोग करता है इसीलिए कहा गया है कि यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमंते तत्र देवता कहने का आशय है कि जहां जिस परिवार में नारी की पूजा होती है वहां देवताओं की प्रसन्नता होती है।

यहां पर सप्तम पत्नी ,चतुर्थ माता तथा तृतीय भाई बहनों से संबंध रखता है ,,इनका सम्मान होना आवश्यक है इन भावों में यदि कोई क्रूर बैठा है तो उसकी शांति अथवा शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो उन सब ग्रहों को बलवान करना चाहिए जिससे कि इन भावों में शुभत्व प्राप्त हो सके नवम भाव हमारे संस्कार का है धार्मिक रीति रिवाज का है यदि इसका पालन किया जाएगा तो निश्चित रूप से हमारे कर्म ऐसे होंगे जो समाज के लिए मान्य होंगे यदि हमारे सत्कर्म रहे तो उसका द्वितीय भाव याने एकादश भाव जिससे कि मान सम्मान प्रतिष्ठा तथाकिए गए कार्य को अधिमान्यता हमारा समाज एकादश भाव भाव से जरूर देगा ।फलित में कहा जाता है कि एकादश भाव में जो भी ग्रह होता है वह शुभ फलदायक ही होता है।

चतुर्थ अष्टम व द्वादश भाव कालपुरुष की राशि मेंयह जल तत्व के भाव माने गए हैं।

हमें अपने जीवन में इन भाव से इसलिए लगाव रहना चाहिए जिस प्रकार निर्मल जल हमेशा स्वच्छता और निर्मलता की छवि रखता है जो पारदर्शी होता है अतः जीवन में पारदर्शिता रखकर जीवन जीने वाला व्यक्ति मोक्ष को प्राप्त होता है यही मोक्ष त्रिकोण का विशेष फल हम प्राप्त कर सकते हैं जीवन को जैसा हम हैं वैसे ही हम देखते हैं तो पारदर्शिता निश्चित रूप से आएगी किसी को भेदभाव की दृष्टि से गोपनीयता रखते हुए रहस्यवादी ता रखते हुए अगर जीवन जीते हैं तो परिवार में भी उसकी मान्यता नहीं होगी समाज तो दूर की बात है। इसीलिए 4 8 12 भाव भावेश के प्रभाव से हमें गहराई से सोचते हुए जीवन में अपने परिवार/समाज के सभी सदस्यों से उत्तम संबंध रखना चाहिए ताकि किसी भी बिंदु में दुर्भावना नाम मात्र की ना रहे। भाई, बहन, माता, पिता ,संतान सभी से समत्व रहेगा तो निश्चित रूप से सप्तम भाव गृहिणी में किसी प्रकार का दुराव नहीं आएगा तथा परिवार का सुख मिलेगा। गृहणि द्वारा घर में रहकर परिवार की की गई बड़ी महती सेवा का प्रतिफल उसें संतोष प्रदान करेगा और गृहस्थ में सानन्द सदन की परिवार को मान्यता मिलेगी कहा गया है।।।

सानन्द सदनं सुतास्तु सुधियः
कान्ता च प्रियालापिनी,
इच्छापूर्तिधनस्वयोसितीरति
स्वाज्ञापरा सेवकः
आतिथ्यं शिवपूजनंप्रति दिनं
मिष्टान्नपानं ग्रहे।
साधोसंगमुपासते च सततं
धन्यो गृहस्थाश्रमम्।।

यह अच्छे गृहस्थी की परिभाषा हमारे पुराने ऋषि महात्माओं ने व्यक्त की है। लेकिन ये केवल मेरे स्वयं के विचार हैं।

जन्म कुण्डली से व्यवसाय चयन योग

श्री एस.एस. लाल, आई.पी.एस
से.नि डायरेक्टर जनरल पुलिस

(आज के समय में व्यवसाय का चयन करना अधिक महत्वपूर्ण है। जन्म कुंडली को देख कर उसके शिक्षा काल में ही नौकरी अथवा व्यवसाय के बारे में विचार कर लेना चाहिए तथा व्यवसाय के करने में अगर अधिक लाभ है तो समय व्यर्थ व्यतीत नहीं करते हुए जातक को व्यवसाय में संलग्न करना चाहिए। जीवन वैभव के विद्वान नियमित लेखक जोकि इन्टेलेक्चुअल एस्टोलोनिकल सोसायटी के संरक्षक तथा सेवानिवृत्त डीजीपी एस.एस. लाल के ज्ञान वर्द्धक आलेख पाठकों के लाभार्थ प्रस्तुत किया जा रहा है) - ***सम्पादक***

जन्मपत्री में भाव 10 कर्म का है और नौकरी से संबंधित है तथा भाव 7 व्यवहार प्रक्रिया तथा साझेदारी व्यवसाय को व्यक्त करता है। वृष, कन्या तथा मकर व्यापार की मुख्य राशियां है। चंद्र, बुध, बृहस्पति तथा राहु व्यापार करने के लिए महत्वपूर्ण ग्रह है। कुछ योग निम्नलिखित हैः-

1. जन्म कुंडली में लग्न, चंद्रमा, द्वितीय, एकादश, दशम, नवम तथा सप्तम भाव का मजबूत होना।
2. लग्न स्वामी के साथ द्वितीय और एकादश के स्वामी का केंद्र, या त्रिकोण में हो ना तथा शुभ ग्रह से दृष्ट होना। या मजबूत लगना स्वामी के साथ द्वितीय, या एकादश के स्वामी का बृहस्पति के साथ दशम, या सप्तम में होना।
3. पंचम भाव, या भावेश का संबंध यदि दशम, दशमेश से हैं, तो जातक अपनी शिक्षा का उपयोग व्यवसाय में अवश्य करता है। व्यवसाय के संदर्भ में राशियों और ग्रहों की प्रकृति और तत्व को भी ध्यान में रखना होगा साथ में नक्षत्र भी इस संदर्भ में जानकारी देने में सहयोगी होते हैं।

व्यवसाय के लिए कुछ विशेष ग्रह योग-

1. भाग 10 के स्वामी ग्रह के गुण, स्वभाव के अनुसार जातक का व्यवसाय होता है।
2. दशम भाव का स्वामी किस राशि एवं भाव में स्थित है। उस राशि के स्वामी के अनुसार जातक का व्यवसाय होता है।
3. लग्न भाव एवं लग्नेश का भी व्यवस्थाओं का प्रभाव पड़ता है।
4. जन्म कुंडली में बलवान ग्रह,आत्म कारक आदि का भी व्यवसाय चयन पर प्रभाव पड़ता है। ऐसी कम कुंडलियां होती है जिनमें ग्रह पर किसी अन्य ग्रह का प्रभाव नहीं पड़ता हो। इसीलिए ग्रह पर युति और दृष्टि का प्रभाव रहता है। अतः व्यवसाय फल कथन करने में इसका भी विशेष ध्यान रखना चाहिए। कुछ योग व उनसे व्यवसाय जो संबंधित है वह निम्नानुसार है-

1. सूर्य+चंद्र-से सेनापति जैसा कार्य।
2. सूर्य+मंगल- नशाखोरी, दंडाधिकारी
3. सूर्य + बुध - विज्ञान संबंधी ज्ञान।
4. सूर्य + गुरु सलाहकार या पुरोहित जैसे कार्य।
5. सूर्य + शुक्र - वाहन सुख
6. सूर्य+ शनि परदेस में नौकरी।
7. सूर्य +राहु -अपराधियों से संबंध।
8. सूर्य + केतु - धार्मिक, आध्यात्मिक , कृषि संबंधित आदि ज्ञान वर्षा होती है।यह युति या दृष्टि में यह देखना जरूरी होगा कि दोनों ग्रहों में बल कितना है उसी अनुसार व्यवसाय की उन्नति व दृढ़ता होगी।
9. चंद्र+ मंगल - व्यापार से जीवन यापन।
10. चंद्र + बुध - सलाहकार
11. चंद्र+ गुरु - ज्योतिषी या धार्मिक कर्मकांडी
12. चंद्र + शुक्र - विलासिता की वस्तुएं
13. चंद्र+ शनि - पुस्तक व्यवसाया दार्शनिक प्रकृति
14. मंगल + बुध - वैज्ञानिक, इंजीनियर
15. मंगल + गुरु मजदूरों का नेता
16. मंगल+ शुक्र - हथियार व विदेश व्यापार
17. मंगल + शनि- दुस्साहस के काम
18. बुध + गुरु- राजकीय अधिकारी कर्मचारी
19. बुध + शनि- क्लर्क
20. गुरु + शुक्र- राज्य का अधिकारी
21. गुरु + राहु - दुष्ट स्वभाव के काम

22. गुरु + मंगल- शिक्षा संस्थाओं का अधिकारी। यह सभी योग केवल व्यवसाय को इंगित करते हैं। गहराई से देखने के लिए कुंडली में इन ग्रहों को क्या-क्या तत्कालीन अधिकार प्राप्त हैं उस पर भी फलित निर्भर करेगा।

स्वतंत्र व्यवसाय योग-

1. यदि चंद्रमा से केंद्र में बुध- बृहस्पति - शनि यह सभी या इनमें से कोई हो।
2. यदि बुध,शुक्र, चंद्र एक दूसरे से द्वितीयस्थ या द्वादशस्थ हो।
3. यदि चंद्रमा से बुध और शुक्र तीसरे - ग्यारहवे में हो तो स्वतंत्र व्यवसाय हो।

व्यवसाय में सफलता के योग-

1. यदि लग्न, चंद्र, सूर्य तीनों में से जो बली हो मे से दशम स्थान में यदि बुध हो तो व्यवसाय में सफल होता है।
2. भाग 10 पर कई शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तो सफल होता है ?
3. भाग 10 का स्वामी तथा लग्नेश एक साथ हो तो भी सफलता मिलती है।
4. यदि लग्नेश भाव 10 में हो तो भी सफलता मिलती है।
5. यदि दशमेश भाव 1,4,7, 10 या त्रिकोण 5,9 या भाव 11 में शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो भी सफल होता है।
6. दशम भाव में बैठा ग्रह यदि उच्च ग्रह हो तो अचानक और अधिक प्रगति होती है। और यदि नीच ग्रह हो तो कम उन्नति होती है और जब दोनों हो तो उतार-चढ़ाव होता रहता है।
7. यदि चंद्रमा से केंद्र 1,4,7, 10 मे बुध, गुरु, शुक्र, मैं से कोई या तीनों ग्रह हो तो भी सफलता मिलती है।
8. यदि चंद्रमा से बुध शुक्र एक दूसरे से द्वितीयस्थ या द्वादशास्थ शास्त्र हो तो भी सफलता मिलती है।
9. यदि चंद्रमा से गुरु ,शुक्र तृतीयस्थ या एकादशमस्थ हो तो भी सफलता मिलती है।
10. यदि भाव 2 का स्वामी भाव 11 में हो तथा भाव 11 का स्वामी भाव 2 में हो तो जातक बहुत सफल व्यवसायी होता है।
11. यदि पाप ग्रह केंद्र में हो और शुभ ग्रह की दृष्टि उन पर नहीं हो तो जातक

मछली व मांस संबंधित व्यवसाय करता है।

12. यदि भाव 10 का ग्रह अशुभ हो तो आलस्य और विलंब युक्त व्यवसाय तथा शुभ ग्रह हो तो परिश्रमी और शीघ्र सफल व्यवसाय बनाता है।
13. यदि मंगल और भाव 4 का स्वामी किसी एक केंद्र में अथवा किसी एक त्रिकोण में यह भाव 11 में हो और भाग 10 का स्वामी चंद्र ,शुक्र से युक्त या दृष्ट हो तो जातक कृषि एवं पशुपालन का व्यवसायी होता है।
14. यदि भाव 9 में शनि, बुध और शुक्र हो तो जातक कृषिष द्वारा धनी होता है।

व्यवसाय में हानि-

1. अगर सूर्य ,शनि भाव 5 में हो तथा जातक सरसों तेल आदि का व्यापार करता है तो हानि होगी।
2. अगर शनि भाग 10 में हो और जातक डॉक्टर बनता है तो उसे अपयश मिल सकता है।
3. यदि भाव 12 में राहु बुध हो तो राहु के कार्य बिजली, जेल आदि कार्य में हानि होगी।
4. अगर सूर्य भाव 12 में हो तो शनि की वस्तु चमड़ा ,तेल ,पत्थर, बिजली में हानि होगी।
5. भाग 4 में चंद्रमा हो दूध के कार्य में हानि होगी।
6. सूर्य यदि भाव 3 या 5 में और शनि भावना में हो तो सोना चांदी से तो लाभ होगा लेकिन शनि के कार्यो में हानि होगी।

आजीविका विचार-व्यापार का कारक ग्रह बुध द्वितीय, तृतीय, सप्तम या एकादश भाव में उच्च,या स्वगृही हो। क्रूर ग्रहों की निगाह नहीं हो, तो जातक सफल व्यापारी होता है। इस ग्रह की राशि मिथुन या कन्या इन भावों में पड़ी हो, बुध किसी शुभ ग्रहों के साथ स्थित हो, या शुभ योग बना रहा हो, तो भी जातक कुशल व्यापारी होता है।

लग्न ,चंद्रमा और सूर्य इनमें जो सबसे बली हो, उससे दशम स्थान के नवांश पति के स्वरूप या गुण के अनुसार जीविका प्राप्त होती है। भाग 10 के कारक ग्रह सूर्य, बुध ,गुरु और शनि है यदि इस भाग 10 में कोई ग्रह न हो तो दशमेश से अजीविका का चुनाव करना चाहिए। इसके बाद नवांश कुंडली में भाव 10 के ग्रह को देखना चाहिए। यदि भाव 10 में दो या अधिक ग्रह हो तो जो बलवान ग्रह हो तो उसे ज्यादा महत्व देना होगा। यदि 2 ग्रह बराबर की बलि हो तो दोनों को मिले-जुले रूप में लेना चाहिए। भाग 10 में पढ़ने वाली राशियां,इन राशियों के तत्व के आधार पर भी बहुत कुछ बताया जा सकता है। यदि भाव 10 में अग्नि तत्व की राशियां में मेष, सिंह, धनु हो तो जातक इंजीनियर,लोहे या धातु आदि के उद्योग या मोटर वाहन से संबंधित काम करता है। यदि भाव 10 में वायु तत्व की राशियां मिथुन, तुला, कुंभ हो तो इलेक्ट्रॉनिक के कार्य, वैज्ञानिक, विचारक आदि होता है। यदि भाव 10 में पृथ्वी तत्व की राशियां वृष ,कन्या ,मकर हो तो जातक प्रशासनिक कार्य, आर्थिक कार्य, सिविल कार्य, धातु संबंधी काम, खेती-बाड़ी या एजेंसी के कार्य करता है। यदि कर्क ,वृश्चिक ,मीन जैसी जल तत्व की राशियां भाव 10 में हो तो तरल पदार्थ, रसायन, डेरी व्यापार, शराब उद्योग, सामुद्रिक जहाजरानी या ठंडे पेय पदार्थों से संबंधित काम करता है।

जीवन का मूल आधार सतोगुण

हृदयानन्द राव

इस प्रकृति में मानव मात्र तीन प्रकार की गुणों को धारण करता है जोकि रजोगुण तमोगुण और सतोगुण है। इन दोनों का समावेश व्यक्ति को सामाजिक, पारिवारिक और स्वयं के मानसिक परिवेश पर निर्भर करता है। व्यक्ति की विचारधारा केद्वारा ही उसके कर्मो का निर्धारणहोता है। यदि स्वयं के विचार धनात्मक होंगे तो व्यक्ति सदैवधनात्मक विचारधारा वाले व्याक्ति से मित्रता करके अपने सामाजिक परिवेश को ही धनात्मक बनाने का प्रयास करेगा अन्यथा उस क्षैत्र और वातावरण को बदल कर अपने मनोनुकूल वातावरण मेंजीवन को जिएगा और सतोगुण को अपनाएगा।

श्रीमद्भगवत गीता मे भगवान कृष्ण ने इसे बड़े ही शिक्षात्मक ढंग से समझाया है

सत्वं रजस्तम इति गुणाः प्रकृतिसम्भवाः।
निबन्धन्ति महाबाहो देहे देहिनमव्ययम्।।

सत्वगुण, रजोगुण और तमोगुण-ये प्रकृति से उत्पन्न तीनों गुण अविनाशी जीवात्मा को बाँधते हैं। तमोगुण अज्ञान से उत्पन्न होता है।वह जीवात्मा को प्रमाद(इंद्रियों और अंतःकरण की व्यर्थ चेष्टाओं का नाम), आलस्य (कर्त्तव्य कर्म में अप्रवृत्तिस्वरूपी निरुद्यमता का सम्बन्ध) और निद्रा के द्वारा बाँधता है।

तमस्त्वज्ञानजं विद्धि मोहनं
सर्वदेहिनाम्।
प्रमादालस्यनिद्राभिस्तन्निबध्नाति भारत।

राग रूप रजोगुण कामना और आसक्ति से आविभूत होता है। वह इस जीवात्मा को कर्मों के और उनके फल के संबंध से बाँधता है।

सत्त्वगुण निर्मल होने के कारण प्रकाश करने वाला और विकाररहित है। वह सुख के संबंध से और ज्ञाता-ज्ञान के

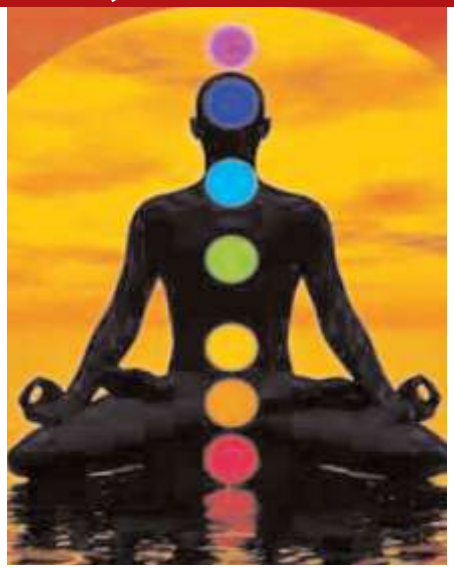

संबंधों से अर्थात अभिमान से बाँधता है, परंतु

कर्मयोग द्वारा तमोगुण से
निष्कामता के द्वारा रजोगुण से
भक्ति के द्वारा सतोगुण से

उपर उठा जा सकता है।

तमोगुण के बढ़ने पर अन्तःकरण और इन्द्रियों में जड़ता आ जाती है।कार्य करने की इच्छा समाप्त हो जाती है। मन में नकारात्मक विचारों का जमघट लग जाता है। शरीर बस यों ही पड़ा रहता है और आलस्य का घर बन जाता है। जब व्यक्ति सोता है तो फिर उसे कोई होश ही नहीं रहता है।निद्रा उसकी अभिन्न सहचरी बन जाती है। व्यक्ति निश्चेष्ट, निष्क्रिय रहता है।

तमो गुण के मुख्य लक्षण है जड़ता। शरीर, मन सभी जड़वत् हो जाते हैं और हृदय में भाव जगता ही नहीं है कुछ करने के लिए। ऐसा व्यक्ति दूसरों के दुःख से संवेदित नहीं हो सकता।

तमोगुणी घोर स्वार्थी और दूसरों पर आश्रित होता है। वह स्वतंत्र रूप से कोई भी कार्य नहीं कर सकता है और करता है तो केवल अपने लिए,दूसरों के प्रति वह कुछ नहीं कर सकता है। वह आलस्य, प्रमाद और निद्रा की जीती-जागती मूर्ति होता है। इस अवस्था में एक अजीब सी जड़त छाई रहती है, जिसमें मनुष्य और पशु के बीच कोई विभेदक दीवार दिखाई नहीं देती। दोनों के बीच समानता दृष्टिगोचर होती है। पतंजलि ने इसे मूढ़ावस्था की संज्ञा दी है। इस अवस्था में चित्त सिकुड़ता है और वह मनुष्य योनि से कीट, पशु आदि निम्न योनियो को तथा नरक को प्राप्त होता है।

रजोगुण क्रियाशीलता का प्रतीक है। इसके बढ़ने पर लोभ, अति महत्वाकांक्षा, विषय-भोगों की घोर लालसा, स्वार्थबुद्धि प्रकट होती है। जब मनुष्य इस अवस्था में आता है तो कुछ पाने की लालसा से अति कर्म करने लगता है। इसके करने में पाने की तीव्र इच्छा समाहित रहती है। वह करता है ही कुछ पाने के लिए।जितना अधिक करता है,उतना अधिक पाने का सपना सँजोता है। इसकी नियति बन जाती है-बस करते जाओ और विभिन्न चीजों को उपलब्ध करते जाओ। इसकी यह यात्रा थमती नहीं, बस, अंतहीन पथ पर सब कुछ पाने के लिए चलती रहती है। इससे उसके अंदर लोभ पैदा हो जाता है। लोभ तो ऐसी अग्नि की ज्वाला है, जो कभी बुझती नहीं है। इच्छा और महत्त्वकांक्षा के हविष्य से यह और भी धधकने लगती है। यह है रजोगुण की क्रियाशीलता।व्यक्ति विषयों के चिन्तन में लुप्त हो जाता है।

ध्यायतो विषयान्पुंसः सङ्गस्तेषूपजायते।
सङ्गात् संजायते कामः
कामात्क्रोधोऽभिजायते।।
क्रोधाद्भवति सम्मोहः
संमोहात्स्मृतिविभ्रमः ।
स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशो
बुद्धिनाशात्प्रणश्यति ॥

रजोगुण में पाप-पुण्य, दोनों प्रकट होते है। इसमें मन चंचल होता है। सुख, दुन्ख,चिंता, परेशानी सतत बनी रहती है। जब व्यक्ति कोई सत्कर्म करता है तो पुण्य में वृद्धि होती है। पुण्य से साधन-सुविधाओं का अंबार खड़ा हो जाता है। चारों ओर सुख का वातावरण बन जाता है। सुख-भोग के समय उसका अहंकार बढ़ जाता है। कि वह कुछ भी करे तो उसका कुछ नहीं बिगड़ेगा। बस, क्या है कि वह उन्मादी होकर पापकर्म करने लगता है, जिसके परिणामस्वरूप उसे दुन्ख, कष्ट, आदि भोगने पड़ते है। इस अवस्था में साधना नहीं हो पाती।

सत्वगुण निर्मल होने के कारण प्रकाश करने वाला और विकाररहित होता है। इससे ज्ञान उत्पन्न होता है। इसका फल सुख, ज्ञान और वैराग्य कहा गया है। सत्वगुण में पुरूष स्वर्गादि उच्च लोकों को प्राप्त करता है, पंरतु यह ज्ञान से संबंधित होने के कारण अभिमान को उत्पन्न करता है। जिससे मनुष्य का पतन होने की संभावना रहती है। सतोगुणी को श्रेष्ठ अवस्था कहा जाता है, क्योंकि यह अध्यात्म का प्रवेशद्वार है। इसी द्वार से अंतर्प्रज्ञा के विभिन्न आयाम प्रकट होते है।

सत, रज, तम गुणों से नीवृति के लिए भी योगीजन साधन एवं साधना का विधान देते है। तमोगुण से कर्मकांड द्वारा निवृत्त हुआ जा सकता है तमोगुण अर्थात जड़ता एवं दुन्खद संस्कार। दुःख निवारक कर्मकांड, जैसे दुर्गा, गायत्री, हनुमान, महामृत्युजय आदि का पाठ, जप एवं ध्यान करने से अंतर में अंधकार छँटता-मिटता है। कर्म करने पर आलस्य एवं प्रमाद मिटते है और व्यक्ति क्रियाशील होने लगता है। क्रियाशीलता रजोगुण का लक्षण है। अतः विभिन्न प्रकार के क्रियाकलापों द्वारा तमोगुण को क्षीण किया जा सकता है।

रजोगुण में कार्य एवं उसकी उपलब्धि, दोनों चरम पर होते है। कर्म की जितनी तीव्रता होती है, उसके फल को पाने की लालसा भी उतनी ही अधिक होती है। इस अवस्था में बहुत कुछ पाने की धुन समाई रहती है, पंरतु निष्कामता से इसका शमन होता है। निष्कामता अर्थात श्रेष्ठतम एवं तीव्रतम कर्म, पंरतु इसके परिणाम को पाने की चाहत का न होना। जैसे-जैसे निष्कामता सधती जाती है, रजोगुण गिरता जाता है और रजोगुणयुक्त पुरूष सत्त्वगुण में प्रतिष्ठित होने लगता हैं। गुरू अपने शिष्य में पहले जड़ता को समाप्त करने के लिए कर्मकांड कराता है, फिर उसकी महत्त्वाकांक्षा को बढ़ाता है, जिससे वह कर्म में प्रवृत होता है। जब महत्त्वाकांक्षा और लोभ की ज्वाला जलने लगती है तो वह भक्ति का जल उँड़ेल कर उसे शांत कर देता है और उसे सत्त्वगुण में प्रतिष्ठित कर देता है।

सत्वगुण से प्राप्त सुख एवं ज्ञान से जो अभिमान उठता है, वह भी अत्यंत हानिकारक होता है, पंरतु भक्ति एवं सेवा के द्वारा वह अभिमान गल जाता है। भक्ति की जलधारा में सत्त्वगुण का अभिमान बहा ले जाती है और बचती है तो केवल भक्ति। भक्ति और अहंकार, दोनों साथ-साथ नहीं रहते-एक के रहने पर दूसरा नहीं रहता और दूसरे के रहने पर पहला नहीं होता है। अत- भक्ति की भावधारा में सत्त्वगुण से उत्क्रांति कर जाना चाहिए। सतोगुण के वृद्धि के लिए नवधाभक्ति का विधान है

प्रथम भगति संतन्ह कर संगा।

दूसरि रति मम कथा प्रसंगा गुरू पद पंकज सेवा

तीसरि भगति अमान।

चौथि भगति मम गुन गन करइ कपट तजि गान।

मंत्र जाप मम दृढ़ बिस्वासा।

पंचम भजन सो बेद प्रकासा

छठ दम सील बिरति बहु करमा। निरत निरंतर सज्जन धरमा।

सातवँ सम मोहि मय जग देखा। मोतें संत अधिक करि लेखा॥

आठवँ जथालाभ संतोषा। सपनेहुँ नहिं देखइ परदोषा॥

नवम सरल सब सन छलहीना। मम भरोस हियँ हरष न दीना॥

नव महुँ एकउ जिन्ह कें होई। नारि पुरुष सचराचर कोई।

वही गीता श्रीकृष्ण कहते हैं

सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।

अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः।

ज्योतिष शास्त्र में सूर्य चन्द्रमा एवं बृहस्पति के नक्षत्र सतोगुणी होते हैं

कृतिका, रोहिणी, पुनर्वसु,उतरा फाल्गुनी, हस्त, विशाखा, उत्तराषाढा, श्रवण, पूर्व भाद्रपद बुध एवं शुक्र के नक्षत्र रजोगुणी होते हैं

भरणी, अश्लेषा,पूर्व फाल्गुनी, मूल, पूर्वाषाढा, रेवती

मंगल शनि राहु केतु के नक्षत्र तमोगुणी होते हैं

अश्विनी,मृगशिरा, आर्द्रा, पुष्य,मघा, चित्रा, स्वाति, अनुराधा,मूल, धनिष्ठा, शतभिषा, उत्तर भाद्रपद

ग्रहों के गुण

सतोगुणी

सूर्य चन्द्रमा एवं बृहस्पति

रजोगुणी

बुध एवं शुक्र

तमोगुणी

मंगल शनि राहु केतु

ग्रहों के शुभत्व शुभत्व को जन्म कुंडली में देख कर शुभ ग्रहों के उपाय करते हुए सतोगुण वृद्धि में व्यक्ति को प्रवेश करते रहना चाहिए जिससे कि आज के नकारात्मक युग में भी सकारात्मकता लाई जा सके और समाज में सद्गुणी स्वभाव के लोगों का अस्तित्व बढ़ने से एक सुखी समाज की कल्पना की जा सके

लग्न एवं लग्नेश का अन्य भावों से संबंध

*लग्न और लग्नेश के बारे में फलित ज्योतिष ग्रुप के विद्वानों के अपने अनुभव के आधार पर विचारों का संकलन पाठकों के लाभार्थ आलेख में संकलित किया गया है..**सम्पादक***

हेमचंद्र पांडेय

जन्म कुंडली में लग्न भाव याने प्रथम भाव का बड़ा महत्व है लग्न वह है जोकि जातक के जन्म समय में पूर्वी क्षितिज में उदय होने वाला लग्न जातक का लग्न कहलाता है लग्न से ही जातक के बारे में पूरा जीवन का निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि जातक जीवन में कितनी ऊंचाई तक तरक्की करेगा क्योंकि लग्न और लग्नेश हीं अन्य समस्त भावों को बलि करता है यह उदाहरण इसके लिए पर्याप्त है।

एक बड़ा मकान है जिसमें कुल 12 कमरे हैं घर के पूर्व में एक बीजली का ट्रांसफार्मर लगा है जिससे सभी कमरों में रोशनी पहुंच जाती है। बड़े कमरों में रोशनी का इंतजाम बड़े वोल्टेज से किया जाता है जिसमें की फ्रीज और एयर कंडीशन भी होते हैं। जिसके लिए पावर का इंतजाम मेन ट्रांसफार्मर से सीधे ही किया जाता है। कहने का आशय है कि इसे जन्म कुण्डली मानी जाए तो लग्न मेन पावर है इसका प्रबल होना जरूरी है।

मेन ट्रांसफार्मर ही कमजोर हो तो न एसी चलेगा न फ्रिज केवल हल्की बत्ति ही जलेगी।

बस यही कहानी ईश्वर द्वारा बनाए हुए इस शरीर के लिए भी है शरीर व्यक्तित्व और चेहरा तथा व्यक्ति का स्टेटस यह सब बातें जन्म लग्न पर ही देखी जाती है जोकि पूरे शरीर और शरीर के अंगों के संचालन के लिए एक बड़ा ट्रांसफार्मर है जिसके द्वारा शरीर के सभी अंगों को शक्ति पहुंचाईजाती है। मेन ट्रांसफार्मर से पंचम भाव को सूचना जाएगी कि क्या करना है पंचम भाव यानी बुद्धि शरीर को प्रभाव शील बनाएगी और सुसंस्कारित ढंग से कार्य करने के लिए नवम भाव को प्रेरित करेगी यही व्यक्ति का पिता,धर्म और संस्कार का भाव है जोकि जन्म काल से ही माता पिता द्वारा संस्कारित किया जाता है। बस यही अग्नि तत्व राशियों का त्रिकोण है 1,5,9 मूल त्रिकोण लग्न, पंचम भाव और उसके बाद नवम भाव ।इसीलिए इसे विद्वान धर्म त्रिकोण मानते है जब अग्नी होगी तो ही व्यक्ति में क्रियाशीलता बढ़ेगी। अतः इन तीन भावो का बड़ा महत्व है।

तीन भाव ऐसे हैजिन्हे त्रिक् भाव कहा जाता है। 6,8,12 छठवां भाव व्यय भाव भाव का सातवां है अर्थात भंडारण करना पैसा बचाना घर में सामान बचाना अष्टम भाव परिवार का सप्तम भाव है अर्थात सौम्यता रखना चरित्रवान बनना। सबसे अच्छे संबंध रखना पैत्रक कार्योका अनुसरणऔर गहराई से सोच कर काम करना। व्ययभाव जो कि लग्न से बारहवां है तथा दशम भाव कर्म भाव से तीसरा अर्थात कर्म का पराक्रम भाव कहलाता है इन सब भागों में शुभ ग्रह है यह शुभ ग्रह की दृष्टि है तथा भाव कारक का लग्नेश के साथ मैत्रीय भाव रखते होतो निश्चित रूप से व्यक्ति सोच समझकर कार्य करेगा। लग्न या लग्नेश के कंट्रोल में यदि है तो प्रत्येक कार्य में सूझबूझ रहेगी।

कहने का आशय है कि लग्न और लग्नेश का सभी अन्य भावों के स्वामी तथा भावों के कारक से मैत्री भाव, दृष्टि अथवा समत्व होता है तो उसभाव के प्रति व्यक्ति अधिक ध्यान देकर उसका शुभत्व जीवन में हांसिल कर ही लेगा, इसमें संशय नहीं है।

नीरज चौकसे

सूर्य यदि लग्नेश होतो जातक स्वाभिमानी, शीघ्र कोपी, कम बोलनेवाला परंतु प्रखर वाणी समाज मे प्रतिष्ठित व्यक्ति होता है।

चंद्र अगर लग्नेश होतो परिस्थिति अनुसार खुद को ढालने वाला,चंचल मन, कोमल ,किसी भी कार्य को शीघ्र करने वाला होता है,विचारो की अस्थिरता रहती है।

मंगल अगर लग्नेश हो तो व्यक्ति खिलाड़ी प्रकुति का बिंदास होता है,मेष लग्न हो तो पराक्रमी,अपनी बात पर अड़े रहनेवाला ,दूसरे की कम सुनता है, वृश्चिक में थोड़ा शांत ,विवेक पूर्ण रवैया रहता है।

बुध लग्नेश हो तो हर बात को सोच कर बोलने वाला अति ज्ञानी बुद्धिमान जातक होता है,मिथुन लग्न में होतो चतुर ,चालाक कूटनीतिज्ञ होता है।

गुरु लग्नेश हो तो आध्यात्मिक, सम्मान की चाह रखने वाला ,कोई भी काम करने के पहले 10 बार सोचने वाला ,अपने विचारों को दूसरे के सामने सहज भाव से रखनेवाला जातक होता है।धनु लग्नमें स्वाभिमानी प्रवृति ज्यादा देता है,मीन में शांत होता है।

शनि लग्नेश हो तो न्यायप्रिय, तर्कसंगत बात करनेवाला,काम को टालने की प्रवृत्ति होती है।

मनोजसिंह चौहान

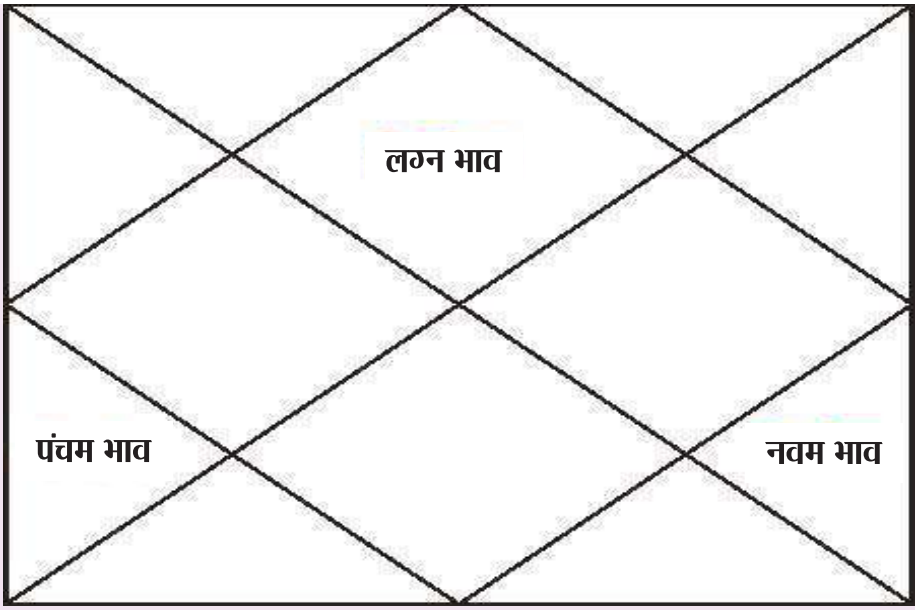

लग्नेश जिस भाव से जुड़ेगा जातक को उस भाव से संबंधित कारकत्वों की और सहज ही झुकाव एवं लगाव पैदा हो जाता है, इसके अलावा लग्नेश कौन सा ग्रह बन रहा है, इस पर भी निर्भर करता है कि दृष्टिकोण एवं विचार किस प्रकार के होंगे।

उदाहरण स्वरूप किसी जातक का तुला लग्न है और लग्नेश शुक्र बनता है, शुक्र चूँकी सौंदर्य एवं कला का प्रतिनिधित्व करता है, खानपान पर विशेष इसकी पकड़ होती है, विभिन्न प्रकार के व्यंजन का शौक जातक को होता है, सुंदरता के प्रति प्राकृतिक सौंदर्य के प्रति जातक का स्वाभाविक लगाव होता है, देखने दिखाने व प्रदर्शन में काफी सजग रहता है, हर चीज को देखने का नजरिया सुंदरता को लेकर होता है। जातक हर चीज में सौंदर्य खोजता है। खान-पान में विशेष रुचि रखता है यह देखा गया है। रहन सहन पहनावे आदि में शुक्र का स्पष्ट झुकाव दिखता है, शुक्र प्रधान व्यक्ति की आंखें सौंदर्य पिपासु होती हैं, एवं एक नशीलापन उसकी आंखों में देखा जा सकता है, यह लोग भावना प्रधान होते हैं, जरा सी बात की ठेस बहुत जल्दी लग जाती है, नाराज़ भी बहुत जल्दी हो जाते हैं और खुश भी बहुत जल्दी हो जाते हैं। अब यही लग्नेश शुक्र तुला लग्न में छठवें भाव में बैठ जाए जो कि ऋण रोग मामा पक्ष और शत्रु का होता है, तो व्यक्ति स्वतः ही इन सब कारकत्वों को अपने स्वभाव में पाल लेता है, स्वभाविक लगाव जाने अंजाने इन पक्षों से जुड़ जाता है। तुला लग्न में छठे भाव में बृहस्पति की राशि मीन स्थित होती है जो कि शुक्र की उच्च राशि होती है, शुक्र का बृहस्पति के साथ वैसे तो शत्रु का नजरिया होता है, क्योंकि एक (शुक्र) दैत्यों के गुरु कहे गए हैं जबकि दूसरे (बृहस्पति) देवों के गुरु कह गए हैं, लेकिन जहां शुक्र कला को प्रधानता देता है वही बृहस्पति ज्ञान की पराकाष्ठा होता है, जब कला और सुंदरता का ज्ञान से समागम होता है, तो तीसरी चीज जो पैदा होती है वह संगीत ज्योतिष एवं आंतरिक ज्ञान बनके प्रस्फुटित होती है, अब बात इस पर भी निर्भर करती है कि शुक्र का डिस्पोजिटर बृहस्पति जातक की कुंडली में कहां पर स्थित है?? अगर बृहस्पति भी शुभ प्रभाव में अच्छी राशियों में है तो निश्चित ही जातक को शुक्र वा बृहस्पति के मिले-जुले प्रभाव देखने को मिलेंगे जो मैंने उपरोक्त वर्णित किए और अगर बृहस्पति अशुभ प्रभावों में गलत राशि में चला गया है, तो जातक को इसके अशुभ प्रभाव एवं आधे शुक्र के अच्छे प्रभाव और बृहस्पति के बुरे प्रभाव भी मिल सकते हैं, उदाहरणार्थ अगर बृहस्पति भी वही मीन राशि में स्थित है तो जातक गीत-संगीत प्रधान, कर्ज को बढ़ाने वाला स्वतः ही शत्रु पैदा करने वाला लेकिन शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाला, पेट के रोग से ग्रसित, खाने पीने से रोग को बढ़ाने वाला, लेकिन आंतरिक ज्ञान से भरा हुआ हो सकता है। अब तुला लग्न में अगर छठे भाव का स्वामी बृहस्पति स्वग्रही होकर तीसरे भाव में धनु राशि में हो जाएगा, जोकि पराक्रम भाव है कम्युनिकेशन का स्थान है तो जातक ने लेखन और वाणी के गुणों का समावेश कर देगा शिक्षक, ज्योतिष एवं आध्यात्मिक क्षेत्र में जातक को स्वतः ही रुचि पैदा हो जाएगी, अतः मेरा कहना है कि लग्नेश जहां भी बैठा हो, उसका डिस्पोजिटर और लग्नेश दोनों की प्रकृति को मिक्स करके देखा जाए तो जातक की प्रकृति एवं स्वभाव को हम ज्ञात कर सकते हैं। शुक्र चूंकि मीठी वस्तुओं का कारक है अतः शुक्र प्रधान व्यक्तियों को मीठे खानपान का विशेष शौक रहता है और बृहस्पति भी खानपान एवं पेट से संबंधित ग्रह कहा गया है अतः डायबिटीज शुगर अथवा पेट के रोगों से जातक परेशान रह सकता है ऐसा अनुभव में मैंने पाया है।

वैसे तो यह विषय काफी लंबा है एक ग्रह को लेकर ही काफी सारा लिखा जा सकता है अतः वाणी को यहीं विराम देता हूँ।

श्री केदार सिंह चौहान

जिस भाव में लग्नेश होगा इस भाव के कारकवों के प्रति जातक में रुझान या लगाव देगा । जातक उस भाव से संबंधित सभी कारकत्वों के साथ सहज महसूस करेगा । लेकिन 6,8,12 में होने पर स्वयं जातक को उस भाव संबंधी नकारात्मक प्रभावों को भी झेलना होगा ।

1) लग्न में जातक शारीरिक रूप से स्वस्थ ,आकर्षक और बलवान होगा । सभी वस्तुओं को सहज में प्राप्त करने वाला ।

2) धन भाव में जातक का लगाव , धन,कला , खान पान और परिवार से लगाव।

3) सहज भाव में होने से जातक भाई , बहनों मित्रों से लगाव होगा , जातक मेहनती होगा।

4) भाव 4 में होने से घर , वाहन , माता , मातृ भूमि और इस भाव से संबंधित सभी कारकत्वों से लगाव होगा।

5) पंचम भाव में संतान से विशेष लगाव , जातक बुद्धिमान होगा ।संगीत, मनोरंजन का शौकीन होगा। बुद्धिजीवियों का साथ पसंद करेगा और साथ मिलेगा भी ।

6) मामा पक्ष से लगाव , किन्तु रोगी शरीर , कर्ज इत्यादि से परेशानी । व्यायाम का शौकीन होने के बावजूद अनियमित दिनचर्या ।

7) लग्नेश सप्तम में लग्न को बल प्रदान करने वाला , मेहमान नवाज़, अधिक मित्रों या मिलने जुलने वालों से युक्त ।पत्नी से प्रेम ।अनुरागी ।

8) अष्टम भाव में लग्नेश संघर्षशील जीवन, अपमान, अन्तर्ज्ञान , कर्मशील, छोटे कार्य भी स्वयं करने वाला।स्वाधीन, आत्मनिर्भर। अंदर की बात समझने, जानने वाला।

9) लग्नेश नवम में होने से जातक गुरु भक्त, पितृ भक्त , भाग्य में विश्वास रखने वाला , भाग्यवान , दीर्घायु ।

10) दशम में लग्नेश होने से जातक उच्च स्तर का रहन सहन पसंद करने वाला , ठाठ बाट से रहने वाला , कर्म शील, घर से बाहर रहना पसंद करने वाला होगा ।

11) बड़े उम्र के मित्रों से युक्त , अपने से अधिक वय के लोगों के साथ उठने बैठने वाला , बहु- मनोकामनाओं वाला , बड़े भाई बहन से लगाव रखने वाला ।लेकिन चर लग्न में हो तो कम आयु प्रदाता होगा।

12) द्वादश में लग्नेश व्ययशील प्रकृति वाला , दानवीर , स्वयं के लिए कुछ नहीं रखने और सबकुछ दूसरों पर लुटाने की प्रवृत्ति वाला , धर्मात्मा, ज्ञानी, आध्यात्मिक ।रोगी काया वाला होगा।

केवल 6,8,12 में लग्नेश स्वयं या शरीर के लिए हानि कर सिद्ध होगा । लेकिन इन भावों से जुड़े अन्य कारकत्वों में वृद्धि हो करेगा ।

ज्योतिष एवं वास्तु परामर्श

ग्रहों के अरिष्ठ प्रभाव के निवारण हेतु ज्योतिष एवं वास्तु परामर्श के लिए

डॉ. हेमचन्द्र पाण्डेय

बी-14, सुरेन्द्र गार्डन, होशंगाबाद रोड, भोपाल
फोन : 0755-2418908, मो.: 9425008662
समय प्रात: 9:30 बजे से 11:30 बजे तक
ईमेल : hcp2002@gmail.com

परामर्श के लिए पूर्व समय लेना आवश्यक :

वर्षा संबंधित जानकारी

रामदयाल पाण्डेय
गोवर्धनपुरा मंदसौर

सूर्य के नक्षत्र आर्द्रा के आरंभ से हस्त नक्षत्र तक बर्षा होने का समय माना गया है इनके अंत में वर्षा ना हुई हो तो ऐसी दशा में किसान खेती में कष्ट पाजाता है अर्थात बर्बाद हो जाता है।

2 आषाढ़ मास की पूर्णिमा को बादल हो बिजली चमके तो अधिक मात्रा में बरसात होगी अकाल समाप्त हो जाएगा सभी सज्जन आनंदित हो रहेंगे।

3 उत्तर दिशा में बिजली चमकती हो पूरब की हवा बहती हो तो पानी आने की तैयारी होती है याने किसान को चाहिए कि अपने बैलों और दुधारू पशुओँ को घर के अंदर सुरक्षित कर लेना ही अच्छा होता है। शीघ्र वर्षा होने की संभावना बनती है

4 गिरगिट उल्टा अगर पेड़ पर चढ़े तो वर्षा इतनी अधिक होगी कि उस क्षेत्र की धरती पर जल ही जल दिखेगा।

5 आसमान में यदि घनघोर काले बादल छाए हैं तो तेज वर्षा के केवल आशंका ही होतीहै,लेकिन पानी बरसने के आसार नहीं होंगे ।यदि बादल भूरे रंग के हैं तो वहां समझो पानी निश्चित रूप से बरसेगा।

6 पश्चिम या उत्तर पूर्व के कोने पर बिजली चमके तब समझ लेना चाहिए कि वर्षा तेज होने वाली है।

7 चैत्र शुक्ल पक्ष की दशमी तिथि को आसमान में बादल नहीं है तो यह मान लेना चाहिए कि इस वर्ष जुलाईसे अक्टोबर के चतुर्मास में बरसात अच्छी होगी।

8 यदि सूर्य केचित्रा नक्षत्र में बरसात होती है तो संपूर्ण खेती में नुकसान (नष्ट) हो जाती है इसलिए कहा जाता है कि चित्रा नक्षत्र की वर्षा ठीक नहीं होती ।

9 चित्रा नक्षत्र में बरसात अगर होती है तो चूहे की मृत्यु और उससे जन्य बिमारी का भय रहता है चूहे की मृत्यु होती है।

10 माघ महीने मैं लाल (रक्तिमआभा)रंग के बादल अगर दिखाई देते हैं तो ओले गिरने की संभावना होती है, तात्पर्य यह है कि यदि माघ के महीने में आसमान

लाल रंग का दिखाई दे तो ओले गिरने के लक्षण बनते है।

11 यदि सूर्य के रोहिणी नक्षत्र में पानी बरसे और मृगशीर्ष नक्षत्र में गर्मी अधिक गिरती हो और आर्द्रा के भी कुछ दिन बीत जाने पर वर्षा हो तो खेती में पैदावार इतनी अच्छी होती है किअनाज के भण्डारण का स्थान कम पड़ता है कहावत है कि कुत्ते भी चावल खा खा कर के उबने लग जाते हैं।

12 यदि श्रावण कृष्ण की प्रतिपदा को आसमान में बादल छाए रहे और प्रातकाल सूर्य के दर्शन ना हो तो निश्चित ही 4 महीने तक जोरदार बारिश होगी।

13 श्रावण शुक्ल प्रतिपदा को बारिश हो जाती है और सूर्य के दर्शन होते हैं तो समझ लेना चाहिए कि 4 महीने बरसात की कमी रहेगी। अकाल योग भी होसकता हैं।

14 कार्तिक की अमावस्या याने दीपावली को यह देख लेना चाहिए कि उस दिन रविवार शनिवार और मंगलवार स्वाति नक्षत्र आयुष्मान योग तो नहीं है अगर है तो अकाल पड़ेगा और जन हानि की संभावना होगी। इसेभी अकाल योग कहते है।

15 यदि सूर्य का मघा नक्षत्र सूखा चला जाए मघा नक्षत्र में पानी नहीं बरसे तो समझो सारी जमीन उसर बन जाएगी किसानों को दूध भात तक भी नहीं मिलेगा।

16 आषाढ़ कृष्ण पक्ष की नवमी तिथि को आकाश में घनघोर बादल गरजे तो ज्योतिषियों का कहना है की चारों और भीषण अकाल पड़ने वाला है।

17 फाल्गुन मास में पांच मंगलवार पौष मास में यदि पांच शनिवार पड़े तो ज्योतिष के अनुसार निश्चित ही अकाल पड़ने वाला है। बीज के अंकुरण और फसल नहींहोती ।बीज नही बोये क्योंकि उससे कोई लाभ नहीं होगा।

18 श्रावण मास में पूरब की हवा बहे भाद्रपद मास में पश्चिम की हवा बहे पशुओं के स्थान पर घर के बच्चों/सदस्यों के पालना पोषण की चिंता करो ।वर्षा नहीं होगी। अकाल पड़ेगा।

19 वैशाख शुक्ल पक्ष की तृतीया अक्षय तृतीया यदि रोहिणी नक्षत्र ना पड़े पोष कीअमावस्या को यदि मूल नक्षत्र ना पड़े सावन की पूर्णमासी को यदि श्रवण ना पड़े कार्तिक की पूर्णमासी को यदि कृतिका नक्षत्र ना पड़े तो समझ लेना चाहिए कि धरती पर दुष्टों का बल बढ़ेगा धान की उपज नष्ट होगी।

20 द्वितीया का चंद्रमा यदि पूर्वा भाद्रपद ,कृतिका अश्लेषा या मघा नक्षत्र में उदित हो द्वितीया का चंद्रमा तो मनुष्य को सुख ही सुख प्राप्त होता है।

21 कार्तिक शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा गोवर्धन पूजा अन्नकूट गो कीड़ा के दिन चित्रा नक्षत्र में चंद्रमा हो तो फसल अच्छी होती है।

22 यदि 1 महीने में पांच शनिवार पांच रविवार और पांच मंगलवार पड़े तो महा अशुभ होता है यदि ऐसा होता है तो राज कार्य में बाधाएं होगी । अन्न महंगा होगा।

23 यदि पौष की अमावस्या को सोमवार गुरुवार या शुक्रवार पड़े तो शुभ होता है और हर जगह बधाई बजेगी ।कोई भी आदमी दुखी नहीं रहेगा।

ग्रह योग एवं रोजगार

पुष्पा सिंह यादव

जन्म पत्रिका के अंतर्गत यदि हम रोजगार की चर्चा करें तो हमारे समक्ष सभी ग्रहों नक्षत्रों के प्रभाव के बारे में जानकारी होना आवश्यक है। किसी भी व्यक्ति के बारे में दशम भाव महत्वपूर्ण है लेकिन कर्म से कई लाभ प्राप्त कर रहा है या नहीं इसके लिए धन भाव एवं एकादश भावों के बारे में भी जानकारी होना आवश्यक है। यदि दशम भाव के मित्र द्वितीय भाव एवं एकादश भाव है ऐसी स्थिति में कर्म के प्रति व्यक्ति संतुष्ट रहेगा अन्यथा अपने कर्म से असंतोष रहकर अधमने से कार्य करते हुए जीवन व्यतीत करेगा। कार्य का पूर्ण होना और उसमें सफलता या असफलता प्रदान करने में नवम भाव जो कि भाग्य भाव कहलाता है कि महती भूमिका होती है क्योंकि वह दशम यानि कर्म का व्यय भाव है अर्थात कर्म पूर्ण होना तत्पश्चात कर्म का धन भाव लाभ स्थान अर्थात एकादश भाव है जो कि किए गए कर्म का परिणाम लाभ के रूप में प्राप्त करता है। कर्म करने में अपनी बुद्धि मानसिकता का भी उतना ही महत्व है जितना कि भाग्य भाव का है अतएव कार्य करने में बुद्धि लगना अपनी बुद्धि और आत्मबल से कार्य को सफलता तक ले जाने वाला भाव पंचम भाव होता है जिससे व्यक्ति के अपनी बुद्धि बल से सफलता प्राप्त करता है।

यदि बाल्यकाल से ही इन जन्मपत्रिका के आधार पर ग्रहों का सम्यक अध्ययन करते हुए कार्य के अनुरूप उसकी शिक्षा प्रदाय करने की व्यवस्था की जाती है तो वास्तव में उस बालक की सफलता का प्रतिशत अधिक प्राप्त होता है। तथा इसका संपूर्ण लाभ परिवार एवं समाज को मिल सकता है।

अनुभव से परिपूर्ण ज्योतिषज्ञ को बालक की जन्मकुंडली का सम्यक अध्ययन के पश्चात उस बालक के भावी जीवन के लिए विषय का चुनाव सही होने से भटकाव नहीं होकर वह बालक आरंभ से ही होनहार हो जाता है। उदाहरणार्थ गणित विद्या, रसायन विद्या, संगीत कला, औषधि विद्या, जीवन जंतु विद्या, वनस्पति विद्या, शारीरिक अंगों की जानकारी से संबंधित ज्ञान की विद्या आदि के लिए प्रयुक्त होने वाले ग्रह नक्षत्रों का समुचित अध्ययन करते हुए जनमांग के ग्रहों से मेल खाने वाले विषयों का पठन-पाठन करना चाहिए।

बुध ग्रह : जिनके विद्या भाव अर्थात पंचम भाव से संबंध है तथा दशम भाव एवं एकादश भाव पर बुध की नक्षत्र वाले ग्रहों का प्रभाव हो ऐसा व्यक्ति वाणिज्य कार्य में प्रबल होगा यदि बचपन में बुध ग्रह प्रबल है बुध की दक्षा अथवा बुध के नक्षत्र वाले मित्र ग्रह की दशा का प्रभाव है तो बालक वाणिज्य विषय में अपना ज्ञान प्राप्त करेगा तथा उत्तरोत्तर वाणिज्य का ज्ञान प्राप्त करने वाला विषय चार्टर्ड अकाउंटेंट अथवा व्यवसाय प्रबंधन का अध्ययन करेगा और उसमें सफलता भी हासिल करेगा। वाणी अथवा संगीत अथवा कलात्मक कार्यों के करने से संबंधित विषय भी अध्ययन कर सकता है।

मंगल अथवा शनि ग्रह यदि पंचम भाव पर स्थित हो दृष्टि हो अथवा पंचमेश के साथ संबंध रखता हो ऐसी स्थिति में जातक गणित, विज्ञान, तकनीकी ज्ञान, राजनीतिक अथवा न्यायिक ज्ञान से संबंधित विषयों का अध्ययन करता है एवं उसमें सफलता प्राप्त करता है सूर्य-मंगल, मंगल-बुध अथवा सूर्य, शुक्र बुध की पंचम भाव में स्थित हो अथवा पंचम भाव, द्वितीय भाव, दशम, एकादश भाव से संबंध हो तो वह व्यक्ति तकनीकी ज्ञान की तरफ प्रेरित होता है।

शुक्र ग्रह यदि पंचम भाव अथवा पंचमेश के साथ युति अथवा दृष्टि संबंध रखता है ऐसी स्थिति में जातक कला और सौंदर्य प्रधान सामग्री से संबंधित ज्ञान अर्जित करता है, बुध शुक्र की युति यदि द्वितीय भाव में जो कि वाणी भाव भी कहलाता है, में होने पर जातक वाली संबंधित कार्य करने की शिक्षा ग्रहण करता है, ऐसा जातक कानून की पढ़ाई भी कर सकता है। इसके साथ ही यदि राहु की स्थिति बलवान हो तो जातक सफल वकील बन सकता है। बुध, गुरु एवं शुक्र के बलवान होने वाले जातक को न्यायिक विषय पढ़ना भी हितकर हो सकता है।

उच्च स्वराशि का मंगल हो, सूर्य मंगल विद्या भाव में हो, शुक्र लाभ भाव, कर्म भाव अथवा भाग्य भाव से संबंध रखता हो बृहस्पति का चंद्रमा के साथ संबंध हो अथवा दृष्टि संबंध हो तो ऐसे जातक को चिकित्सा संबंधी शिक्षा ग्रहण करने में भी व्यक्ति का निखार आ सकता है।

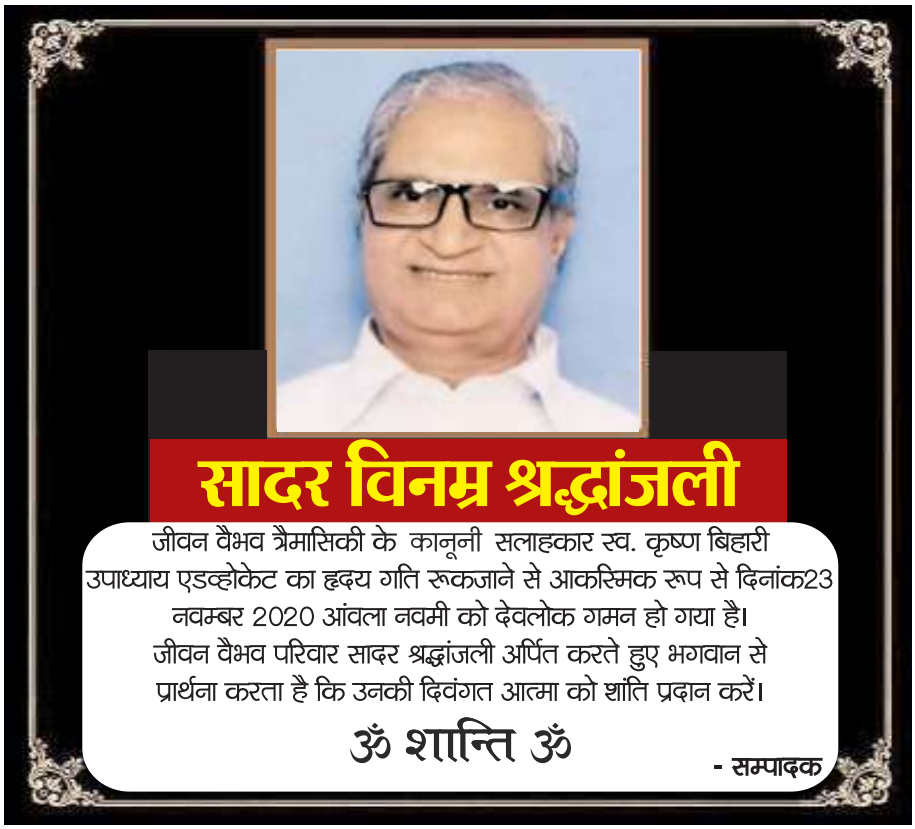

सादर विनम्र श्रद्धांजली

जीवन वैभव त्रैमासिकी के कानूनी सलाहकार स्व. कृष्ण बिहारी उपाध्याय एडव्होकेट का हृदय गति रूकजाने से आकस्मिक रूप से दिनांक23 नवम्बर 2020 आंवला नवमी को देवलोक गमन हो गया है। जीवन वैभव परिवार सादर श्रद्धांजली अर्पित करते हुए भगवान से प्रार्थना करता है कि उनकी दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करें।

ॐ शान्ति ॐ

- सम्पादक

फलित ज्योतिष में वर्षफल का महत्व

(ज्योतिष के अंतर्गत फलित ज्योतिष में वर्ष कुंडली पर भविष्य का कितना महत्व है इस बारे में आई ए एस आई ग्रुप के विद्वान पंडितों द्वारा अपने अपने विचार व्यक्त किए जिन्हें उनके नाम के अनुसार संकलित करते हुए पाठकों के लाभार्थ निम्नानुसार दिए जा रहे हैं यह उनके अपने स्वयं के विचार अनुभव के आधार पर दिए हैं जिन्हें ज्योतिष वर्ग के पाठक अपने अनुभव में लाकर अपनी प्रतिक्रिया से जरूर अवगत कराएं। ***(संपादक)***

संग्रह श्री एच एन राव

इकबाल योग - इकबाल योग का अर्थ प्रतिष्ठा, सम्मान से होता है. वर्ष कुण्डली में यदि सभी ग्रह केन्द्र भाव अर्थात 1,4,7,10 में या पणफर अर्थात 2,5,8,11 में स्थित हों तो इकबाल योग क अनिर्माण होता है. यह एक अच्छा तथा शुभ योग है कुण्डली में यह योग शुभता एवं कार्यसिद्धि का सूचक बनता है.

इन्दुवार योग - इंदुवार यो भाग्य में कमी को दर्शाता है. यदि वर्ष कुण्डली में सारे ग्रह अपोक्लिम अर्थात 3,6,9,12 भावों में हो तब इन्दुवार योग बनता है. इस भावों बैठे ग्रह क्षीणता युक्त होते हैं.

दुरुफ योग - कुण्डली में यदि लग्नेश तथा कार्येश 6,8,12 भावों में निर्बल अवस्था में स्थित हों तथा पाप ग्रहों से दृष्ट हों तब दुरुफ योग बनता है. यह अच्छा योग नहीं होता.

इत्थशाल योग - लग्नेश तथा कार्येश में दृष्टि संबंध हो. लग्नेश तथा कार्येश दीप्तांशों में हो. इत्थशाल होने के लिए दो ग्रहों का आपस में संबंध होता है. मंदगामी ग्रह के अंश अधिक हों तथा तीव्रगामी ग्रह के अंश कम हों. उपरोक्त शर्ते यदि पूरी हो रही हों तो इत्थशाल योग बनता है. यह योग भविष्य में होने वाला संबंध दिखाता है. भविष्य में कार्य सिद्धि के योग बनते हैं.

इशराफ योग - कुछ विद्वान इसे मुशरिफ योग भी कहते हैं. यह योग इत्थशाल योग के ठीक विपरीत होता है. परस्पर दो ग्रहों में दृष्टि हो, परन्तु शीघ्रगामी ग्रह के अधिक अंश हों तथा मंदगामी ग्रह के अंश कम हों. इस प्रकार शीघ्रगामी ग्रह आगे ही बढ़ता रहेगा और कार्य हानि होगी. मंदगामी ग्रह, तीव्रगामी ग्रह से एक अंश से अधिक पीछे हो तो इशराफ होगा.

कुत्थ योग -लग्नेश, कार्येश कुण्डली में बली हों. शुभ ग्रहों से दृष्ट हों, शुभ भावों में हों तथा शुभ संबंध में हों तो शुभ है. कार्य की सिद्धि हो सकती है.

दुफलि कुत्थ योग - कुण्डली में मंदगामी ग्रह बली हो. तीव्रगामी ग्रह निर्बल हो तो दुफलि कुत्थ योग बनता है. इस योग के बनने पर कार्य सिद्धि की संभावना अच्छी रहती है.

मणऊ योग - इत्थशाल में शामिल ग्रहों से मंगल तथा शनि का संबंध भी बन रहा हो तो मणऊ योग बनता है. इसमें कार्य की हानि हो होती है. कार्य नहीं बनता.

रद्द योग - वर्ष कुण्डली में यदि मंदगामी ग्रह निर्बल हो तथा तीव्रगामी ग्रह बली हो तब रद्द योग बनता है. इस योग के बनने से कार्य हानि होती है.

कम्बूल योग - वर्ष कुण्डली में लग्नेश तथा कार्येश का परस्पर इत्थशाल हो रहा हो. दोनों ग्रहों में से किसी एक ग्रह के साथ चन्द्रमा का इत्थशाल हो रहा हो तब कम्बूल योग बनता है. इस योग के बनने पर कार्यसिद्धि होती है.

गैरी कम्बूल योग - कुण्डली में लग्नेश तथा कार्येश का इत्थशाल, शून्यमार्गी चन्द्रमा से हो रहा हो और चन्द्रमा राशि अंत में भी स्थित हो तब यह गैरी कम्बूल योग बनता है. इस योग में कार्य सिद्धि विलम्ब से होती है.

खल्लासर योग - लग्नेश तथा कार्येश का संबंध होने से इत्थशाल है लेकिन शून्यमार्गी चन्द्रमा से कोई संबंध नहीं है तो यह खल्लासर योग बनता है. इस योग में कार्य सिद्धि नहीं होती है.

ताम्बीर योग - जब कुण्डली में लग्नेश तथा कार्येश का इत्थशाल नहीं होता है. एक राशि अंत में होता है और दूसरा ग्रह अगली राशि में आने पर किसी अन्य बली ग्रह से इत्थशाल करे तब यह ताम्बीर योग बनता है. इस योग में किसी अन्य की सहायता से कार्य की सिद्धि होती है.

नक्त योग - कुण्डली में लग्नेश तथा कार्येश में इत्थशाल नहीं है लेकिन कोई अन्य तीसरा तीव्रगामी ग्रह दोनों से इत्थशाल करता है तो नक्त योग बनता है. इस योग में किसी मध्यस्थ की सहायता से बात बन सकती है अर्थात कार्य सिद्धि हो सकती है.

यमया योग - कुण्डली में लग्नेश तथा कार्येश में इत्थशाल नहीं है लेकिन किसी अन्य मंदगामी ग्रह से दोनों का इत्थशाल हो तो यमया योग बनता है।इस योग में किसी बड़े-बुजुर्ग की सहायता लेकर व्यक्ति कार्य बना सकता है. किसी को मध्यस्थ बनाकर कार्य को सफल बनाया जा सकता है।

श्री राजेन्द्रप्रसाद जी

ग्रहों के 4 बल के पांचवा समय पति भी मिलकर पंचवर्गीय के आधार पर जो सबसे बलि ग्रह वह वर्षपति होता है। वर्षपति के लिए महत्वपूर्ण है कि जिस ग्रह की लग्न पर दृस्टि हो वही वर्ष पति ।अधिक ग्रह की वर्ष पर दृस्टि हो तो बलि ग्रह वर्षपति। किसी भी ग्रह की दृस्टि नही हो तो सबसे बलि ग्रह वर्षपति होता है। दृस्टि वर्ष फल के नियमो से। वर्षपति का प्रभाव वर्षभर मान्य।

ग्रहों का बल विश्वाबल के अनुसार-

जो क्रमानुसार गृहेश, हद्देश, द्रेष्कानेश, और नवमांशेष के आधार पर निकाला जाता है। त्रिराशिपति चक्र में मेष से मीन तक क्रमानुसार ले-- क्रम से लग्न के अनुसार सू, शु, श, शु, गुरु, चन्द्र, बु, मंगल, शनि,मंगल,गुरु और चन्द्र-त्रिराशिपति दिन में लग्न के जन्मानुसार।

रात्रि में क्रमशः--बु,चंद्र,बु,मंगल, सू, शु, श, शु, श, मंगल, गुरु,चंद्र लग्नानुसार त्रिराशिपति होंगे।

वर्ष में मुद्दा और पतयांशी दशाओ की प्रमुखता है। मुद्दा दशा पर ही विद्वानों को कम करते देखा गया है।पतयांशी का गणित अपेक्षाकृत कठिन होने के कारण। इसके अलावा वर्ष के षोड़स योग भी है जो वर्षफलित में काम आते है।यह सब ताजिक नीलकंठी में है।

श्रीमती मधु कुल्हारे

वर्ष कुंडली मे महत्त्वपूर्ण होते है जन्म लग्नेश, वर्ष लग्नेश,मुंथा-मुंथेश,और त्रिराशिपति। ये अगर शुभ स्थानों से सम्बन्ध रखे तो शुभ अन्यथा वर्ष कमजोर होता जाता है,इनकी शक्ति अनुसार। वर्ष ग्रहों की परस्पर 3 / 11 तथा 5/9 को शुभ माना गया है।बाकी अशुभ। जन्मऔर वर्ष कुंडली दोनों को देख कर दशा की शुभता या अशुभता फलित का मुख्य आधार होता है।

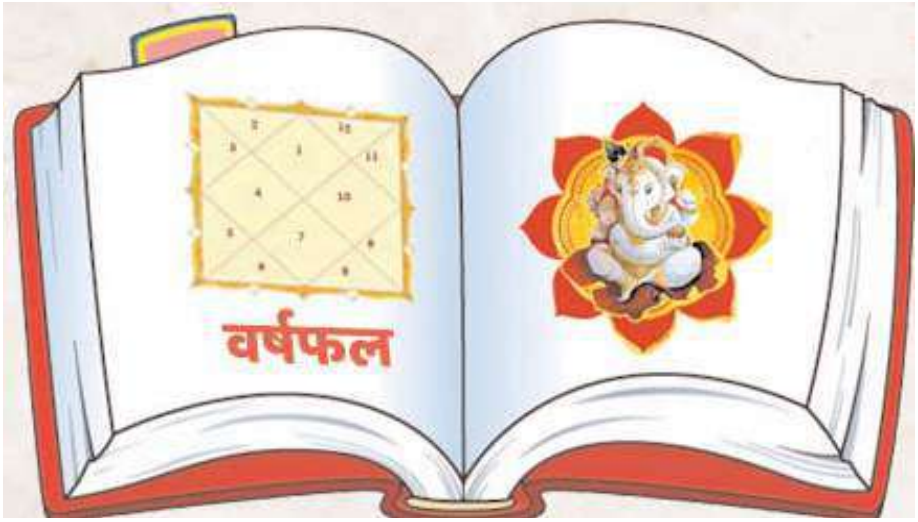

श्री नरेश सहगल

इसे निम्नलिखित स्टेप्स द्वारा उदाहरण सहित समझाने का प्रयास किया है ,जो कि निम्नानुसार है

मुंथा वर्ष कुंडली मे किसभाव मे आएगी ,कैसे गणना करें :-

स्टेप (1) ज़ातक ने आयु के कितने वर्ष पूरे किए (A)

स्टेप (2) लग्न कोन से नम्बर की राशि का है (B)

स्टेप (3) A + B = C

स्टेप (4) तीसरे स्टेप में प्राप्त संख्या को 12 से भाग कीजिये ,यानी C ÷ 12, *जो शेष बचे ,वो नम्बर नोट कीजिये

स्टेज (5) उक्त नम्बर की राशि वर्षकुंडली मे जिस भाव मे हो उंस भाव मे मुंथा कही जायेगी।और राशि स्वामी मुंथेश कहा जायेगा।

स्टेप (6) वर्ष कुंडली के गणना द्वारा निकले उंस भाव अनुसार मुंथा शुभ,अशुभ,न्यूट्रल कही जाएगी। जैसे

(1) 1,2,3,5 भाव मे मुंथा न्यूट्रल ।

(2) 4,6,7,8,12 भाव मे मुंथा अशुभ होगी।

(3) 9,10,11भाव मे मुंथा शुभ होगी।

प्रेक्टिकल- (1) यादव जी की जन्म तिथि 3/10/1982 है तो 38 वर्ष की आयु पूरी की।

(2) लग्न वृश्चिक यानी लग्न का राशि नम्बर 8 है।

(3) 38+8 = 46

(4) 46 ÷ 12

शेष बचे 10

यानी मकर राशि।

(5) ये 10 नम्बर की राशि अवधेश जी की लग्न कुंडली मे तो तीसरे भाव मेअवस्थित है परन्तु हम ये नहीं देखेंगे कि अवधेश जी के वर्ष 2020-2021 की मुंथा 3 भाव मे है,ये गलत कथन होगा। हम वर्षकुण्डली बनाकर ये देखेंगे कि मकर राशि की स्थिति वर्ष कुंडली मे किस भाव मे है ।अवधेश जी की वर्ष कुंडली मे मुंथा आने वाले वर्ष में 6 भाव मे है।क्योंकि 6 भाव मे मुंथा शुभ नहीं होती तो अवधेश जी को शनि से सम्बंधित वस्तु का तुला दान करना चाहिए।

(6) अर्थात स्टेप 5 द्वारा गणना किये गए राशि को वर्ष कुंडली मे जिस भाव में है उसके अनुसार मुंथा शुभ, अशुभ, न्यूट्रल कही जाएगी।क्योंकि इनकी वर्ष कुंडली मे 6 भाव मे मुंथा है तो ये अशुभ है। अतः इन्हें तुला दान की आवश्यकता है। कुंडली में मुंथा जिस राशि में हो, उस राशि का स्वामी ग्रह मुंथाधिपति कहलाता है। राशिपति- दिन में वर्ष प्रवेश होने की स्थिति में सूर्य जिस राशि में हो, उस राशि का स्वामी तथा रात्रि में वर्ष प्रवेश होने की स्थिति में चंद्र जिस राशि में हो, उस राशि का स्वामी राशिपति कहलाता है।

शील कुमार जी गुता

हर वर्ष में जब लग्न कुंडली मे सूर्य के ठीक अंश राशि कला विकला पर गोचर का सूर्य आते है उस समय बनाई गई कुंडली वर्ष कुंडली कहलाती है। इस कुंडली का प्रभाव पूरे वर्ष देखा जाता है। मुंथा जन्म समय लग्न में होती है हर वर्ष बदलने के साथ साथ एक राशि क्रम से आगे बढ़ाई जाती है। 13 वे वर्ष में पुनः लग्न में आ जाती है। जिस वर्ष जिस भाव मे रहती है उस भाव के फल जातक को मजबूती से मिलते है। जैसे सप्तमेश की राशि मे मुंथा विवाह करवा सकती है। दशमेश कि राशि मे मुंथा नौकरी दिलवा सकती है।

इसका उल्लेख प्राचीन काल मे रावण द्वारा रचित अरुण संहिता में दिया गया था। अरुण मतलब सूर्य ।मुगल शाशक इसे अरब ले गए फिर ये यहाँ लाल किताब के रूप में वापस आयी। लाल मतलब सूर्य। ताजिक नील कंठी एकमात्र वर्ष कुंडली का साहित्य उपलब्ध है। इसमे फ़ारसी शब्दो का भरपूर प्रयोग है। जैसे इथसाल इसराफ़ कुल 16 योग फलित के दिये गए है। मुंथा भी फ़ारसी शब्द है।

ज्योतिष की सभी विधाएं सटीक फलित के लिए जानी जाती है। जो विधा ज्यादा प्रयोग में आती है लोग उसी के बारे में जानते है अन्य विधाएं कम प्रयोग होने के कारण लोग भूल जाते है।

ज्योतिष में ताजिक ही ऐसी विधा है जिसको मुस्लिम्स प्रयोग करते थे। अब शायद समय के साथ कोई विद्वान मुश्किल से मिले।

पुनर्जन्म व अन्य जीवन की सच्चाई मेंभारतीय समाज के अलावा अन्य जाति वर्ग में विश्वास न होने के कारण उन्होंने फलित को तात्कालिक प्रयोग किया और फलित को केवल एक वर्ष तक सीमित किया। इसमे एक साल चलने वाली दशाएं एक वर्ष में बनने वाले योग व दृष्टि तात्कालिक मैत्री शत्रुता गुप्त मैत्री शत्रुता आदि का समावेश है।

इनमे षोडश योग प्रश्न कुंडली मे सटीक फल देते है। जैसे इथशाल योग में शीघ्र गामी ग्रह मंदगामी ग्रह आगे गोचर में जितने दिन बाद मिलने वाले हो उतने दिन बाद काम होने की संभावना होती है। इशराफ़ योग में यदि गोचर में ग्रह युति हो चुकी है तो कार्य भविष्य में होने ही संभावना नही होती।

घोषणा-पत्र

जीवन वैभव त्रैमासिक पत्रिका के स्वामित्व तथा अन्य बातों का ब्यौरा जो प्रतिवर्ष फरवरी के अंतिम दिन के बाद वाले अंक में प्रकाशित होता है।

प्रपत्र-चतुर्थ (देखें नियम-8)

1. प्रकाशन	– जीवन-वैभव 15-ए, महाराणा प्रताप नगर,जोन-1, प्रेस कॉम्पलेक्स, भोपाल।
2. प्रकाशन की अवधि	– त्रैमासिक
3. मुद्रक का नाम	– मेश प्रिन्ट्स
नागरिकता	– भारतीय
पता	– 105-ए, सेक्टर-एफ-गोविंदपुरा भोपाल-462023 (म.प्र.)
4. प्रकाशक का नाम	– प्रेमलता पाण्डेय स्वत्वाधिकारी, जीवन वैभव त्रैमासिकी
नागरिकता	– भारतीय
पता	– 15-ए, महाराणा प्रताप नगर, जोन–1, एम.पी. नगर, भोपाल
5. प्रधान संपादक का नाम	– श्रीमती प्रेमलता पाण्डेय
नागरिकता	– भारतीय
पता	– 15-ए, महाराणा प्रताप नगर, जोन–1, एम.पी. नगर, भोपाल
6. पत्र का स्वामित्व	– श्रीमती प्रेमलता पाण्डेय
नागरिकता	– भारतीय
निवास स्थान	– बी-14, सुरेन्द्र गार्डन, होशंगाबाद रोड, भोपाल

मैं प्रेमलता पाण्डेय, घोषणा करती हूँ, कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सही हैं।

प्रेमलता पाण्डेय

दिनाँकः 01-03-2021 प्रकाशक के हस्ताक्षर

फलित ज्योतिष में मोक्ष त्रिकोण

डॉ जया मिश्रा

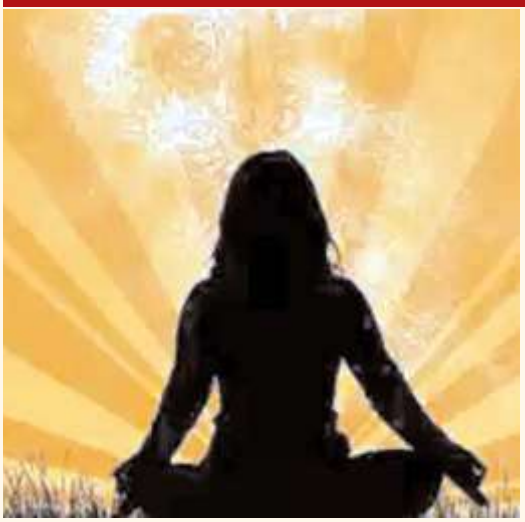

मोक्ष को अलग अलग शास्त्रों मे भिन्न भिन्न प्रकार से परिभाषित किया गया है जैसे- भगवान कृष्ण जी ने स्थिर बुद्धि को ही मोक्ष बताया है।

चार्वाक दर्शन मे चार्वाक कहते हैं कि जब तक जियो शान से जियो कर्जा लेकर घी पीयो अर्थात आत्मा, पुनर्जन्म कुछ नही होता जो भी है वर्तमान ही है अर्थात आनन्द को ही मोक्ष कहा है।*

जैनियों मे निर्वाण कहा गया है लेकिन बुद्ध आत्मा को स्वीकार नही करते निर्वाण का अर्थ है बुझ जाना पंच स्कन्द शून्य हो जाना निर्वाण जीवित रहते भी प्राप्त किया जा सकता है अपने कर्मो का अंत या शून्य कर देना निर्वाण होता है। जैनियों मे मोक्ष को कैवल्य कहा गया है।

सभी अवधारणा का मतलब मुक्ति(बार बार जन्म लेने से मुक्ति)दूसरा अर्थ ये तीनो इस जन्म मे भी प्राप्त हो सकती है।

समस्त दुखों से मुक्ति बार बार जन्म लेने से मुक्ति इसी को अलग अलग ग्रंथ मे भिन्न भिन्न प्रकार से बताया गया है।

जन्म कुंडली अध्ययन मे मोक्ष का अध्ययन करने के लिए कुंडली के मोक्ष त्रिकोण(4,8,12)भाव का अध्ययन किया जाता है।

जन्म कुंडली के बारह भावों मे मनुष्य के जीवन की शुरुआत और अंत दोनो ही है।कुंडली मे चार रहस्यात्मक त्रिकोण होते हैं इन्ही से मानव जीवन शुरु होता है और समाप्त भी होता है।

प्राचीन ग्रंथ मे चार वर्ण व्यवस्था, चार आश्रम, चार वेद और पुरुषार्थ के लिए चार त्रिकोण धर्म, अर्थ काम मोक्ष त्रिकोण की रचना की गई आज हमे मोक्ष त्रिकोण पर चर्चा करनी है।

सबसे पहले तो मोक्ष का अर्थ समझना होगा और मोक्ष पर सभी ज्ञानियों के मत मे भिन्नता है मोक्ष के टॉपिक पर कई दर्शनशास्त्र की रचना हो चुकी है, मोक्ष का अर्थ है मोक्ष अर्थात मोह माया का क्षय होना, सांसारिक बंधन मोहमाया से मुक्त होकर आत्मा का परमात्मा से मिलन ही मोक्ष है शरीर की यात्रा मृत्यु होने पर समाप्त हो जाती है परंतु आत्मा की यात्रा तब समाप्त होती है जब आत्मा अपने रचयिता उस परम पिता परमेश्वर मे लीन हो जाती है उसे ही मोक्ष कहते हैं।

जन्म कुंडली मे मोक्ष की यात्रा चतुर्थ भाव से शुरू होकर द्वादश भाव पर समाप्त हो जाती है।सबसे पहले हम देखते हैं कि 4,8,12 भाव जलीय राशियों का है और जलीय राशियों का संबंध जल से है हमारे शरीर मे लगभग 70 से 75 प्रतिशत जल है इसीलिए हमारा शरीर चंद्रमा से सबसे अधिक प्रभावित होता है चंद्र मन का और चतुर्थ भाव का कारक ग्रह है मन ही शरीर को चलाता है अब मन को चाहे भौतिकता की ओर ले जाएं चाहे अध्यात्म/मोक्ष की ओर ले जाएं ये मन पर डिपेंड करता है।

मोक्ष के कारक- ग्रह-चंद्र (मन), सूर्य(आत्मा), गुरु (आध्यात्म), केतु (आध्यात्म, दूसरी दुनिया अर्थात मोक्ष), शनि (वैराग्य,जब तक भौतिकता मोहमाया से वैराग्य नही होगा मोक्ष प्राप्ति संभव नही) जीव मे सूर्य आत्मा के रूप मे एंटर करता है और शनि मृत्यु के बाद कि यात्रा तय करता है शनि सूर्य एक दूसरे के पूरक हैं एक उजाला तो एक अंधेरा है अंधेरे मे उजाले की ओर ले जाने वाला शनि है। शनि के तीन नक्षत्र पुष्य, अनुराधा, उत्तरभाद्रपद जिसमे चतुर्थ भाव मे पुष्य नक्षत्र आता है अष्टम भाव मे अनुराधा नक्षत्र और द्वादश भाव मे उत्तरभाद्रपद नक्षत्र आता है अर्थात मोक्ष त्रिकोण के तीनों भाव मे शनि के नक्षत्र आते हैं और तीनों नक्षत्र के चरण इस प्रकार है-

प्रथम चरण का स्वामी सूर्य है जो अंतःकरण की यात्रा से प्रकाश की ओर की यात्रा करवाता है।

द्वितीय चरण का स्वामी बुध है जो कि जीवन मे क्या सीखा और बुद्धि विवेक के प्रयोग को बताता है।

तृतीय चरण के स्वामी शुक्र देवता बनते हैं जो कि जीवन के कारक ग्रह है बिना शुक्र जीवन संभव नही है।

चतुर्थ चरण के स्वामी बनते हैं मंगल जो कि शारीरिक ऊर्जा को बताते हैं।

चतुर्थ भाव मे शनि की युति चंद्र से होगी तो मन मे विरक्तता उदासीनता आएगी, अष्टम भाव मे अनुराधा नक्षत्र है अर्थात विरक्ति भक्ति के लेवल पर होगी यही से मूलाधार चक्र से सहस्त्रधार चक्र की यात्रा प्रारंभ होगी तत्पश्चात यही यात्रा बारहवें भाव मे जाकर समाप्त होती है यहां उत्तराभाद्रपद नक्षत्र मे गुरु के मिलन से व्यक्ति परम ज्ञान अर्थात मोक्ष की प्राप्ति करता है।

'अंगारक-दोष' के घातक परिणाम और सही उपाय.....

ज्योतिर्विद पं.कृपाराम उपाध्याय (भोपाल)

यदि जन्मकुंडली में मंगल और राहु एक साथ हो अर्थात कुंडली में मंगल राहु का योग हो तो उसे अंगारक योग कहते हैं । कई पहलुओं से ये दोष कालसर्पके समान अधिक कठिनाई के हालात पैदा कर सकता है।

मंगल राहु की युति से योग बन रहा हो तो सर्व प्रथम कुंडली के जिस भी भाव में यह योग बने उस भाव और जिन भावों पर राहु व मंगल की द्रष्टी हो उन भावों को भी पीड़ित कर देता है और उन भावों से नियंत्रित होने वाले पहलुओं मेंसफलता के लिए संघर्ष बने रहते हैं। अंगारक योग अर्थात ज्वलनशीलता की अधिकता , विघटनकारी , उग्र प्रवृत्ति कारक एवं बहुत अनिष्टकारी हो सकता है, इससे व्यक्ति के जीवन में निरंतर संबन्धितभावों के फल में विवाद, फसाद, तनाव, विखराव तथा अराजकता फैलाने की प्रवृत्ति बनती है।

आज हम आपको ये समझाते हैं कि द्वादश भावों में यह योग क्या-क्या नुकसान पहुंचा सकता है

कुंडली के 12 भाव में अंगारक योग से होने वाला नुकसानः-

1-प्रथम भाव में अंगारक योग होने से पेट व लीवर रोग, माथे पर चोट, अस्थिर मानसिकता, क्रूरता और निजी भावनाओं की असंतुष्टि देता है।

2-द्वितीय भाव में अंगारक योग होने से धन में उतार-चढ़ाव, आर्थिक तंगहाली, वाणी-दोष, कुटुम्बियों से विवाद व शक्की मिजाज बनाता है।

3-तृतीय भाव में अंगारक योग होने से भाई-बहनों-मित्रों से कटु संबंध, वटवारा, अति उत्साही, एवं नास्तिक छल-कपट से सफल होते है।

4-चतुर्थ भाव में अंगारक योग होने से माता को दुख, अशान्ती, क्लेश, मकान

में बाधाऐं व भूमि संबंधित विवाद होते हैं।

5-पंचम भाव में अंगारक योग होने से संतानहीनता, संतान से असंतुष्ट, नाजायज प्रेम संबंधों से परेशानी व जुए-सट्टे से लाभ भी हो सकता है।

6-छटम भाव में अंगारक योग होने से कर्जदार, ऋण लेकर उन्नति करने वाला, शत्रुहंता, व्यक्ति खूनी, उग्र परंतु डा. सर्जन भी बन सकता है।

7-सप्तम भाव में अंगारक योग होने से दुखी-विवादित वैवाहिक जीवन, नाजायज संबंध, हिंसक जीवन साथी, कामातुर, विधवा या विधुर होना परंतु सांझेदारी में धोका भी मिल सकता है।

8-अष्टम भाव में अंगारक योग होने से आरोप-अपमान, धन-हानि, घुटनों से नीचे दर्द रहना, चोटें लगना, सड़क दुर्घटनाऐं के प्रबल योग बनते हैं। परंतु पैत्रिक संपती मिलने और लुटाने के प्रवल योग भी बनते हैं।

9-नवम भाव में अंगारक योग होने से उच्च शिक्षा में बाधाऐ, भाग्यहीन, वहमी, रूढ़ीवादी व तंत्रमंत्र में लिप्त, पित्र-श्रापित, संतान से पीडित होते हैं। तथा बहुत ही परेशानियों का सामना करते हैं।

10-दशम भाव में अंगारक योग होने से परंपराओं को तोडने वाले, पित्र संम्पत्ति से बंचित, माता-पिता की भावनाओं को आहत करने वाले परंतु ऐसे व्यक्ति अति कर्मठ, अधिकारी, मेहनतकश, स्पोर्टमेन व आत्यधिक सफल हो सकते है।

11-एकादश भाव में अंगारक योग होने से, गर्भपात, संतान में विकलांगता, अनैतिक आय, व्यक्ति चोर, कपटी धोखेबाज़ होते हैं। परंतु प्रापर्टी से लाभ हो सकता है।

12-द्वादश भाव में अंगारक योग होने से अपराधी प्रवृत्ति, वलात्कारी, जबरन हक जमाने वाले और अहंकारी हो सकते हैं। परंतु आयात-निर्यात, विदेशी व्यापार एवं रिश्वतख़ोरी से लाभ।

इस योग के सरल उपाय

1. यदि इससे संबंधित किसी भी प्रकार की परेशानियां जीवन में बार-बार आ रहीं हों तो... इस अंगारक-दोष की उज्जैन मंगलनाथ मंदिर में जाकर विधिवत वैदिक विधी से शान्ति., अगारक स्त्रोत अनुष्ठान, और भात-पूजा आदि करवा देनी चाहिये।। निश्चित ही लाभ होगा।।
2. अपने घर पर भगवान शिव की पूजा निमित्त करना चाहिए अथवा मंदिर पर जाकर शिवजी को जल चढ़ाना चाहिए।

3 मंगलवार को लाल वस्तु का खाद्य पदार्थ वस्त्र फल मिठाई आदि का दान भी करते रहना चाहिए।

शक्ती उपासक
पं.कृपाराम उपाध्याय
ज्योतिर्विद, भोपाल म.प्र.

फलित ज्योतिष के अंतर्गत अपने आप को कैसे जाने

(जन्म पत्रिका के अनुसार अपने आप को कैसे पहचाने इसके बारे में फलित ज्योतिष ग्रुप जोकि इंटेलेक्चुअल एस्ट्रोलॉजिकल सोसाइटी के विद्वानों द्वारा संचालित है विद्वानों ने अपने अपने विचार व्यक्त किए जो संकलित कर निम्नानुसार प्रस्तुत है...

हेमचन्द्र पाण्डेय सम्पादक

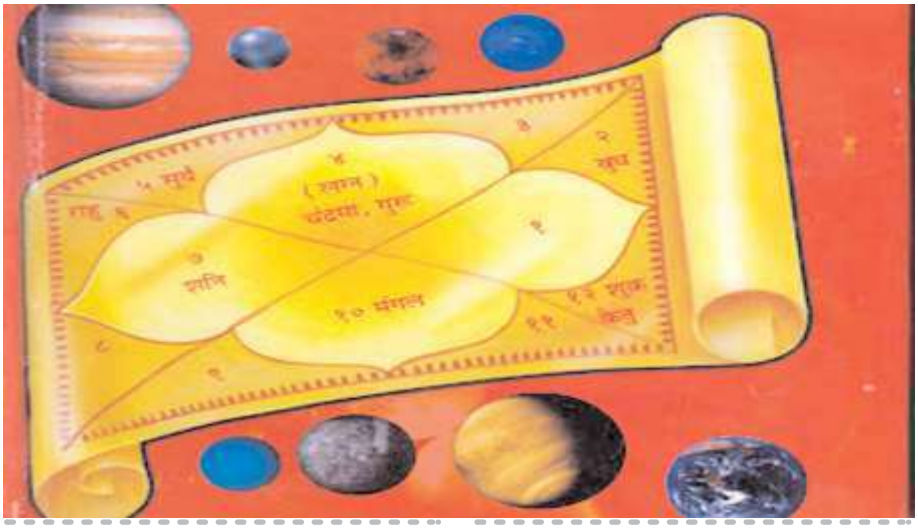

राजेन्द्र प्रसाद रामावत

जब व्यक्ति की सांसारिक इच्छाएं पूरी हो जाती हैं तभी वह अपनी ओर केंद्रित होता है कि मैं कौन हूं मेरा जीवन में उद्देश्य क्या है वही व्यक्ति इसऔर बढ़ता है जिसकी सांसारिक इछाये पूर्ण हो गई हो जब व्यक्ति को सब मिल जाता है तभी उससे विरक्ति का भाव बढ़ता है और अपनी ओर केंद्रित होता है कि आखिर कौन हू में और मेरा जीवन में उद्देश्य क्या है।

इच्छाओं का भाव एकादश भाव बलवान होना चाहिए पाप प्रभाव में नहीं होना चाहिए संवेदनशील होना चाहिए करुणा और भावुकता होनी चाहिए तभी व्यक्ति अपने को खोजेगा इसके लिए चंद्रमा लग्न लग्नेश चतुर्थ भाव को देखना आवश्यक चंद्रमा व्यक्ति के मनोविज्ञान और भावनात्मक स्थिति का प्रतिनिधित्व करता है। सूर्य ग्रह आत्मा की शक्ति और आत्मा के हित का प्रतिनिधित्व करता है। यह उन अनुभवों का भी प्रतिनिधित्व करता है जो मानव शरीर लेने से पहले आत्मा ने अनुभव किए थे। यह वर्तमान जन्म में आत्मा के अद्वितीय कार्य या उद्देश्य को भी दर्शाता है। केतु पिछले जन्मों से व्यक्ति द्वारा अर्जित आध्यात्मिक ज्ञान का प्रतिनिधित्व करता है। गुरु का बली और शुभ ग्रहों से दृष्ट होना आवश्यक लग्न भाव, लग्नेश, पंचम भाव एवं पंचमेश की स्थितियों को देखना चाहिएजबशुभ ग्रह का प्रभाव अधिक हो अधिकतर ग्रह उच्च राशि, स्वग्रही, मूलत्रिकोण राशि, केंद्र और त्रिकोण भाव में स्थित होते है। पंचम भाव पूर्व जन्म के पुण्य कर्मों का भाव है। जब पंचम भाव बली होगा तब ही व्यक्ति इस और बढ़ेगा पढ़ते,सुनते और ज्ञानियों द्वारा इतना पता चलता है कि यह समझ सिर्फ उच्च स्तर के योगियों के ही पकड़ में आता है।जिन्होंने पतञ्जलि मुनि को आत्मसात किया हो।सांसारिक लोगो के लिये पकड़ से बाहर। ज्योतिष में लग्न,पंचम व नवम वर्तमान,भूत और भविष्य काल का सूचक। क्या करने आए?लग्न को देखना पड़ेगा।वह कहा बैठा है।किसके से युति और किसकी दृस्टि और नक्षत्र में। फिर मानसिक शक्ति और आत्मा की प्रवृत्ति किस और ले जायेगी। नक्षत्रो के माध्यम से कुछ विशेषज्ञ यह देखते है कि यह किस लोक से आया है और आगे कहा जाने की तैयारी है। लग्नेश को सहयोग देने के लिए 4/5 भाव चन्द्र और सूर्य का सहयोग विशेष बाकी ग्रह भी सहायक लेकिन कोई खेल बनाने वाला तो कोई बिगाड़ने होता है। लग्नेश 6 भाव मे शनि जैसे ग्रह के साथ हो तो समझो जीवन भर चाकरी या सेवा करते रहो।आशा पूरी हो न हो मेहनत करते रहो। नक्षत्रो के साथ योगों ,करणो और तिथियों को भी देख सकते है।

प्रीति सिन्हा

अपने बारे मे जानने की जिज्ञासा एक तो छीछली होती है जिसमे व्यक्ति सिर्फ अपने बारे में जानने में उत्सुक रहता है वह सिर्फ अपनी तारीफ लोगो से सुनना चाहता है। इसमे कही न कही लग्न भाव का ह्रास हुआ रहता है, यानि कमजोर लग्न। इसलिए व्यक्ति झूठे मुखौटे में जीता रहता है। दूसराउत्तम विचार यह कि व्यक्ति कौन है?उसका इस धरती पर आने का प्रयोजन क्या है? वह संसार मे कौन सा कार्य करने आया है। वह स्वयं में ढूढना चाहता है और उस कार्य को करके अपने जीवन को सार्थक बनाना चाहता है। अतः इसमे लग्न और अष्टम भाव का महत्व समझ मे आता है। जहां गड्ढा है वही तो खुदाई की स्कोप बनती है। और वही से व्यक्ति गहरे पैठ कर सकता है। यदि ग्रहों की बात करे तो इसमे प्रधान ग्रह राहु और शनि लगते है जो यह एहसास करवाते है की आपका इस जन्म का प्रयोजन क्या है। यदि कुंडली मे गुरु बुध ,राहु और शनि की स्थिति अच्छी हो तब। ये जीवन का स्ट्रीम तय करते है जिससे व्यक्ति को अपने बारे में समझ मे आता है।

जया पाण्डेय (मिश्रा)

आत्म अवलोकन से तात्पर्य है स्वयं के अच्छे बुरे विचारों का मनन करना या स्वयं का निरीक्षण करना, मानव शरीर परमात्मा की सर्वोत्तम कृति है।मनुष्य के पास ही वह शक्ति है जिससे वह आत्म अवलोकन कर स्वयं को जान सकता है कि उसका इस मृत्युलोक मे जन्म लेने का उद्देश्य क्या है स्वयं को जानने के लिये हृदय की शुध्दता सर्वोपरि है अर्थात जन्मकुंडली का चतुर्थ भाव क्योंकि चतुर्थ भाव ही मानसिक शांति का भाव है और इसी भाव से सर्वोप्रथम स्वयं को जानने का विचार आता है, अगला भाव है पंचम भाव जो कि हमारे पूर्व जन्म के कर्मो का और ज्ञान का भाव है पंचम भाव स्वयं को जानने के लिए प्रेरित करेगा अगला भाव जो कि सबसे महत्वपूर्ण है अष्टम भाव जो कि डेप्थ नॉलेज का भाव है ध्यान का भाव है समाधि का भाव समाधि का अर्थ है स्वयं को जानने के लिए ध्यान मे लीन हो जाना, जब तक व्यक्ति इस बाहरी दुनिया को देखता है बाहरी सुंदरता और भौतिकता को देखता है तब तक यह दुनिया उसे आकर्षित करती है लेकिन जब मनुष्य आँखें बंद करके ध्यान करता है तो वो अपने भीतर की दुनिया को देखता है और जब व्यक्ति अपनी भीतरी दुनिया को देखता है तो उसे भीतर की दुनिया इतनी खूबसूरत लगती है कि वह आँखें खोलना ही नही चाहता इसीलिए हमारे ऋषि मुनि सदैव ध्यान मे लीन रहते थे।स्वयं को जानने की यात्रा जहाँ पूर्ण होती है वह है द्वादश भाव इसीलिए द्वादश भाव का कारकत्व शनि देव और गुरु की मीन राशि को दिया गया है यहाँ पर मनुष्य संसार से विरक्त होकर परमेश्वर से मिलने के द्वार पर पहुंच जाता है लग्न पंचम अष्टम द्वादश भाव स्वयं को जानने के लिए महत्वपूर्ण भाव है इसमे गुरु राहू शनि केतु चंद्र सूर्य की और ग्रह की महादशा अंतर्दशा गोचर की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।स्वयं को जानकर ही इस संसार को जाना जा सकता है जिस दिन मनुष्य स्वयं को जानने में सफल हो जाएगा उसके मन की सभी व्याकुलताएँ समाप्त हो जाएगी।

डॉ हेमचन्द्र पाण्डेय

ज्योतिष के माध्यम से कैसे अपने आपको जाने इसके लिए ज्योतिष में कौन से ग्रह हैं और भाव हैं । प्राचीन काल से ऋषि विद्वान मनीषियों ने इस ज्योतिष विषय का आरंभ किया है निश्चित रूप से सबसे पहले यही देखा होगा जो आदमी अपने आप को नहीं पहचान सके वह दूसरों को और दूसरों के दर्द दुख दर्द को कैसे पहचानेगा ,यह अभी बड़ा विचारणीय विषय है। महत्त्वपूर्ण बात यह है कि मैं को पहचानने के लिए *तूको जानना पड़ेगा याने अपने अहं का त्याग करके व्यक्ति यदि समान भाव से सभी को महत्व देगा। अपने अलावा अन्य की भावनाओं का भी क़द्र करके संतुष्ट रखने का प्रयास करेगा। .किसी कवि ने स्पष्ट रूपसे अंह को दूर करने के लिए निम्न विचार व्यक्त किए है

तू तू करता तू भया,
तुझ में रही ना हुय।
वारी तेरे नाम का,
जित देखूं तित तूय।।

यहां अपने आप को पहचानने के लिए सूर्य और चंद्र दोनों का ही महत्व आता है सूर्य आत्मा का कारक और चंद्रमा मन का कारक होने से आत्म शुद्धि और मनसे शुद्धि वाला व्यक्ति ही अलग पहचान वाला होता है, ऐसा व्यक्ति ही उपरोक्त वर्णित काव्य पंक्ति को पुष्ट करता है।

इस विषयपर धर्म त्रिकोण याने अग्नि तत्व की राशियां और उनके स्वामी और मोक्ष त्रिकोण याने जल तत्व की राशियां और इन राशियों के स्वामी का संबंध यदि मूलत्रिकोण और अष्टम भाव (मोक्ष त्रिकोण)से हो तो निश्चित रूप से वह व्यक्ति अपने आप को पहचानेगा कि उसे क्या करना है और उसका जन्म किस लिए हुआ है। दूसरी प्रकार के व्यक्ति वायु तत्व और पृथ्वी तत्व की राशियों का संबंध मूलत्रिकोण या मोक्ष त्रिकोण केभावों से होता है तो निश्चित रूप से वह व्यक्ति अपने आपके महत्व को ज्यादा जाहिर करता है कि अगर मैं नहीं रहूं कुछ नहीं हो सकता। सब काम ठप्प पड़ जाएगा ।

कोई शादी विवाह धार्मिक मांगलिक या सामाजिक आयोजन अगर होता है तो ऐसे आयोजन में बिगाड़ करने वाले व्यक्ति भी ऐसे ही होते हैं कि मेरे बिना आयोजन कैसे हो सकता है मुझसे परामर्श या मेरी सलाह आवश्यक है।। वायु तत्वऔर पृथ्वी तत्व की राशियां के स्वामी यदि पाप ग्रह या क्रूर ग्रह के साथ हो अथवा राहु से युक्त/दृष्ट हो तो निश्चित रूप से व्यक्ति हवाबाज होकर आयोजन को भी क्षति पहुंचा सकता है जबकि केतु ऐसा नहीं करता वह गहराई से सोचता है गुरु के साथ रहकर तो वह अत्यंत सेवाभावी होकर रास्ता निकालने की कोशिश करता है। उसमें हुय याने अहम तत्व नहीं होता गुरु तथा बुध प्रधान व्यक्तित्व सदैव सहयोग के क्षेत्र में बने रहते हैं उनमें लघुता नहीं होती ज्ञानवान होते हैं उस ज्ञान का अहम् नहीं होता

हमारे भारतीय ज्योतिष में इसीलिए चंद्र को प्रधानता दी है। और सूर्य तथा चंद्रमा के बीच की दूरी से तिथियों का निर्धारण करके जब मन विपरीत स्थिति में होता है उसे संतुलित करने के लिए पर्व त्योहार वृक्षों की पूजन आदि नियत किए गए जिससे कि व्यक्ति अपने आप को पहचाने और अपने जीवन को परमार्थ की ओर ले जाने का प्रयास करें ज्योतिष शास्त्र भी वेदों का अंग है और इस शास्त्र से जनसेवा का विधान हमारे भारतीय ज्योतिष में किया गया है यदि कोई ग्रह व्यक्ति में अधिक अहम वादी हो तो उसका निराकरण के लिए उपाय भी बताए गए हैं अतः अपने आप कोअहम से दूर रहा जासके।काल पुरुष की मूल त्रिकोण (धर्मत्रिकोण) में मंगल ,सूर्य और गुरु की तथा मोक्ष त्रिकोण में क्रमशं चन्द्र मंगल और गुरु की प्रधानता होती है

इसमें न्याय की भूमिका सूर्य पुत्र शनि की और ज्ञान तथा बुद्धि की प्रधानता चन्द्र पुत्र बुध की ही होती है।

बड़े-बड़े महापुरुषों की जन्म कुंडली में अष्टम और द्वादश भाव स्व क्षेत्री उच्च केअथवा शुभ ग्रहों के दृष्टि में होने से वे अपने आपको जीवन के आरंभिक काल में ही पहचान जाते हैं और तदनुसार अपने कार्य को करने में संलग्न हो कर अपने आपको धन्य कर गए हैं।

जन्म कुण्डली में अष्टम भाव की सकारात्मक भूमिका

अरूण मित्तल कोटा

अष्टम भाव को मृत्यु भाव का नाम दिया हुआ है व यह प्रमुख त्रिक भाव 6,8,12 में भी सर्वाधिक खराब माना जाता है।कुण्डली में सर्वाधिक खोफ या भय भी यही पैदा करता है।

साथ ही जीवन पर नकारात्मक प्रभाव जैसे दुर्घटना,चोट, चोरी, नुकसान, अपकीर्ति, अपमान आदि का अध्यन भी इसी भाव से किया जाता है। परन्तु साथ ही वसीयत,ग्रेच्यूटी,बीमा, बिना मेहनत के प्राप्त धन जैसे ब्याज,किराया,लॉटरी गड़ा हुआ या छुपा हुआ धन भी हमे यही अष्टम भाव ही दिलाने में सहायक सिद्ध होता है।

आज मैं बात कर रहा हूँ अष्टम भाव का शिक्षा व अनुसन्धान,रिसर्च में महत्व पर। अष्टम भाव का शिक्षा से बहुत नजदीक का रिश्ता है यह पढ़ने में शायद आप को अजीब सा लगे। परन्तु यह सत्य है परन्तु कैसे ?

अष्टम भाव गूढ़ रहस्यवक भाव है इससे तो आप सभी अवगत है।साथ ही यह पूर्व जन्मों के अध्यन द्वारा या अनुभव द्वारा संचित स्मृति का भाव भी है। अर्थात हमारे सबकोंशियस माइण्ड(अवचेतन मन) में छुपी हुई पूर्व जन्मों के अध्ययन व अनुभवों की याददाश्त भी हम यहीं से देखते हैं।

आप जो ज्योतिष के क्षेत्र में है उन्हें इसका ज्यादा अनुभव होगा की आपके सज्ञान में आई कितनी ही कुंडलियों में अष्टम भाव में तीन या तीन से अधिक ग्रह उस जातक को उसके देश मे,शहर में,ग्राम में,समाज मे,परिवार में अन्य जनों से भिन्न बनाता है, उच्चता दिलाता है।

यह निर्भर करता है कि कौनसे से ग्रह यहां स्थित है। कला व वाणी से सम्बन्ध रखने वाले ग्रह जातक को अच्छा एक्टर व गायक बना सकता है जैसे अमिताभ बच्चन जी। व ज्ञान, शिक्षा व आध्यात्म से सम्बंधित ग्रह जातक को आध्यात्मिक गुरु,मार्गदर्शक बना सकता है। जैसे आचार्य रजनीश(ओशो)

पंचम भाव का सम्बन्ध शिक्षा से है तो नवम भाव का सम्बन्ध उच्च शिक्षा से है। परन्तु अष्टम भाव की भूमिका यहाँ अर्जित शिक्षा,ज्ञान की बाल की खाल निकालने की होती है। अर्थात अनुसन्धान, रिसर्च, पीएचडी करने में।

क्योकि इस जन्म में प्राप की हुई शिक्षा को पूर्व संचित ज्ञान के माध्यम से सबकोंशियस माईंड द्वारा,माध्यम के द्वारा अनुसन्धान में सहायता मिलती है।उन्हें इसमे आनन्द आता है।और नित नई जानकारी खोजने में लगे रहते है एवं सफलता प्राप्त करते हैं।

जितने भी डॉ, वैज्ञानिक,रिसर्चकर्ता है उन सभी का अष्टम भाव बहुत मजबूत होता है। बुध का सम्बन्ध शिक्षा से है तो समझ या ज्ञान का सम्बन्ध बृहस्पति ग्रह से है।केतु बिना सर वाला बिना दिमाग वाला केवल धड़ वाला ग्रह है अतः यह जिस ग्रह के साथ लग जाता है उसमें निरन्तरता प्रदान करता है।

जब बुध व गुरु का सम्बन्ध स्थिति, दृष्टि, युति, नक्षत्र, राशि आदि के माध्यम से अष्टम भाव से बन जाता है तो जातक का रुझान अनुसन्धान,ज्ञान की नई खोज में लग जाता है।

पंचम भाव को पूर्व जन्म का भाव भी माना जाता है। अतः जब पंचमेश का अष्टम से सम्बन्ध बनता है तो जातक गूढ़ ज्ञान की ओर आकर्षित होता है।

ऐसे तो अष्टम भाव नकारात्मक भाव होने से शिक्षा में अवरोध पैदा करता है परन्तु यह पंचम का चतुर्थ भाव भी है अर्थात पंचम का सुख भाव अतः यह पाप ग्रहों के प्रभाव में नही हो तो यह शिक्षा में सहायक सिद्ध होता है।

जरूरी नहीं कि जातक उच्च शिक्षित हो तभी यह भाव अनुसन्धान में सहायक सिद्ध होगा। जातक व्यापारी,उद्योगपति हो सकता है,मेकेनिक या कामगार हो सकता है जो इसी अष्टम भाव की मजबूती से अपने व्यापार,फेक्ट्री,कार्य स्थल में नए नए प्रयोग कर नित नई सफलता प्राप्त कर सकता है। अतः आप जब भी अष्टम भाव का कुण्डली में अध्ययन करें तो इसे सिर्फ नकारात्मक ही न देख कर इसके सकारात्मक पहलू पर भी विशेष ध्यान देवें।

घरों में बगीचे हेतु वास्तु

आशुतोष पाण्डेय

घर में बगीचा किस दिशा में होना चाहिए, पेड़-पौधे किस दिशा व स्थान पर होना चाहिए, लगाए जाने वाले पौधे किस प्रकृति के हों, आदि के बारे में वास्तु में पर्याप्त दिशा-निर्देश हैं।

बढ़ते प्रदूषण और हवा में घुलते जहर के साथ प्राकृतिक सौंदर्य के प्रति बढ़ते प्रेम के कारण हर व्यक्ति चाहता है कि 'अपने घर' के साथ एक सुंदर-सा बगीचा भी हो। इससे शुद्ध हवा तो मिलती है, घर के आसपास का वातावरण भी खुशनुमा हो जाता है। लेकिन कई बार बगीचे और पेड़-पौधों की गलत दिशा व गलत प्रकृति के कारण उस घर के निवासियों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। वास्तुशास्त्र में दिए निर्देशों के अनुसार घर में बगीचे का निर्माण किया जाए तो कई मानसिक व शारीरिक परेशानियों से बचा जा सकता है।

वास्तु के अनुसार बगीचे के लिए उत्तम दिशा उत्तर और पश्चिम है। सबसे बड़ी बात है कि बगीचा घर, दफ्तर या कारखाने की हद में होना चाहिए। दक्षिण-पूर्व और दक्षिण पश्चिम दिशा बगीचे के लिए वास्तु की दृष्टि से उचित नहीं है। यदि अपार्टमेंट या फ्लैट है तो इनके उत्तर या पश्चिम में पेड़ पौधे लगाना चाहिए घर। के मुख्य द्वार के एकदम सामने पेड़ पौधे नहीं लगाना चाहिए। बगीचे में लगे हुए सभी वृक्षों और पौधों की संख्या सम होना चाहिए।

घर में किस प्रकृति का पौधा रोपण किस दिशा में करना चाहिए इस हेतु कुछ वास्तु निर्देश

वास्तु अनुसार घर में तुलसी का पौधा जरूर होना चाहिए। मकान के पूर्व या उत्तर पूर्व (ईशान कोण) या उत्तर दिशा में तुलसी का पौधा लगाएं तो या धनात्मक प्रभाव डालता है।

1. ताड़, पीपल, नीम व बिल्व के पौधे उत्तर या पश्चिम दिशा में बोएं जाए, तो घर में समृद्धि आती है।

2. कनकचंपा उत्तर दिशा में लगाने से धन व सुख की प्राप्ति होती है।

3. दक्षिण-पूर्व (आग्नेय कोण) व दक्षिण पश्चिम (नैऋत्य कोण) में बगीचा होने से घर में तनाव बढ़ता है इसलिए इन दिशाओं में बगीचा ना लगाए।

4. लंबे या बड़े वृक्ष पूर्व या उत्तर दिशा में नहीं होना चाहिए इससे सूर्य की रोशनी पर्याप्त मात्रा में नहीं आती।

5. पलाश, कंचन, अर्जुन और करंज के पेड़ घर की परिधि में नहीं होना चाहिए यदि यह पहले से ही मौजूद हो तो अशोक सुदर्शन या निराली का वृक्ष लगाकर संतुलन बनाना चाहिए।

6. घर की सीमा में कांटेदार पौधे व वृक्ष नहीं होना चाहिए। गुलाब के पौधों को छोड़कर अन्य कांटेदार पौधे ऋण आत्मक उर्जा उत्सर्जित करते हैं। ऐसे पौधे तनाव व संबंध में टकराव पैदा करते हैं और शत्रुता का भय रहता है।

7. बेल व लता आदि कंपाउंड की दीवार का सहारा ना लिए हो इनके लिए स्वतंत्र सहारा होना चाहिए।

8. बगीचे में फव्वारा या जलकुंड केंद्र में नहीं होना चाहिए, गलत जगह बने होने पर मानसिक तनाव पैदा करते हैं इसके लिए अनुसार उत्तम दिशा उत्तर पूर्व (ईशान कोण) है कृतिम चरणों पर भी यह नियम लागू होता है।

9. भारी व बड़ी पत्थर की मूर्तियां दक्षिण पश्चिम (नैऋत्य) दक्षिण या पश्चिम दिशा में होनी चाहिए।

10. घर के बगीचे में पेड़ इस प्रकार लगानी चाहिए कि उनकी छाया घर पर न पड़े। इससे घर में निद्रा की अधिकता होकर गृहवासियों तपेदिक, सायटिका आदि रोग हो सकते हैं।

11. वास्तु में पेड़ काटने से संबंधित दिशा-निर्देश है इसके अनुसार अशुभ पेड़ भादो माह में ही काटे जाने चाहिए। जड़ सहित काटने से 1 दिन पूर्व पेड़ की पूजा कर नैवेद्य चढ़ाकर नमस्कार करना चाहिए। इसके बाद उसी स्थान पर 3 महीने के भीतर दूसरा पेड़ लगाने का संकल्प लेना चाहिए। इसके दूसरे दिन पेड़ को उत्तर पूर्व दिशा से काटना आरंभ करना चाहिए यह पेड़ कटने के बाद पूर्व या उत्तर दिशा में ही गिरना चाहिए इससे धन-धान्य व संपन्नता प्राप्त होती है।

जन्म कुण्डली और दांतों की बनावट

जयराज गुप्ता, कोटा (राजस्थान)

मुख की शोभा आँख, नाक, कान और दाँत से होती है। दाँत भोजन को चबाने में सहायक हैं। दाँतों को मजबूत और सुन्दर बनाने के लिए नित नये मंजन और पेस्ट का विज्ञापन पत्र-पत्रिकाओं व टीवी पर प्रदर्शित होता रहता है।

मनुष्य के दाँत कई प्रकार से हो सकते हैं (1) विरुप दाँत अर्थात् टेड़े-मेड़े (2) ऊँचे दाँत (3) टूटे दाँत (4) समान दाँत। समान और चमकीले दाँत सबसे सुन्दर माने जाते हैं। ऊँचे दाँत को दंतुर भी कहा जाता है। यह कहा जाता है कि ऊँचे दाँत वाला भाग्यशाली होता है। इसके सम्बन्ध में यह श्लोक प्रचलित है :-

क्वचित काणा साधो,
क्वचित खल्वाट निर्धनः।
क्वचित दांताद्यो मूर्खः,
क्वचित गानवति सतीः।।

अर्थात् काणों में कोई-कोई ही साधु (सज्जन) होता है, खल्वाट (गंजा) कोई-कोई ही निर्धन होता है, ऊँचे दांत वाला कोई-कोई ही मूर्ख होता है और गणिका कोई-कोई ही सती होती है।

होरा ग्रंथों में ऊँचे दाँत के कई योग हैं जैसे बृहज्जातक के अध्याय 23 के श्लोक 5 में लिखा है कि ''मेष, वृष और धनु लग्न हो और उसको पाप ग्रह देखे तो दाँत विरूप हों।'' अन्य ग्रंथ में लिखा है कि दूसरे घर में राहु होने से पुरुष ऊँचे दाँत वाला होगा। हंसराज कपिल की पुस्तक ''ज्योतिष नाड़ी'' के श्लोक 34 में लिखा है कि ''मंगल क्षेत्री लग्न में राहु हो या मंगल की राशि मंगल के नवांश में स्थित लग्नेश, राहु से इत्थशाली हो अथवा मंगल ही लग्नेश होकर राहु से इत्थशाल करता हो तो जातक ऊँचे दाँत वाला हो।'' जैमिनी सूत्र के अनुसार ''उप पद (सम लग्न में द्वादश भाव व विषम लग्न में द्वितीयभाव) से सप्तम स्थान का स्वामी ग्रह जहाँ हो उससे द्वितीय स्थान में राहु स्थित हो तो मनुष्य बड़े दाँतों वला व दाढ़ों वाला होता है।''

द्वितीय भाव से दाँत का सम्बन्ध भी देखा जाता है। अतः द्वितीय भाव में यदि पाप ग्रह हो तो जातक के दाँत

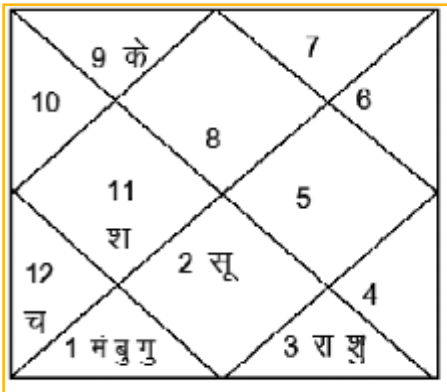

(1)

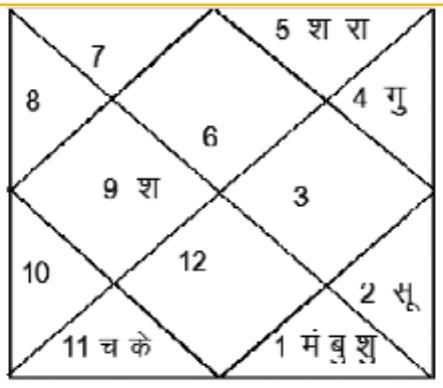

(2)

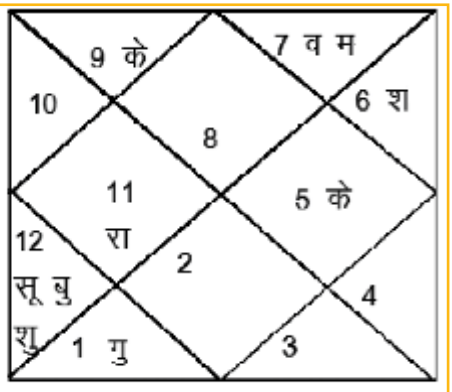

(3)

खराब होंगे, दाँत में पीड़ा रहेगी। द्वितीयेश यदि त्रिक भाव में हो या त्रिकेश से सम्बन्ध हो तथा उस पर पाप ग्रहों का दवाब या पाप ग्रहों से सम्बन्ध हो तो जातक ऊँचे दाँत वाला होता है।

यह निम्नलिसखित कुण्डलियों से विश्लेषण का प्रयास है।

कुण्डली सं. प्रथम में द्वितीय भाव में पाप ग्रह केतु है, द्वितीयेश त्रिक में त्रिकेश मंगल और बुध के साथ है तथा पाप ग्रह शनि की दृष्टि में है। अतः उपरोक्त योग घटित है। जातिका ऊँचे दाँत की है तथा दाँत में पीड़ा रहती है।

कुण्डली सं. 2 में द्वितीयेश त्रिक में त्रिकेश मंगल के साथ है तथा द्वितीयभाव पर पाप ग्रह शनि की दृष्टि है। अतः उपरोक्त योग घटित हो रहा है। जातिका ऊँचे दाँत की है। पढ़ाई में अच्छी है। दाँत में पीड़ा रहती है।

कुण्डली सं. 3 में द्वितीयेश गुरु

त्रिक में है और त्रिकेश मंगल से व केतु से दृष्ट है। जातक ऊँचे दाँत वाला है।

कुण्डली सं. 4 में द्वितीय भाव पर त्रिकेश शनि और बुध की दृष्टि है। द्वितीयेश गुरु पाप मध्यत्व योग में है और उस पर राहु की दृष्टि है। जातिका ऊँचे दाँत वाली है।

कुण्डली सं. 5 में द्वितीय भाव पर त्रिकेश मंगल की दृष्टि है तथा द्वितीयेश शनि पाप मध्यत्व योग में है। लग्न में धनु राशि है और उस पर त्रिकेश चन्द्र की व केतु की दृष्टि है। जातक ऊँचे दाँत वाला है।

कुण्डली सं. 6 में द्वितीयेश त्रिक में है और द्वितीय भाव पर त्रिकेश चन्द्र की तथा शनि व गुरु की दृष्टि है। जातक के दाँत विरूप हैं।

कुण्डली सं. 7 में द्वितीय भाव में व्ययेश सूर्य लग्नेश के साथ बैठा है लेकिन द्वितीय भाव पर राहु, मंगल व चन्द्र की दृष्टि है। जातक के दाँत विरूप हैं।

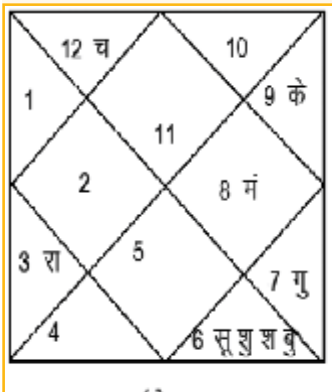

(4)

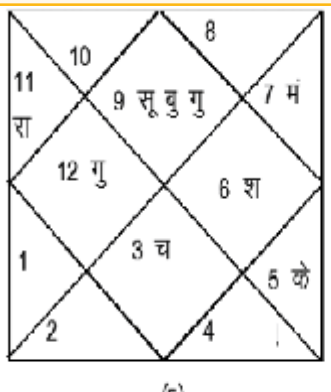

(5)

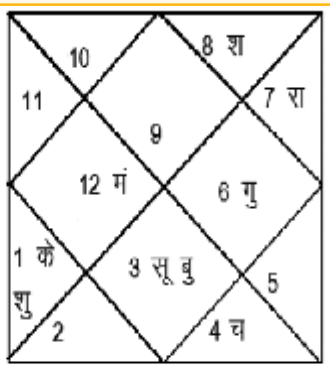

(6)

(7)

अपने क्रोध को काबू में रखें

शिशुपाल भरी सभा में लगातार श्री कृष्ण का अपमान करता जा रहा था और कृष्ण मुस्कुरा रहे थे, उन्हें ना तो क्रोध आ रहा था और ना ही वह अपना मानसिक संतुलन बिगाड़ रहे थे यह देखकर शिशुपाल और क्रोधित होता जा रहा था। कृष्ण ने शिशुपाल की माता को वचन दिया था कि वह शिशुपाल के सौ अपराधों को माफ कर देंगे। क्रोध करके अपशब्द कहना, धमकाना या मारने के लिए हाथ उठाना भी अपराध की ही श्रेणी में आते हैं। कृष्ण अपने मन में शिशुपाल के अपराध को गिनते जा रहे थे और जैसे ही उसके सौ अपराध होकर एक सौ एक हुए श्री कृष्ण ने शिशुपाल को मार दिया।

वास्तव में क्रोध करना खतरनाक होता है, यह स्वास्थ्य के लिए भी ठीक नहीं है, आज की भागमभाग और तनावपूर्ण जिंदगी में क्रोध करने से रक्तचाप बढ़ जाता है, हृदय की धड़कनें बढ़ जाती है और कई बार ब्रेन हेमरेज तक हो जाता है, इससे अपने पराए हो जाते हैं और दुश्मन ज्यादा पैदा हो जाते हैं।

हमेशा अपने चेहरे पर मुस्कान रखें, किसी भी विपरीत परिस्थिति में शांत रहे और सबसे बड़ी बात अपनी भाषा पर नियंत्रण रखें, अपने से बड़ों के साथ सम्मानजनक व्यवहार करना एवं शिष्टता पूर्ण भाषा का उपयोग करना अच्छे संस्कार हैं।

जब हम बार-बार गुस्सा करते हैं, सब अपनी शक्ति को खोते जाते हैं, रामचरितमानस में भी कई जगह ऐसे प्रसंग मिलते हैं, जब रावण ने क्रोध में आकर अपना ही अहित किया है।क्रोध को नियंत्रण में रखने के लिए किन-किन बातों का ध्यान रखें-

1. चेहरे पर हमेशा सच्ची मुस्कुराहट रखें अथवा सदा प्रसन्न रहें।

2. जब कोई बात हो जाए तब घर आई एवं ठंडे दिमाग से उस पर विचार करें तत्पश्चात ही अपनी प्रतिक्रिया देवें, क्षणिक आवेश में उठाया गया कदम उचित नहीं है।

3. सही समय का इंतजार करें अथवा धीरज से कभी न खोए धैर्य रखें।

स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद अंजीर

अंजीर सूखे मेवे तथा ताजे फल दोनों स्वरूप में मिलता है इसमें उच्च कोटि का एमिनो एसिड होता है। प्रोटीन की कमी वाले शिशुओं तथा वृद्धों को इसका सेवन करना लाभप्रद है। कुछ चिकित्सकों का मत है कि अंजीर में विटामिन 'ए' 'बी-2' नियासिन तथा विटामिन 'सी' उपलब्ध होता है यह खाने के बाद 2 घंटे में पचता है तथा इसमें 100 ग्राम में 75 कैलोरी प्राप्त होती है। सुखा मेवा के रूप में इसे खरीद कर तुरंत खाना पचने में भारी है लेकिन इसे गर्म पानी से धोकर थोड़ी देर ठंडे पानी में भिगोकर खाने से सुपाच्य होकर लाभप्रद माना गया है। यकृत(लीवर) की सूजन, अस्थि भंग, किडनी रोग, कब्ज मिटाने में तथा पेट संबंधित रोगों में लाभप्रद माना गया है।बालकों को इसके सेवन से कैल्शियम तथा प्रोटीन की पूर्ति होती है।

पोषक तत्व से भरपूर पपीता

अमृता पुरोहित

पपीते का फल पेट की बीमारियों के लिए तथा कब्ज की रामबाण दवा है। रोज सुबह शाम यदि पाव भर (250 ग्राम) पपीते का सेवन किया जाए तो आंतों में जमा मल को यह आगे बढ़ाकर कब्जियत से छुटकारा दिलाता है। जिस व्यक्ति की पाचन क्रिया मंद या खराब हो गई हो, भोजन करने की इच्छा समाप्त होगई हो ऐसे समस्त लक्षणों में पपीता अधिक लाभकारी फल है। पपीते में कई प्रकार की विटामिन है जो कि शरीर के लिए महत्वपूर्ण है। विटामिन ए, विटामिन सी, प्रोटीन, क्षार, कार्बोहाइड्रेट तथा पेप्सिन जैसे पाचक द्रव्य होते हैं। इससे यह आमाशय एवं लिवर के रोगों को ठीक करता है। अजीण, खट्टी डकारें, यकृत की सूजन, गैस के रोगियों को लाभप्रद बालको को यदि पेट में कृमि हो तो नियमित रूप से पपीता खिलाना लाभप्रद रहता है। पेड़ पर पका हुआ पपीता जिससे डालपक कहा जाता है वह नैसर्गिक रूप से अनेक औषधीय गुणों से परिपूर्ण रहता है तथा उत्तम कोटि का स्वास्थ्य वर्धक टॉनिक के रूप में माना जाता है।पपीता के पके हुए फल में विटामिन सी की मात्रा मिलती है तथा उसका मीठा पन भी पकने के साथ-साथ बढ़ने लगता है इसीलिए लाभ के साथ-साथ यह खाने में भी रुचिकर होता है।

जल की बचत करने से ईश्वर प्रसन्न होते हैं

संतोष श्रीवास्तव

जीवन में फल का बहुत महत्व है, बिना जल के प्राणी भी नहीं रहेंगे।यह प्रकृति का नियम है कि जीवन में जो चीज जितनी आवश्यक है, उसकी उपलब्धता भी उतनी ही सरल है।लेकिन मनुष्य ने स्वार्थ के कारण उसका संरक्षण करना तो दूर उसकी अवहेलना करना शुरू कर दिया, इन्हीं कारणों से आज जल की उपलब्धता एक गंभीर समस्या बनती जा रही है।

आदिकाल से जल संचय होता आया, प्रकृति रूप में नदी, तालाब आदि हैं एवं ग्रामीण क्षेत्र की कच्ची एवं फैली हुई जमीन के कारण वर्षा जल रिस-रिस कर पृथ्वी में समाता जाता था और भूजल स्तर में वृद्धि करता था,विडंबना है आज शहर एवं महानगरीय संस्कृति के कारण जमीन कंक्रीट से ढकती जा रही हैं,जल को भूमि में समाने के लिए जगह ही नहीं है, इसी कारण वर्षा के दिनों में महानगरों/शहरों में पानी का जमा एवं बाढ़ की स्थिति बनती जा रही है।

बढ़ता जल संकट को ध्यान में रखकर, वर्षा जल संचय एक चुनौती बन गया है, हालांकि भारत में पर्याप्त वर्षा होती हैं,लेकिन जल संरक्षण की समुचित व्यवस्था के अभाव में दिनोंदिन जल संकट बढ़ता जा रहा है,आज आवश्यकता इस बात की है कि वर्षा की एक एक बूंद का संरक्षण एवं उसका भंडारण किया जाए, इसके अंतर्गत निम्न बातों पर ध्यान देना जरूरी है।

बंद पड़ी बावड़ियों, तालाबों, कोका पुनः जीवित करना- गांवों एवं शहरों की बावडिया,तालाब आदि का समुचित ध्यान नहीं देने के कारण वे सिमट ते जा रहे हैं एवं कचरा घर बन गए हैं। भू जल भंडारण में इनका बहुत महत्व है क्योंकि इससे धीरे-धीरे जल पृथ्वी में समाता जाता है।

नलों की समुचित साफ-सफाई- महानगरों एवं शहरों में नालों की सफाई

करवाकर चेक डैम बनाए जाए, इसके पहले यह ध्यान में रखना आवश्यक है कि वर्षा के नालों में सीवर या सेप्टिक टैंक का पानी नहीं जाए,चैक डेम होने से जमीन में पानी रिसने का समय मिलेगा और भूजल स्तर बढ़ेगा।

घरों के पानी का उपयोग- घरों में सामान्यतः संचय जल का 70 प्रतिशत उपयोग होता है,इस उपयोग किए गए जल का प्रबंधन इस तरह से किया जाना चाहिए कि उपयोग के बाद पानी बगीचे अथवा भूमिगत टैंक तक पहुंचे इससे एक और जहां बगीचे में सिंचाई हो जाएगी वहीं दूसरी ओर भूजल भी बढ़ेगा।

इसके अलावा निम्नलिखित विधियों से धरती की जलवाही सतह को रिचार्ज किया जा सकता है- गड्ढे खोदकर-ईटों से बने यह किसी भी आकार के गड्ढे होते हैं इनकी दीवारें में थोड़ी थोड़ी दूरी पर छेद बनाए जाते हैं, जिससे कि पानी धीरे-धीरे धरती में जमता जाता है और भूजल स्तर बढ़ता है।

खाई बना कर-जिस क्षेत्र में जमीन की ऊपरी परत कठोर और छिछली होती है वहां जमीन पर खाई खोदकर उसमें जबरी ईट के टुकड़े आधी भर दिए जाते हैं, इससे पानी धीरे-धीरे जमीन में सब आता जाता है।

रिसाव टैंक बना कर- यह क्या तीन रूप से सतह पर निर्मित जल निकाय होते हैं, वर्षा के जल को यहां एकत्रित किया जाता है तथा इसमें संचित जल धरती में समाता रहता है

रेन वाटर हार्वेस्टिंग के अंतर्गत हम प्रतिदिन तरीके से वर्षा का जल जमीन के अंदर पहुंचाने की प्रक्रिया अपनाते हैं गांवों एवं शहरों में वर्षा जल को बहकर बेकार होने से रोक कर उसे घरेलू आवश्यकता और सिंचाई आदि के काम में लेने का प्रयास करते हैं।

रूफटॉप रेनवाटर हार्वेस्टिंग- इस प्रणाली में वर्षा के जल को मकान की छत से पाइपों के माध्यम से नीचे स्टोरेज हार्वेस्टिंग सिस्टम तक पहुंचाया जाता है। सभी पाइपों में पतली जाली लगी रहती हैंइसके बाद इसमें फ्लैश डिवाइस एवं फिल्टर लगे रहते हैं जो जल को शुद्ध करने के बाद ही स्टोरेज तक पहुंचाते हैं, इस तरह से यह प्रयास किया जाता है दूषित जल स्टोरेज तक नहीं पहुंचे, पहली बारिश के जल को बाहर निकालने के लिए फर्स्ट फ्लश उपकरण का उपयोग किया जाता है, क्योंकि पहली बारिश के जल में वायुमंडल की गैस एवं छत पर गंदगी शामिल रहती हैऔर उसे स्टोरेज हार्वेस्टिंग में जमा नहीं किया जाता है।

आम जनता को पर्यावरण एवं जल संरक्षण के प्रति सचेत यह जाना चाहिए ताकि पानी की उपयोगिता एवं उसके घटते जल स्तर के प्रति सभी सजग रहें, यह तर्कसंगत बात है कि हम जितने जल का दोहन कर रहे हैं कम से कम उतना ही जल धरती को दे ताकि उस का जलस्तर बना रहे।

त्रैमासिक राशि भविष्य फल
जनवरी से मार्च 2021

पं. हेमचंद्र पाण्डेय
पं. विनोद जोशी
पं. अरविन्द पाण्डेय

मेष
चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ

जनवरी 2021

मास में अपने कार्यों की सफलता के लिए नए अवसर मिलेंगे। अपने मन और बुद्धि से कार्यों में सफलता के शुभ अवसर मिलेंगे। समाज में मान-समान प्रतिष्ठा वृद्धि होगी। मांगलिक कार्यों के अवसर मिलेंगे। व्यापारी वर्ग को व्यापार में इच्छित लाभ तथा अपने किए गए कार्यों से यश मिलेगा। कृषक वर्ग को सहयोग और धन लाभप्रद रहेगा। नौकरी वर्ग को अधिकारियों की ओर से संतोष मिलेगा। विद्यार्थीवर्ग को उत्तम लाभ के अवसर मिलेंगे। मास की दि. 2, 3, 4, 7, 9, 12, 21, 24 शुभ रहेंगी।

फरवरी 2021

मास के प्रथम दो सप्ताह खर्च की अधिकता। व्यर्थ भ्रमण में अपनी बचत की राशि में से ही खर्च की पूर्ति हो सकेगी। आशय है कि आय के स्रोत में बाधाएं रहेंगी। स्वास्थ्य के प्रति मास के तीसरे सप्ताह में सतर्कता रखें। आवश्यकता होने पर ही यात्रा करें। सतर्कता के साथ परिश्रम अधिक करना होगा। व्यापारी वर्ग का व्यवसाय मध्यम, नौकरी वर्ग को मानसिक चिंता तथा तनाव रहेगा। विद्यार्थी वर्ग को समय का यथोचित लाभ लेना चाहिए। दिनाँक 5, 7, 14, 22 एवं 23 कमजोर हैं।

मार्च 2021

यह माह अपने कार्यों में उलझनों का है। सभी कार्य व्यवस्थित रूप से नहीं करेंगे तो सफलता संदिग्ध रहेगी। स्थाई संपत्ति के बारे में मन बनेगा सफलता भी मिलेगी। मांगलिक कार्यों में व्यय के योग हैं। विद्यार्थी वर्ग को अधिक मेहनत से सफलता, कृषक वर्ग को अपने कार्य से संतोष, व्यापारी वर्ग के लिए अधिक व्ययकारक समय है। सर्विस करने वालों के अपने वरिष्ठ का संतुष्ट रखने पर ही अनुकूलता रहेगी। मास के 1, 3, 9, 11, 17 एवं 23 अशुभ हैं।

वृषभ
ई, उ, ए, ओ, वा, वि, वू, वे, वो

जनवरी 2021

मास का आरंभ व्यस्तताओं तथा आर्थिक खर्च से परिपूर्ण रहेगा। अधिक परिश्रम से तरक्की संभव है, आय के नए साधन बढ़ने के अवसर मास के उत्तरार्द्ध में मिलेंगे। स्वयं के स्वास्थ्य पर ध्यान देना चाहिए, पत्नी को वैचारिक तनाव रह सकता है। राजपक्ष में समय पर सफलता मिलेगी। विद्यार्थी वर्ग को अनुकूलता, कृषक वर्ग को समय पर कार्य से संतोष, व्यापारी वर्ग को आर्थिक समस्याएं रहेंगी। सर्विस वालों को अधिकारियों की ओर से तनाव रहेगा। मास के 2, 4, 6, 8, 10, 11, 18, 21 तारीखें शुभ हैं।

फरवरी 2021

अपने कार्यदायित्वों में व्यस्तता रहेगी। कड़ी मेहनत से सफलता के नजदीक रहेंगे। अपने कार्यदायित्वों को किसी अन्य को सौंपने से आर्थिक कष्ट संभव है। अपने प्रिय व्यक्तियों के स्वभाव से मन में क्षोभ अर्थात् दुःख हो सकता है। अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखें। नौकरी वर्ग वालों को राहत रहेगी। व्यापारी वर्ग के लिए लाभप्रद समय है, कृषक वर्ग को समय पर लाभ मिलने में संदेह रहेगा। विद्यार्थी वर्ग के लिए अनुकूलता रहेगी। लेकिन दि. 5, 12, 13, 15, 22, 23, 25 अशुभ हैं।

मार्च 2021

शुभ समाचारों से प्रसन्नता। स्थाई संपत्ति लाभ। योजनाएँ पूर्ण होने के अवसर। मित्रों से वैचारिक विवाद। उत्तरार्द्ध सामान्य, स्वास्थ्य का ध्यान रखें। पारिवारिक सुख की वृद्धि। संतान सुख उत्तम। प्रगति की संभावना बनेगी। व्यापारी वर्ग को अपने किए गए कार्यों का यश और द्रव्य मिलेगा। कृषक वर्ग को खर्च की अधिकता तथा आर्थिक लाभ में रुकावटें। नौकरी वर्ग को भ्रमण अधिक विद्यार्थी वर्ग का उचित सहयोग। मास में 2, 4, 6, 8, 12, 18, 24 तारीखें उत्तम रहेंगी।

मिथुन
का, की, कू, घ, ङ, छ, के, को, हा

जनवरी 2021

व्यापार करने में तथा अपने स्वतंत्र कार्यों में यह मास उत्त।म रहेगा। आपके अपने परिचय क्षेत्र से भी लाभ मिलने की संभावना बनेगी। आर्थिक दृष्टि से यह मास अनुकूल रहेगा संतान की तरफ से संतोष रहेगा। व्यापारी वर्ग को मैं आया मिलेंगे कृषक वर्ग को सफलता और यश मिले सर्विस वालों को विशेषकर अधिक कि अपनों से सफलता मिलेगी ।विद्यार्थी वर्ग को अपने समय का सदुपयोग नहीं करने से चिंता रहेगी। मास की 11, 13, 16, 19, 20, 23, 24 अनुकूल रहेगी।

फरवरी 2021

मास के प्रथम पक्ष में रोजगार के सुखद अवसर मिलेंगे। अधिकारियों की प्रसन्नता रहेगी। मान-समान बढ़ेगा। अपने नजदीकी मित्रों से सतर्क रहें। व्यर्थ के आरोप लगेंगे। मन में किसी बात को लेकर असंतोष रहेगा। उत्तरार्द्ध में पारिवारिक क्लेश अथवा पत्नी से वैचारिक विषमता रह सकती है, शांत रहें। व्यापारी वर्ग को अपने कार्यों में व्यवधान के साथ ही सफलता के अवसर, कृषक वर्ग को कठिनाईयाँ अधिक, नौकरी वर्ग को अपनी बुद्धिमत्ता एवं वाक्चातुर्य से लाभ, विद्यार्थी वर्ग को अप्रसन्नता दिनाँक 4, 6, 9, 13, 17 अशुभ हैं।

मार्च 2021

मास के प्रारंभ में आर्थिक रुकावटें दूर होंगी। अपने पारिवारिक उत्तरदायित्व को सफलता से निर्वहन कर सकेंगे। दापत्य सुख उत्तम रहेगा। किसी राजकीय कार्य के लिए प्रयास में सफलता मिलेगी। व्यर्थ भ्रमण एवं खर्च की संभावना मास के उत्तरार्द्ध में रहेगी। व्यापारी वर्ग को अपने कार्य से लाभ। नौकरी वर्ग को व्यस्तता अधिक रहेगी। विद्यार्थी वर्ग को समय पर सहयोग मिलेगा। मास की 2, 4, 6, 8, 10, 13, एवं 21 तारीखों में सावधानी बरतें।

त्रैमासिक राशि भविष्य फल
जनवरी से मार्च 2021

पं. हेमचंद्र पाण्डेय
पं. विनोद जोशी
पं. अरविन्द पाण्डेय

कर्क
ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो

जनवरी 2021

मास के पूर्वार्द्ध में अपने प्रयास लाभदायक रहेंगे। कुछ रूके हुए कार्यपूर्ण होंगे। धनलाभ भी यथासंभव होगा। पारिवारिक सुख में वृद्धि होगी। कुछ नजदीकी मित्रों से वैचारिक विवाद संभव है। व्यर्थ भ्रमण नहीं हो इसका ध्यान रखें। राजपक्ष के कार्यों को यथासमय निपटाएं। विद्यार्थी वर्ग को समय के दुरुपयोग से बचना चाहिए। कृषक वर्ग को समय पर सफलता तथा धनलाभ मिलेगा। व्यापारी वर्ग समस्याग्रस्त रहेगा, कर्मचारी वर्ग के लिए अपने कार्य से सफलता मिलेगी। मास की 3, 6, 9, 10, 13, 19, 22 एवं 26 शुभ हैं।

फरवरी 2021

मास का आरंभ व्यर्थ की चिंताओं में कमी करेगी। लेकिन आर्थिक पद्वा से माह कमजोर रहेगा। आय में रुकावटें संभव है, यह भी संभव है कि आय की अपेक्षा व्यय अधिक हो। व्यापारी वर्ग को अधिक सजगता आवश्यक। नौकरी वालों को समय से कर्म होने से संतोष, कृषक वर्ग का समय अनुकूल नहीं। खर्च वृद्धि और लाभ में कमी रहेगी। विद्यार्थी वर्ग को अपने श्रम का फल मिलेगा। मास की 3,5,9,12,13,21,22,28 शुभ है।

मार्च 2021

विगत माह के अधूरे कार्य इस माह में प्रयास करने पर सफल हो सकेंगे। उत्साह में कमी और स्वास्थ्य के प्रति सावधानी बरतनी चाहिए। धन लाभ अच्छा रहेगा। संतान पक्ष के लिए प्रगति के द्वार खुलेंगे। किसी कार्य की रूपरेखा बनेगी जो पूरे परिवार के लिए हितकर होगी। व्यापारी वर्ग को अधिक प्रवास, नौकरी वालों को खर्चकारक अधिक, कृषक वर्ग के लिए अपने कार्य से संतोष, विद्यार्थी वर्ग को अधिक यश में लाभ। (मास की

सिंह
मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, ढू, रे

जनवरी 2021

आपकी अगम बुद्धि से विचार करके किए गए कार्य सफलता दायक सिद्ध होंगे। यदि आपके द्वारा किसी विशेष कार्य में गए किया गया है तो वहआपकोलाभांवित करेगा। विशेषकर व्यापारी वर्ग के लिए यह मास शुभऔर लाभप्रद है। नौकरी वालों को अधिक य करने पर ही सफलता प्राप्त हो सकेगी।कृषक वर्ग के लिए अधिक य से किएगए व्यय का समान लाभ ही मिल सकेगा। मास की 3,6,10,14,15,19,23,एवं 30 तारीखें शुभ फल प्रद रहेंगी।

फरवरी 2021

यह महिना आप को कार्य करने में अस्थिरता देने वाला है कई प्रकार की योजनाएं सामने आएगी परंतु बुद्धिमत्ता पूर्ण निर्णय करना सफलता दायक रहेगा। इस माह के अंतिम सप्ताह मे आपको अनिश्चितता दूर हो सकेगी। आर्थिक लाभ होगा। व्यापारी वर्ग को लाभ प्रद। नौकरी वालों को अधिक परेशानी। कृषक वर्ग को समय पर धन लाभ।विद्यार्थि वर्ग को समय का सदुपयोग करना चाहिए। मास की तारीख 4,14,15,19,24,26 शुभ फल दायक है।

मार्च 2021

विगत मास से आपको आ रही मानसिक चिंताएं थोड़ी कम होंगी लेकिन पारिवारिक चिंताएं कम नहीं हो सकेंगी। अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखें। वाहन चलाते समय अथवा यात्रा करते समय सतर्कता बरतें आर्थिक लाभ होगा समय पर कार्य होंगे। विद्यार्थी वर्ग को अधिक सजगता तथा मेहनत की जरूरत होगी। कृषक वर्ग को आय में वांछित लाभ नहीं हो सकेगा। व्यापारी वर्ग को दौड़-धूप ज्यादा रहेगी। सर्विस वालों का स्थिरता में कमी। मास के 3, 4, 6, 9, 12, 18 एवं 21 तारीखों में सावधानी रखें।

कन्या
टे, टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो

जनवरी 2021

यह माह आपके लिए लाभ प्रद रहेगा ।किसी अनजान व्यक्ति से कार्यों में सावधानी रखें। पारिवारिक आयु में व्यस्त रहेंगे संतान की ओर से चिंता कम होगी राज की कार्यों को अधुरा ना छोड़ें अन्यथा रुकावटें आएगी व्यापारी वर्ग को समय प्रतिकूल है । कृषक वर्ग को कार्यों में सफलता ।नौकरी वर्ग वालों को अधिक सजगता से कार्य करना चाहिए विद्यार्थी वर्ग को समस्याएं अधिक रहेंगी।मास के 9,11,13,16, 19, 24,एवं30शुभ है।

फरवरी 2021

इस माह में आपको कार्य में सफलता के लिए अपने आत्मविश्वास को प्रबल करना होगा। पहले से तय शुदा कार्यों को यथावत निवर्तित करने का उत्तम समय है।प ी के स्वास्थ्यका ध्यान रखें।संतान की ओर से सुख,संतोष। व्यापारी वर्ग को अपने कार्य सीमित समय में करना चाहिए। कृषक वर्ग को समय पर लाभ मिलेगा। नौकरी करने वालों को समय पर कार्य निष्पादन नहीं होने से तनाव हेगा विद्यार्थी वर्ग का उत्तम समय। मास की 12, 14, 18, 24, 28 शुभ है।

मार्च 2021

यह मास आपको रचनात्मक कार्य क्रमों में अधिक व्यस्त रखेगा। मित्रों से संबंध में प्रगाढ़ता बढ़ेगी। अधिकारी वर्ग की प्रसन्नता रहेगी। सामाजिक यस अच्छा मिलेगा। पारिवारिक चिंता भी इस माह अधिक रहेगी। व्यापारी वर्ग को अपने कार्यों में सामान्य व्यवधान रहेगा। कृषक वर्ग को समय पर लाभ मिलेगा। नौकरी करने वालों को यह मास सामान्य रहेगा। विद्यार्थी वर्ग को अपने कार्य दायित्व पर अधिक ध्यान देना

त्रैमासिक राशि भविष्य फल
जनवरी से मार्च 2021

पं. हेमचंद्र पाण्डेय
पं. विनोद जोशी
पं. अरविन्द पाण्डेय

तुला
रा, री, रु, रे, रो, ता, ती, तू, ते

जनवरी 2021

मास का आरंभ व्यस्तताओं तथा आर्थिक खर्च से परिपूर्ण रहेगा। अधिक परिश्रम से तरक्की संभव है, आय के नए साधन बढ़ने के अवसर मास के उत्तरार्द्ध में मिलेंगे। स्वयं के स्वास्थ्य पर ध्यान देना चाहिए, पि को वैचारिक तनाव रह सकता है। राजपक्ष में समय पर सफलता मिलेगी। विद्यार्थी वर्ग को अनुकूलता, कृषक वर्ग को समय पर कार्य से संतोष, व्यापारी वर्ग को आर्थिक समस्याएं रहेंगी। सर्विस वालों को अधिकारियों की ओर से तनाव रहेगा। मास के 2, 4, 6, 8, 10, 11, 18, 21 तारीखें शुभ हैं।

फरवरी 2021

अधिकारियों की अप्रसन्नता। विवाद से दूर रहे। आर्थिक रुकावटें। कोर्ट कचहरी के विवाद में व्यस्तता। उत्तरार्द्ध में चिंताओं में कमी। स्वास्थ्य में कमजोरी। किसी अप्रिय घटना से मन को दुःख। व्यापारी वर्ग को आलस्य के फलस्वरूप कार्यों में लाभ की गुंजाईश कम रहेगी। कृषक वर्ग को भूमि संबंधित विवाद से सावधानी रखना चाहिए। नौकरी वर्ग को व्यस्तता अधिक, जोखिम भरे कार्य में सावधानी बरतें। विद्यार्थी वर्ग को परिस्थितियां अनुकूल। दिनाँक 1, 5, 7, 9, 11, 17 शुभ रहेंगी।

मार्च 2021

मास में अधिक य से सफलता मिलेगी। विशेषकर कामकाजी महिलाओं को सावधानी बरतनी होगी। पारिवारिक सुख अनुकूल रहेगा। भ्रमण की अधिकता रहेगी। अधिक जोख़िम भरे कार्यों में सावधानी रखें। स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव रह सकता है। विद्यार्थी वर्ग को सुविधाओं में कमी कृषक वर्ग को इच्छित कार्यों में रुकावटें, व्यापारी वर्ग को इस माह अधिक सजग रहकर कार्य करना चाहिए। कर्मचारी वर्ग के लिए समय अनुकूल है। इस मास 2, 5, 7, 12, 13, 20, 22 एवं 30 शुभ हैं।

वृश्चिक
तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू

जनवरी 2021

विगत माह की कठिनाईयों से कार्य इस माह के अंत तक सफलता दायक रहेंगे। साझेदारों अथवा विश्वसनीय मित्र के भरोसे छोड़े गए कार्य की पुनः पुनरावृत्ति करनी पड़ेगी। कोर्ट, कचहरी के विवादों में असफलता नहीं हो इसका ध्यान रखें। व्यापारी वर्ग को आर्थिक हानि प्रद। नौकरी वर्ग वालों को सजगता से कार्य करना चाहिए। कृषक वर्ग को ऋणग्रस्तता में कमी करना हितकारक होगा। विद्यार्थी वर्ग का व्यर्थ भ्रमण संभव। मास की 1,3,6,9,11,19,27,29 शुभ है।

फरवरी 2021

यह माह आपको मांगलिक एवं धार्मिक कार्यों में व्यस्तताओं का रहेगा। आप की यात्राएं भी आनन्दायक रहेगी। सामाजिक दायित्वों का निर्वहन उत्तम तरीके से करें अन्यथा अपकीर्ति का भजन बनना पड़ेगा। मास के उत्तरार्द्ध में विरोधी वर्ग से शांति रहेगी। पारिवारिक सुख अच्छा रहेगा। व्यापारी वर्ग को राजभय रहेगा। कृषक वर्ग को अपनी गलती से धन लाभ में कमी होगी। नौकरी वालों को संतोषप्रद। विद्यार्थियों को कष्ट प्रद। (मास की 5, 6, 13, 14, 21, 24 शुभ हैं)

मार्च 2021

मास का पूर्वार्द्ध अनुकूल परिस्थिति वाला रहेगा। सफलता, सामजिक यश और पारिवारिक सुख उत्तम रहेगा। माता-पिता के स्वास्थ्य का ध्यान देना होगा। कार्य बोझ बढ़ा रहेगा लेकिन आपकी मनोशक्ति इसे समय पर पूरा करेगी। मास के उत्तरार्द्ध में व्यर्थ भ्रमण होगा। व्यापारी वर्ग को उत्तम लाभप्रद मास। नौकरी वर्ग वालों कार्य के प्रति सजगता रखना चाहिए। कृषक वर्ग को उत्तम लाभ, विद्यार्थी वर्ग को आर्थिक कठिनाईयां रहेंगी। मास की 3,6,9,12,18,21,27 तारीख शुभ है।

धनु
ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढ़ा, भ

जनवरी 2021

यह मास आपके लिए संतुलित दिमाग से काम करते हुए सफलता प्राप्त करने का है। मास का प्रारंभ कुछ चिंताएं देता है लेकिन उत्तरार्द्ध में लाभप्रद रहेगा। पारिवारिक चिंताएं मास में रहेंगी। उनका निराकरण करने में अधिक य करना पड़ेगा। ऋणग्रस्तता को अधिक नहीं बढ़ने दें। विद्यार्थी वर्ग को माह सामान्य, कृषकों के लिए अपने कार्य के अनुपात में सफलतादायक रहेगा। व्यापारी वर्ग को समुचित लाभ के योग, कर्मचारी वर्ग को अधिक संतुष्टिप्रद मास में 4, 5, 9, 12, 13, 17 एवं 18 दिवस शुभ हैं।

फरवरी 2021

मास में अधिक य से सफलता मिलेगी। विशेषकर कामकाजी महिलाओं को सावधानी बरतनी होगी। पारिवारिक सुख अनुकूल रहेगा। भ्रमण की अधिकता रहेगी। अधिक जोख़िम भरे कार्यों में सावधानी रखें। स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव रह सकता है। विद्यार्थी वर्ग को सुविधाओं में कमी कृषक वर्ग को इच्छित कार्यों में रुकावटें, व्यापारी वर्ग को इस माह अधिक सजग रहकर कार्य करना चाहिए। कर्मचारी वर्ग के लिए समय अनुकूल है। इस मास 2, 5, 7, 12, 13, 20, 22 शुभ हैं।

मार्च 2021

मास का प्रारंभ खर्चकारक एवं भ्रमणकारक अनुकूल अधिकार एवं दायित्व दृष्टि, अपने कार्य की चिंताओं में कमी, व्यर्थ के विवाद में कमी। संतान की चिताएं रहेंगी। पारिवारिक सुख की वृद्धि होगी। किसी नए कार्य की योजना बनाएंगे। व्यापारी वर्ग को लाभ प्रद, नौकरी वालों को अधिक भ्रमण, कृषक वर्ग को समय पर धन लाभ, विद्याथी वर्ग को अपने प्रयास पर सफलता। (मास की तारीख 2,4,8,12,16,26,30 शुभ है)

त्रैमासिक राशि भविष्य फल
जनवरी से मार्च 2021

पं. हेमचंद्र पाण्डेय
पं. विनोद जोशी
पं. अरविन्द पाण्डेय

मकर
भो, जा, जी, खी, खू, खे, खोग, गा,गी

जनवरी 2021

मास का आरंभ मानसिक चिंताओं की कमी से होगा, अपने स्वभाव में परिवर्तन लाएं, उग्रता को कम करें, सेहत कमजोर रह सकती है, पारिवारिक चिंताएं तथा तनाव रह सकता है। संतान की चिंताओं को कम करने का प्रयास करें। यदि विद्याध्ययनरत हैं तो उसे योग्य वातावरण उपलब्ध कराएं। विद्यार्थी वर्ग के लिए समय पर कार्य/अध्ययन नहीं होने से चिंताएं रहेगी। कृषक वर्ग को लाभप्रद समय रहेगा। व्यापारी वर्ग को आर्थिक चिंताएं तथा भ्रमण अधिकता रहेगी। मास के 7, 8, 15, 17, 19 एवं 23 अशुभ हैं।

फरवरी 2021

मास के पूर्वार्द्ध में दौड़-धूप अधिक रहेगी। मान-समान में वृद्धि होगी किसी विशिष्ट व्यक्ति का सहयोग मिलेगा। चिंताएँ कम होने लगेंगी। स्वास्थ्य में अनुकूलता रहेगी, पत्नी के स्वास्थ्य में कमजोरी रह सकती है। व्यापारी वर्ग को आर्थिक रुकावटें रहेंगी। कृषक वर्ग को विगत माह से कुछ राहत मिलेगी। नौकरी वर्ग को चिताएं अधिक, विद्यार्थी वर्ग को सहयोग मिलेगा। दिनाँक 1, 4, 7, 10, 13, 17, 23 कमजोर हैं यात्राएँ टालें।

मार्च 2021

मास का आरंभ व्यस्तताओं तथा आर्थिक खर्च से परिपूर्ण रहेगा। अधिक परिश्रम से तरक्की संभव है, आय के नए साधन बढ़ने के अवसर मास के उत्तरार्द्ध में मिलेंगे। स्वयं के स्वास्थ्य पर ध्यान देना चाहिए, पत्नी को वैचारिक तनाव रह सकता है। राजपक्ष में समय पर सफलता मिलेगी। विद्यार्थी वर्ग को अनुकूलता, कृषक वर्ग को समय पर कार्य से संतोष, व्यापारी वर्ग को आर्थिक समस्याएं रहेंगी। सर्विस वालों को अधिकारियों की ओर से तनाव रहेगा। मास के 2, 4, 6, 8, 10, 11, 18, 21 तारीखें शुभ हैं।

कुंभ
गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा

जनवरी 2021

अधिकारियों की अप्रसन्नता। विवाद से दूर रहे। आर्थिक रुकावटें। कोर्ट कचहरी के विवाद में व्यस्तता। उत्तरार्द्ध में चिंताओं में कमी। स्वास्थ्य में कमजोरी। किसी अप्रिय घटना से मन को दुःख। व्यापारी वर्ग को आलस्य के फलस्वरूप कार्यों में लाभ की गुंजाईश कम रहेगी। कृषक वर्ग को भूमि संबंधित विवाद से सावधानी रखना चाहिए। नौकरी वर्ग को व्यस्तता अधिक, जोखिम भरे कार्य में सावधानी बरतें। विद्यार्थी वर्ग को परिस्थितियां अनुकूल। दिनाँक 1, 5, 7, 9, 11, 17 शुभ रहेंगी।

फरवरी 2021

यह माह आरंभ में चिंतादायक लेकिन उत्तरार्द्ध सफलतादायक रहेगा। व्यापार व्यवसाय में बढ़ोत्तरी होगी। अपने प्रियजनों से अच्छे संबंध रहेंगे। पारिवारिक सुख उत्तम, राजकीय कार्यों में सफलता और विजय मिलेगी। अपनी आत्मबल की वृद्धि होगी तथा कार्यों को बढ़ाने की रुचि बढ़ेगी। व्यापारी वर्ग को उत्तम लाभ। नौकरी वर्ग को अपने कार्य से संतोष एवं अधिकारी वर्ग को प्रसन्नता। कृषक वर्ग को अपनी योजनानुरुप कार्य से लाभ। विद्यार्थी वर्ग को परिवर्तन लाभप्रद नहीं। (मास की 4,5,10,11,20,22,24 शुभ)

मार्च 2021

यह मास विगत समय से अनुकूल रहेगा। कठिनाईयों के कार्य आसानी से हल होंगे। पारिवारिक सुख मिलेगा। संतान को अपने कार्य में सफलता से परिवार में सुख-शांति महसूस करेंगे। साझेदारों पर अनावश्यक क्रोध से बचें। अन्यथा विवाद संभव है। मास के उत्तरार्द्ध में भ्रमण यथासंभव टालें। कृषक वर्ग को समय रहते अपने कार्य निपटाने पर लाभ संभव। नौकरी वर्ग को स्थानांतरण। विद्यार्थी वर्ग को सफलता रहेगी। मास की 2,7,11,17,19,24 तारीख शुभ है।

मीन
दी, दु, थ, क्ष, ज, दे, दो, चा, ची

जनवरी 2021

विगत माह के अधूरे कार्य इस माह में प्रयास करने पर सफल हो सकेंगे। उत्साह में कमी और स्वास्थ्य के प्रति सावधानी बरतनी चाहिए। धन लाभ अच्छा रहेगा। संतान पक्ष के लिए प्रगति के द्वार खुलेंगे। किसी कार्य की रूपरेखा बनेगी जो पूरे परिवार के लिए हितकर होगी। व्यापारी वर्ग को अधिक प्रवास, नौकरी वालों को खर्चकारक अधिक, कृषक वर्ग के लिए अपने कार्य से संतोष, विद्यार्थी वर्ग को अधिक यश में लाभ। (मास की 1,3,6,9,14,16,19,21,26 शुभ हैं)

फरवरी 2021

मास में स्वास्थ्य के प्रति सजग रहें। अपने कार्य के प्रति भी सजगता रखें आर्थिक कठिनाईयाँ आ सकती हैं, पारिवारिक सदस्यों से वैचारिक विषमता रह सकती है, अपने स्वभाव में सामान्य परिवर्तन लाएं अपने दैनिक कार्यों को समय पर निपटाएं अन्यथा व्यवधान आ सकता है। यात्राएं अधिक हो सकती हैं, अपने नजदीकी मित्रों से विरोध नहीं हो, इसका भी ध्यान रखें। विद्यार्थी वर्ग के लिए माह कमजोर है। कृषक वर्ग को अधिक मेहनत से लाभ होगा। व्यापारी वर्ग को ऋणग्रस्तता संभव है। सर्विस वालों को समय अनुकूल रहेगा। मास में 1, 3, 9, 12, 18, 21, 27 शुभ रहेगा।

मार्च 2021

मास का आरंभ व्यय एवं व्यर्थ के भ्रमण कारक। व्यर्थ के आलस्य से दूर रहें, समय पर कार्य करें। संयुक्त परिवार एवं संतान की चिंताएं मास में रहेगी। नवीन मित्रों से अच्छे संबंध बनकर लाभ प्राप्त की योग बनेंगे। व्यापारी वर्ग से अच्छे संबंध बनकर लाभ प्राप्ति के योग बनेंगे। व्यापारी वर्ग को अच्छा लाभ कृषक वर्ग को खर्च की अधिकता, नौकरी वालों को अच्छा यश मिलेगा। (मास की 3,4,8,10,12,16,18,20,24,26 शुभ है)

त्रैमासिक व्रत पर्व एवं शुभ मुहूर्त
जनवरी से मार्च 2021

डॉ. हेमचंद्र पाण्डेय
विनोद जोशी, उज्जैन

जनवरी 2021 के व्रत पर्व

1 जनवरी, शुक्रवार - ईस्वी नववर्ष 2021 आरंभ

2 जनवरी, शनिवार - संकष्टी चतुर्थी व्रत

6 जनवरी, बुधवार - बुधाष्टमी/कालाष्टमी, महामना मालवीय जयन्ती

8 जनवरी, शुक्रवार - पार्श्वनाथ जयन्ती

9 जनवरी, शनिवार - सफला एकादशी व्रत स्मार्त एवं वैष्णव

10 जनवरी, रविवार - प्रदोष व्रत

11 जनवरी, सोमवार - मास शिवरात्री व्रत

12 जनवरी, मंगलवार - श्राद्ध अमावस्या/वकुला अमावस्या/गणेशोत्पति

13 जनवरी, बुधवार - स्नानदान की अमावस्या/लोहिड़ी पंजाब पर्व

14 जनवरी, गुरुवार - मकरराशि पर सूर्य, मकर संक्रान्ति पर्व

15 जनवरी, शुक्रवार - पोंगल पर्व

16 जनवरी, शनिवार - वैनायकी गणेश चतुर्थी व्रत

19 जनवरी, मंगलवार - अनुरूपा षष्ठी

20 जनवरी, बुधवार - गुरु गोविंद जयंती/भद्राष्टमी

21 जनवरी, गुरुवार - दुर्गाष्टमी

23 जनवरी, शनिवार - शाम्बदशमी, नेताजी सुभाष चन्द्र बोस जयन्ती

24 जनवरी, रविवार - पुत्रदा एकादशी व्रत स्मार्त एवं वैष्णव

25 जनवरी, सोमवार - कुर्म द्वादशी

26 जनवरी, मंगलवार - भोम प्रदोष व्रत/भारतीय गणतन्त्र दिवस पर्व

28 जनवरी, गुरुवार - स्नानदान, व्रत की पूर्णिमा/शाकम्भरी जयन्ती, लाला लाजपत राय जन्मदिवस

29 जनवरी, शुक्रवार - माघ कृष्णपक्ष आरंभ

30 जनवरी, शनिवार - शहीद दिवस/महात्मा गांधी निर्वाण दिवस

31 जनवरी, रविवार -संकष्टी चतुर्थी व्रत

शुभ मुहूर्त जनवरी 2021

1 जनवरी, शुक्रवार - अन्नप्राशन, नवीन व्यापार (दिन में 12.00 से 13.30)

2 जनवरी, शनिवार - नामकरण (दिन में 13.30 से 16.30)

5 जनवरी, मंगलवार - प्रसूति का स्नान, उत्तर को छोड़कर यात्राएं। (16.15 से 18.30)

6 जनवरी, बुधवार - खेत जोतना, बीज बोना, नवीन व्यापार (सवेरे 10.30 से 12.05)

7 जनवरी, गुरूवार - प्रसूति का स्नान (दिन में 12.05 से 13.35)

8 जनवरी, शुक्रवार - प्रसूति का स्नान, नामकरण, अन्नप्राशन, खेत जोतना, बीज बोना (सूर्योदय से सवेरे 10.40 के बीच)

9 जनवरी, शनिवार - नवीन व्यापार, पूर्व उत्तर यात्राएं (दिन में 13.30 से 16.15)

10 जनवरी, रविवार - नवीन व्यापार (सवेरे 9.15 से दिन में 12.15)

11 जनवरी, सोमवार - खेत जोतना, बीज बोना (सवेरे 9 से 12.15)

13 जनवरी, बुधवार - नवीन व्यापार (सवेरे 10.30 से 12.15)

15 जनवरी, शुक्रवार - नामकरण, अन्नप्राशन, खेत जोतना, बीज बोना, पूर्व दक्षिण की यात्राएं (सवेरे 8.00 से 10.30 के बीच)

16 जनवरी, शनिवार - नामकरण (दिन में 13.30 से 15.15)

18 जनवरी, सोमवार - प्रसूति का स्नान, अन्नप्राशन, खेत जोतना, बीज बोना (सवेरे 9.15 से 10.15 सायं 16.30 से 18.15)

19 जनवरी, मंगलवार - प्रसूति का स्नान, अन्नप्राशन, खेत जोतना, बीज बोना, पश्चिम यात्राएं (सवेरे 10.30 से 13.30 दिन में)

20 जनवरी, बुधवार - नामकरण, अन्नप्राशन (सवेरे 10.15 से 12.15)

21 जनवरी, गुरुवार - खेत जोतना, बीज बोना, नवीन व्यापार (दिन में 12.15 से 13.40)

23 जनवरी, शनिवार - दक्षिण की ओर यात्राएं (सवेरे 7.30 से 9.15)

24 जनवरी, रविवार - प्रसूति का स्नान, नवीन व्यापार, पूर्व की यात्राएं (सवेरे 9.30 से 12.10 दिन)

25 जनवरी, सोमवार - प्रसूति का स्नान, खेत जोतना, बीज बोना, नवीन व्यापार (दिन में 9.15 से 10.15)

27 जनवरी, बुधवार - नामकरण (सवेरे 10.30 से 12.15)

28 जनवरी, गुरुवार - अन्न प्राशन, खेत जोतना, बीज बोना, नवीन व्यापार (दिन में 12.15 से 13.35)

29 जनवरी, शुक्रवार - नामकरण, खेत जोतना, बीज बोना (सवेरे 8.30 से 10.40)

30 जनवरी, शनिवार - नामकरण, खेत जोतना, बीज बोना (सवेरे 7.30 9.00 दिन में 13.30 से 15.00)

त्रैमासिक व्रत पर्व एवं शुभ मुहूर्त
जनवरी से मार्च 2021

डॉ. हेमचंद्र पाण्डेय
विनोद जोशी, उज्जैन

फरवरी 2021 के व्रत पर्व

4 फरवरी, गुरुवार - कालाष्टमी/अष्ट का श्राद्ध/श्री रामानन्दाचार्य जयंती

7 फरवरी, रविवार - षडतिला एकादशी व्रत (स्मार्त)

8 फरवरी, सोमवार - षडतिला एकादशी व्रत (वैष्णव), तिल द्वादशी

9 फरवरी, मंगलवार - भौम प्रदोष व्रत

10 फरवरी, बुधवार - मास शिवरात्रि व्रत

11 फरवरी, गुरूवार - स्नानदान श्राद्ध की, मौनी अमावस्या

12 फरवरी, शुक्रवार - माघ शुक्ल पक्ष प्रारंभ, सूर्य की कुंभ संक्रांति

14 फरवरी, रविवार - शुक्र का बुद्धत्व दोष

15 फरवरी, सोमवार - वैनायकी चतुर्थी व्रत

16 फरवरी, मंगलवार - बसंत पंचमी पर्व/सरस्वती पूजन पर्व

17 फरवरी, बुधवार - शीतलाषष्ठी

18 फरवरी, गुरुवार - साावन मीन राशि का सूर्य

19 फरवरी, शुक्रवार - रथ सप्तमी/अचला सत्तम, शिवजी जयन्ती

20 फरवरी, शनिवार - भीमाष्टमी/दुर्गाष्टमी

21 फरवरी, रविवार - श्री हरसू ब्रह्म जयन्ती/महानन्दानवमी

22 फरवरी, सोमवार - भक्त पुण्डरीक उत्सव (पण्डरपुर)

23 फरवरी, मंगलवार - जया एकादशी (स्मार्त एवं वैष्णव)

24 फरवरी, बुधवार - भीष्म द्वादशी/प्रदोष व्रत

25 फरवरी, गुरुवार - कल्पादि त्रयोदशी

26 फरवरी, शुक्रवार - व्रत की पूर्णिमा

27 फरवरी, शनिवार - स्नानदान की पूर्णिमा (माघी)/संत रविदास जयंत्री

28 फरवरी, रविवार - फाल्गुन कृष्णपक्ष आरंभ

शुभ मुहूर्त फरवरी 2021

1 फरवरी, सोमवार - प्रसूति का स्नान, नामकरण, अन्नप्राशन, पश्चिम की यात्राएं (सायं 15.30 से 18.15)

2 फरवरी, मंगलवार - प्रसूति का स्नान (दिन में 10.30 से 12.30)

3 फरवरी, बुधवार - नामकरण, अन्नप्राशन, खेत जोतना, बीज बोना, नवीन व्यापार (सवेरे 10.30 से 12.15)

4 फरवरी, गुरुवार - प्रसूति का स्नान, नामकरण, अन्नप्राशन, खेत जोतना, बीज बोना, नवीन व्यापार (दिन में 12.15 से 13.40)

5 फरवरी, शुक्रवार - खेत जोतना, बीज बोना (सवेरे 7.00 से 10.30)

6 फरवरी, शनिवार - गृहप्रवेश, नवीन व्यापार, पश्चिम/दक्षिण यात्रा (दिन में 13.30 से 16.30)

8 फरवरी, सोमवार - खेत जोतना, बीज बोना (सवेरे 9.00 से 10.15)

9 फरवरी, मंगलवार - प्रसूति का स्नान (सवेरे 10.30 से 12.30)

10 फरवरी, बुधवार - खेत जोतना, बीज बोना (सवेरे 7.30 से 9.15)

12 फरवरी, शुक्रवार -नामकरण (दिन में 11.50 से 13.30)

13 फरवरी, शनिवार - खेत जोतना, बीज बोना (सवेरे 7.30 से 9.30)

14 फरवरी, रविवार - प्रसूति का स्नान (सवेरे 9.15 से 10.15)

16 फरवरी, मंगलवार - प्रसूति का स्नान, उत्तर के अतिरिक्त यात्रा (सवेरे 10.30 से 12.30)

17 फरवरी, बुधवार - नामकरण, खेत जोतना, बीज बोना, नवीन व्यापार (सवेरे 10.30 से 12.15)

18 फरवरी, गुरुवार - खेत जोतना, बीज बोना (सवेरे 11.30 से 13.40)

21 फरवरी, रविवार - प्रसूति का स्नान, खेत जोतना, बीज बोना, नवीन व्यापार, दक्षिण यात्रा (सवेरे 9.30 से 12.15 दिन में)

22 फरवरी, सोमवार - प्रसूति का स्नान, नामकरण, अन्नप्राशन, गृहप्रवेश, नवीन व्यापार, दक्षिण की यात्रा (सवेरे 9.15 से 10.15 दिन में 13.30 से 18.10)

24 फरवरी, बुधवार - नामकरण, अन्नप्राशन, खेत जोतना, बीज बोना, नवीन व्यापार (सवेरे 10.30 से 12.15)

25 फरवरी, गुरुवार - नामकरण, अन्नप्राशन, नवीन व्यापार, उत्तर की यात्राएं (दिन में 12.00 से 13.35 सायं 16.30 से 18.00)

28 फरवरी, रविवार - प्रसूति का स्नान, नवीन व्यापार (सवेरे 9.15 से 12.15)

त्रैमासिक व्रत पर्व एवं शुभ मुहूर्त
जनवरी से मार्च 2021

डॉ. हेमचंद्र पाण्डेय
विनोद जोशी, उज्जैन

मार्च 2021 के व्रत पर्व

2 मार्च, मंगलवार - संकष्टी चतुर्थी व्रत/अंगार की चतुर्थी

5 मार्च, शुक्रवार - श्रीनाथजी का उत्सव (नाथद्वारा)

6 मार्च, शनिवार - जानकी जयन्ती/कालाष्टमी/अष्ट का श्राद्ध

8 मार्च, सोमवार - स्वामी दयानन्द सरस्वती जयंती

9 मार्च, मंगलवार - विजया एकादशी (स्मार्त एवं वैष्णव)

10 मार्च, बुधवार - प्रदोष व्रत

11 मार्च, गुरुवार- महाशिवरात्रि व्रत/वैधनाथ जयन्ती

13 मार्च, शनिवार - स्नानदान श्राद्ध की अमावस्या

14 मार्च, रविवार - सूर्य की मीन संक्रांति (मलमास आरंभ)

15 मार्च, सोमवार - रामकृष्ण परमहंस जयन्ती

17 मार्च, बुधवार - वैनायकी चतुर्थी व्रत

19 मार्च, शुक्रवार - गोखपिणी षष्ठी

20 मार्च, शनिवार, विषुव दिवस (सावन मेष राशि का सूर्य)

21 मार्च, रविवार - होलाष्टक आरंभ

22 मार्च, सोमवार - दुर्गाष्टमी/राष्ट्रीय चैत्रमास आरंभ

25 मार्च, गुरूवार - आमलकी एकादशी व्रत (स्मार्त एवं वैष्णव)

26 मार्च, शुक्रवार - गोविन्द द्वादशी/प्रदोष व्रत

28 मार्च, रविवार - स्नानदान व्रत की पूर्णिमा, होलिका दहन, चैतन्य महाप्रभु जयन्ती

29 मार्च, सोमवार - चैत्रकृष्ण पक्ष आरंभ/होली धुलेण्डी

30 मार्च, मंगलवार - संत तुकाराम जयन्ती

31 मार्च, बुधवार - संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत

शुभ मुहूर्त मार्च 2021

1 मार्च, सोमवार - प्रसूति का स्नान, नामकरण, अन्नप्राशन, खेत जोतना, बीज बोना, नवीन व्यापार (सायं 15.30 से 18.30)

2 मार्च, मंगलवार - प्रसूति का स्नान (सवेरे में 9.30 से 12.15)

3 मार्च, बुधवार - नामकरण, अन्नप्राशन (सवेरे 10.30 से 12.15)

4 मार्च, गुरूवार - खेत जोतना, बीज बोना, उत्तर की यात्रा (दिन में 12.15 से 13.05)

5 मार्च, शुक्रवार - प्रसूति का स्नान, नामकरण, अन्नप्राशन, खेत जोतना, बीज बोना, नवीन व्यापार, पूर्व की यात्रा (सवेरे 9.00 से 10.15 दिन में 12.15 से 13.40)

8 मार्च, सोमवार - गृहप्रवेश (दिन में 15.45 से 18.15 के बीच)

9 मार्च, मंगलवार - प्रसूति का स्नान, खेत जोतना, बीज बोना (सवेरे 9.00 से 13.30)

10 मार्च, बुधवार - नामकरण, गृहप्रवेश, खेत जोतना, बीज बोना (सवेरे 10.30 से 12.15)

11 मार्च, गुरुवार- नामकरण, अन्नप्राशन, गृहप्रवेश, पश्चिम की यात्रा (दिन में 12.15 से 14.40 के बीच)

14 मार्च, रविवार - प्रसूति का स्नान (सवेरे 9.15 से 10.30)

15 मार्च, सोमवार - प्रसूति का स्नान, नामकरण, अन्नप्राशन, खेत जोतना, बीज बोना, नवीन व्यापार, पश्चिम की यात्रा (सवेरे 9.10 से 10.30 सायं 13.15 से 18.15)

19 मार्च, शुक्रवार - नामकरण (दिन में 12.15 से 13.30)

20 मार्च, शनिवार, नवीन व्यापार, पश्चिम दिशा (सवेरे 7.40 से 9.15 दिन में 13.40 से 16.15)

21 मार्च, रविवार - प्रसूति का स्नान, नवीन व्यापार, पूर्व की यात्रा (सवेरे 6.30 से 7.15 सायं 7.00 से 21.15)

24 मार्च, बुधवार - नामकरण, अन्नप्राशन, खेत जोतना, बीज बोना, नवीन व्यापार (सवेरे 10.30 से 12.15 दिन में)

28 मार्च, रविवार - होलिका दहन

29 मार्च, सोमवार - प्रसूति का स्नान, नामकरण, अन्नप्राशन, नवीन व्यापार, पूर्व को छोड़कर यात्राएं (सवेरे 9.00 से 10.50 सायं 15.15 से 18.15)

30 मार्च, मंगलवार - प्रसूति का स्नान, खेत जोतना, बीज बोना (दिन में 10.30 से 12.30 दिन)

31 मार्च, बुधवार - नामकरण, अन्नप्राशन, खेत जोतना, बीज बोना (सवेरे 10.30 से 12.15 दिन में)

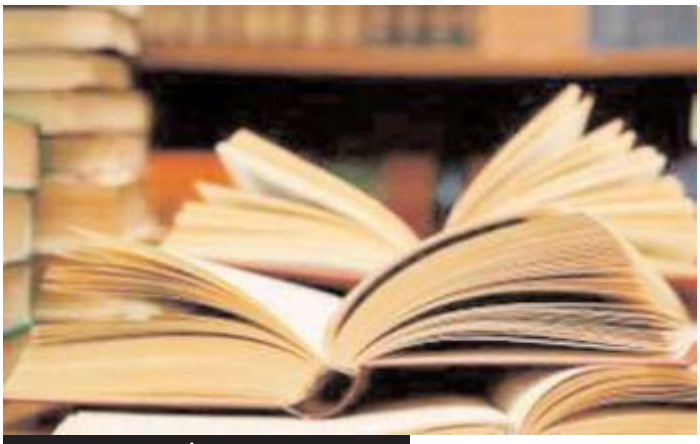

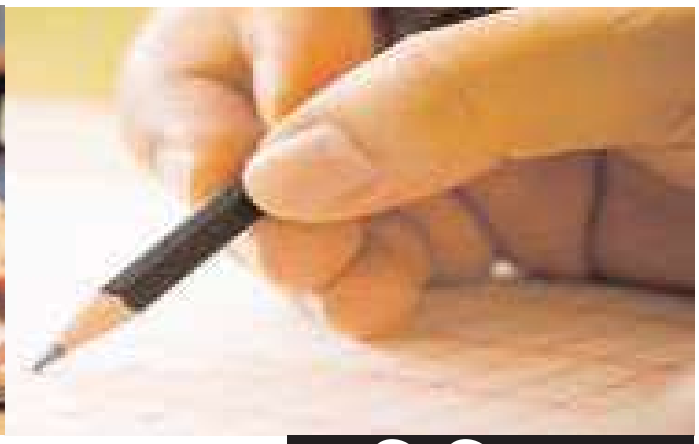

आपके पत्र

प्रतिक्रियाएं

सम्माननीय संपादक महोदय

जीवन वैभव का अक्टूबर 20 अंक पढ़ने को मिला यह अंक प्रायः सभी के लिए विशेषतः ज्योतिष व वास्तु में रुचि रखने वाले लोगों के लिए विशेष उपादेय। सफल सम्पादन हेतु आदरणीय गुरुदेव श्रीमान् पाण्डेय जी को सादर कोटिशः वन्दन व वर्धापन।

- सनन्दन कुमार त्रिपाठी
राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान भोपाल

आदरणीय श्री पांडे जी

जीवन बैभव पत्रिका का अक्टूबर 20 अंक डाक द्वारा प्राप्त हुआ। आकर्षक और सदा की भांति पत्रिका विविध विषयों पर सारगर्भित विवरण को समेटे हुए है /आदरणीय पांडेजी आपके अनुभवजन्य ज्ञान से जिज्ञासु और जानकार दोनों श्रेणियों को यथोचित लाभ अर्जित होता है /साधुवाद।

- हेमन्त नाफड़े
सेनि उपसंचालक कोष एवं लेखा
सी 100पल्लवी नगर भोपाल

सम्पादक जीवन वैभव

जीवन वैभव पत्रिका का अक्टूबर 2020 दीपावली अंक बड़ा ज्ञानवर्धक जानकारी के साथ ही इसका अत्यंत श्रेष्ठ संपादन । बहु उपयोगी एवं संग्रह योग्य श्रेष्ठ सम्पादन कीबधाई ।

- आचार्य पं प्रल्हाद पण्ड्या शंकर नगर,
शिवाजी नगर भोपाल मप्र

आदरणीय श्री पांडे जी

जीवन वैभव पत्रिका की पीडीएफ फाइल पढ़ने को मिली बहुत ज्ञानवर्धक एवं उपयोगी पत्रिका प्रतीत हुई इस पत्रिका की मैं आजीवन सदस्यता भेज रही हूं कृपया नियमित रूप से प्रेषित करते रहने का कष्ट करें

- सुप्रिया बड़ोनिया ज्योतिष शास्त्री
अहमदाबाद गुजरात

व्हाट्सएप के माध्यम से प्रतिक्रिया प्रेषित करने में सर्वश्री सनंदन जी, श्री हेमंत नाफड़े जी, आचार्य प्रहलाद पंड्या जी, तथा अहमदाबाद से सुप्रिया बडोनिया जी आपका बहुत-बहुत आभार। जीवन वैभव पत्रिका की स्थापना के 34 वर्ष पूर्ण कर 35 वर्ष में प्रवेश कर चुकी है आप सभी के प्रतिक्रिया के फल स्वरुप पत्रिका पठनीय उपयोगी तथा संग्रहणीय बन सकी है ।इसमें केवल वही सामग्री दी जाती है, जो पूरे परिवार के लिए आत्म बल, मनोबल, नैतिक बल तथा स्वास्थ्य बल को सुदृढ़ करने वाली होती है इसी आधार पर ही ज्योतिष से संबंधित आलेख भी विद्वानों से प्राप्त किए जाते हैं ताकि अपने उद्देश्यों की पूर्ति में जीवन वैभव हर प्रकार से समाजऔर पूरे परिवार के लिए उपयोगी सिद्ध होसके आशा है भविष्य में भी सभी पाठक गण अपनी प्रतिक्रियाओं से नियमित रूप से अवगत कराते रहेंगे ताकि और अधिक सुरुचिपूर्ण पाठ्य सामग्री प्रदाय की जा सके आप सभी पाठकवर्ग को नव वर्ष 2021 की शुभ कामनाएं।

- डॉ हेमचंद्र पांडेय सम्पादक जीवन वैभव

जीवन वैभव की सदस्यता हेतु क्या करें?

जीवन वैभव पत्रिका आपकी अपनी पत्रिका है, इसे आप जैसे प्रबुद्ध पाठकों ने सराहा और इसकी प्रगति के लिए मार्गदर्शन दिया है। आपसे निवेदन है कि वार्षिक/त्रैवार्षिक/आजीवन सदस्यता की वृद्धि कर प्रचार-प्रसार संख्या बढ़ाने में सहयोग करें। सद्ज्ञान का प्रचार-प्रसार करने से समाज में धनात्मक ऊर्जा का संचार होगा जो कि एक पुण्य कार्य है। अतः पुण्यकार्य में सहयोगी बनें।

अपने संस्थान का विज्ञापन दें

आप अपने संस्थान का विज्ञापन यदि इस त्रैमासिक एवं संग्रहणीय जीवन वैभव में देंगे तो लगातार तीन माह ही नहीं जब तक यह पत्रिका पाठक के पास सुरक्षित रहेगी, आपके संस्थान का स्मरण होता रहेगा। अतः शीघ्रता करें अपनी विज्ञापन निम्नलिखित पते पर प्रेषित करें।

अपने घर बैठे जीवन वैभव पत्रिका प्राप्त करें

जीवन वैभव पत्रिका प्राप्त करने के लिये आपको जीवन वैभव पत्रिका की सदस्यता हेतु आवेदन पत्र पत्रिका में से निकालकर अपना नाम पता स्पष्ट रूप से उल्लेख कर वार्षिक/त्रैवार्षिक अथवा आजीवन सदस्यता का निर्धारित शुल्क जीवन वैभव नाम से इलाहाबाद बैंक, अरेरा कालोनी, शाखा भोपाल के जीवन वैभव खाता क्रमांक 50159870448 में जमा करते हुए बैंक की जमा पर्ची (स्लिप) सदस्यता आवेदन पत्र के साथ प्रेषित कर दें। यदि इलाहाबाद बैंक के अतिरिक्त अन्य बैंक से शुल्क जमा कराये जाने की स्थिति में एन.ई.एफ.टी. (नेशनल इलेक्ट्रॉनिक फण्ड ट्रांसफर) माध्यम से निम्नानुसार शुल्क जमा कराएं –

खाता क्रमांक	:	50159870448
खाते का नाम	:	जीवन वैभव
आय.एफ.एस.सी. कोड	:	ALLA 0210197

यदि आप रजिस्टर्ड डाक से पत्रिका प्राप्त करना चाहते हैं तो रजिस्टर्ड डाक का शुल्क पृथक से सदस्यता की राशि के साथ जोड़कर प्रेषित कर दें। अन्यथा साधारण डाक से पत्रिका प्रेषित की जायेगी।

जीवन वैभव के सदस्यों से आग्रह

जिन सदस्यों के सदस्यता शुल्क राशि समाप्त हो गई है उनसे अनुरोध है कि उपरोक्त दर्शाए अनुसार जीवन वैभव के खाते में राशि जमाकर सदस्यता नियमित कर लें।

संपादक
जीवन वैभव
15-ए,महाराणा प्रताप नगर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, भोपाल
संपर्क: 9425008662; **ईमेल:** hep2002@gmail.com

जीवन वैभव की सदस्यता हेतु आवेदन

नाम ....

डाक का पूरा पता ....

....

....

दूरभाष/मोबाईल ....

सदस्यता .... आजीवन/ त्रैवार्षिक/ वार्षिक

सदस्यता शुल्क का विवरण 1800/- 300/- 100/-

बैंक ड्राफ्ट क्रमांक .... दिनाँक ....

चैक क्रमांक .... दिनाँक ....

जीवन वैभव के नाम से इलाहाबाद बैंक अरेरा कॉलोनी शाखा भोपाल के खाता नं. 50159870448 में जमा की गई राशि की बैंक स्लिप की फोटो प्रति।

त्रैमासिक पत्रिका ''जीवन वैभव'' के बारे में आपकी राय:-

....

....

....

....

....

पाठक के हस्ताक्षर

पता:
जीवन वैभव
15-ए,महाराणा प्रताप नगर
प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, भोपाल
संपर्क: 9425008662
ईमेल: hep2002@gmail.com

नोटः उपरोक्त जानकारी डाक/कोरियर/ई-मेल द्वारा प्रेषित करें। ताकि जीवन वैभव की सदस्यता देते हुए आगामी अंक की प्रति प्रेषित की जा सके।

ज्योतिष प्रश्नोत्तरी कूपन

नाम : .....

पता : .....

जन्म तारीख : .....

जन्म समय : .....

जन्म स्थान : .....

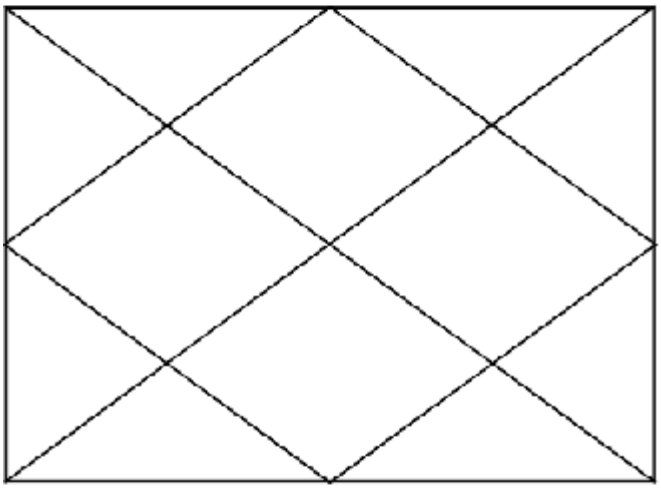

कोई एक प्रश्न .....

.....

.....

भवदीय

.....

नोटः- जीवन वैभव के विद्वान लेखकों और पाठकों के द्वारा ज्योतिष परामर्श पत्रिका के माध्यम से चाहा है हमारे द्वारा ज्योतिष परामर्श कूपन उपरोक्तानुसार दिया गया है इसकी पूर्ति करते हुए हमें प्राप्त होने पर ज्योतिष विद्वानों का एक मण्डल विचार-विमर्श उपरांत परामर्श उत्तर नाम प्रकाशित नहीं करते प्रदाय करेगा।

ज्योतिष प्रश्नोत्तरी
जीवन वैभव
15-ए, महाराणा प्रताप नगर
प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, भोपाल

परिवार के सभी सदस्यों के लिए उपयोगी
एवं मार्गदर्शक पुस्तक

सुप्रभात की अमृतवाणी

मूल्य : 50/- केवल

(शिक्षाप्रद-जीवनोपयोगी
सदुपदेशों पर आधारित पुस्तक)

लेखक - डॉ. पं. हेमचन्द पाण्डेय

निःशुल्क पुस्तक प्राप्त करने के लिए
जीवन वैभव के त्रैवार्षिक सदस्य बनें ...
पाँच पुस्तकें प्राप्त करने के लिए
डाक खर्च देना आवश्यक नहीं।

व्यवस्थापक :
जीवन वैभव
15 ए, जोन-।, प्रेस कॉम्पलेक्स,
महाराणा प्रताप नगर, भोपाल

संपर्क : 9425008662
ईमेल : hcp2002@gmail.com

जीवन वैभव ज्योतिष त्रैमासिक पत्रिका जो कि जीवन की समृद्धि के लिए गागर में सागर है–

प्रत्येक अंक में देश के सम्मानित एवं मूर्धन्य विद्वानों के शिक्षाप्रद आलेख समाविष्ट रहते है। इस पत्रिका की सदस्यता निम्नानुसार ले सकते है।

वार्षिक सदस्यता रू.100/–, त्रैवार्षिक रू. 300/–, आजीवन सदस्यता रू. 1800/–

विगत तीन वर्ष के एक साथ सजिल्द अंक 350 रू.।

उपरोक्तानुसार सदस्यता **''जीवन वैभव''** के नाम से अरेरा कॉलोनी की इलाहाबाद बैंक के
खाता क्र. 50159870448, आईएफएससी कोड ALLA0210197
के अनुसार जमा कर रसीद की प्रति कार्यालय को प्रेषित करें।

- जीवन वैभव पत्रिका में विविध विषय जो कि परिवार एवं समाज के लिये उपयोगी है, इन विषयों पर सामग्री प्रकाशित की जाती है, ज्योतिष, चरित्र–निर्माण, योग, होम्योपैथी, आहार चिकित्सा, धर्म, अध्यात्म आदि। जीवन वैभव में स्थाई स्तंभ प्रत्येक अंकों में प्रकाशित होते हैं जो कि संग्रहणीय हैं।
- **वंदना', अमृतवाणी , वैभवदर्शन , गीता माता , उचितआहार, चिकित्सा , धर्मिक शिक्षाप्रद जानकारी, ज्योतिष एवं स्वास्थ्य, व्रत पर्व, विविध मुहूर्त, त्रैमासिक भविष्यफल आदि जानकारी प्रत्येक अंक में उपब्ध रहती है।**
- महापुरूषों द्वारा दिए गए आर्शीर्वचन एवं सुखी जीवन के लिए अनमोल सुझाव पृथक से बाक्स के रूप में दिये जाते हैं जो पाठकों को लाभप्रद एवं रोचक लगते हैं।
- **जीवन वैभव का प्रत्येक अंक संग्रहणीय है, तथा जीवन वैभव के उपरोक्त पुराने उपलब्ध अंक कार्यालय से प्राप्त की जा सकती हैं।**

कार्यालय का पता **व्यवस्थापक जीवन वैभव**
15 ए. प्रेस काम्प्लेक्स, जोन–1 महाराणा प्रताप नगर, भोपाल म.प्र.
संपर्क : 9425008662, ईमेल : *hcp2002@gmail.com*